हेमकुंड यात्रा

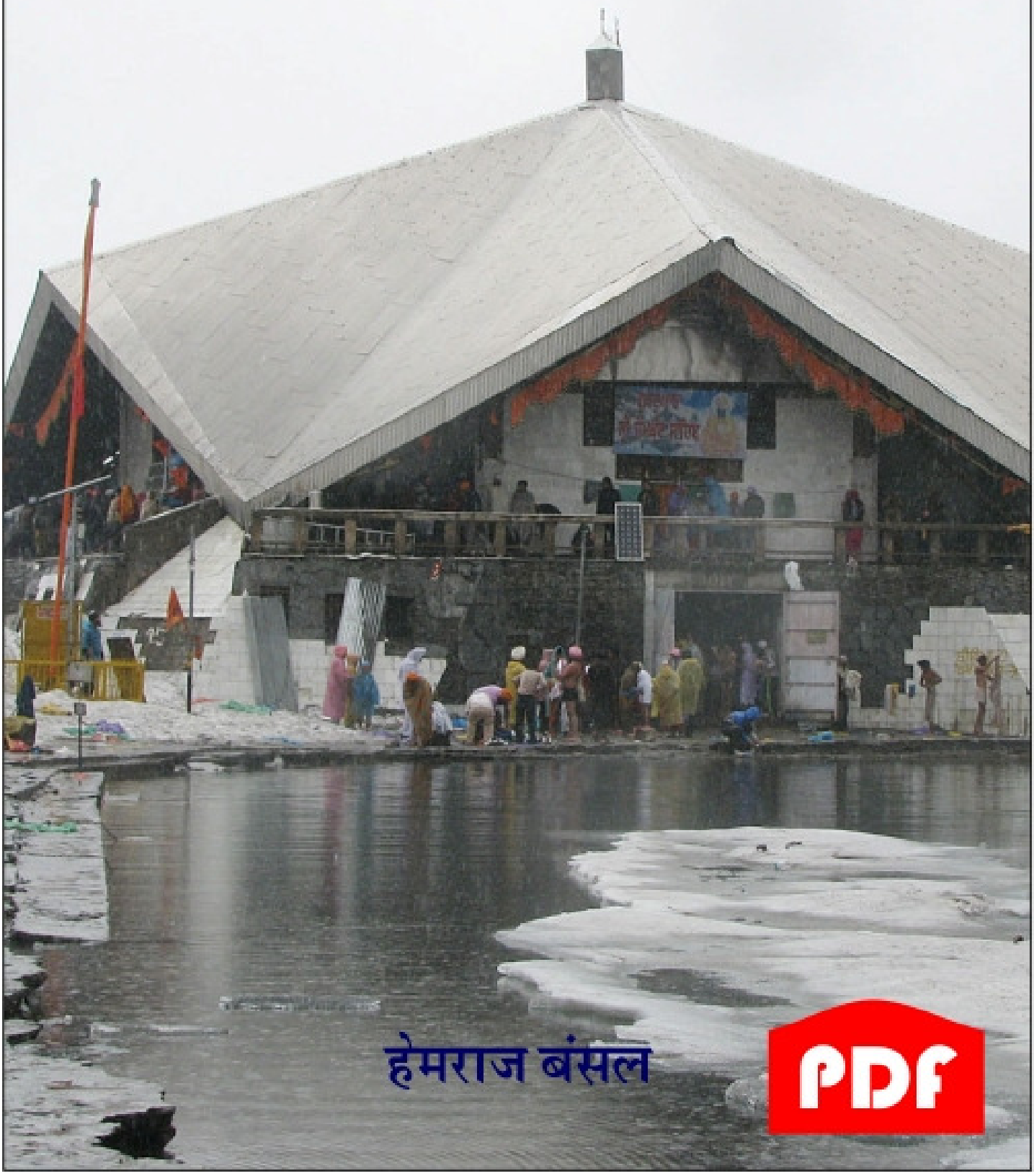

हेमराज बंसल

PDF

फूलों की घाटी! हिमालय की गोद में बसा आश्चर्यजनक प्राकृतिक स्वर्ग, जिसे खोजा एक घुमक्कड़ अंग्रेज ने और पूरी दुनिया में मशहूर किया 'द वैली ऑफ फ्लावर्स' के नाम से। उसी के पास पवित्र तीर्थ हेमकुंड साहिब। देवपर्वत हिमालय की गोद में रची बसी एक विहंगम रचना, जिसे देखने की लालसा हर यायावर में होगी। किसी पत्रिका में लेख पढ़ कर मैंने इसके बारे में जाना और तभी से बलवती होती रही, साथ मिला दुर्गम पैदल यात्राओं के शौकीन बजरंगलालजी पारीक का। उन्हीं की प्रेरणा और सानिध्य में मैंने दो वर्ष पूर्व अमरनाथजी की यात्रा की थी। उस यात्रा के दौरान ही फूलों की घाटी का कार्यक्रम बन गया था। हमें दो साथी और मिले। एक प्रौढ़ श्री प्रेमजी राठौर एवं दूसरे युवा श्री कमलेशजी गोयल। पारीक साहब से रोमांचक यात्रा के बारे में जानकर कमलेश महिनों से हमारे साथ यात्रा करने की आस लगाये बैठा था। प्रेमजी राठौर को पारीक साहब ने दो दिन पूर्व ही यात्रा हेतु तैयार किया। मुझे उम्मीद है हम अगले कुछ दिनों में उस स्वर्ग को देखकर अपनी आत्मा को तृप्त कर सकेंगे।

हमें 31 जुलाई 1996 बुधवार रात की देहरादून एक्सप्रेस गाड़ी के आरक्षित टिकट मिल गये। हमने पद्यात्रा के हमारे अनुभवों के हिसाब से सामानों की लंबी फेहरिस्त बनाई। इस हेतु 30 जुलाई की रात को मेरे घर पर तीनों साथी आये और हमने यात्रा कार्यक्रम तय किया। हमारी गाड़ी कोटा से रात आठ बजे है फिर भी रेल की अनिश्चितता तथा सड़क मार्ग बंद होने के कारण हमने 31 जुलाई को सुबह की रेलगाड़ी से ही कोटा जाना तय किया। हमने हमारी यात्रा को बहुत विस्तार दे दिया है। उत्तराखंड चारों धाम के साथ वसुधारा, गौमुख, मसूरी आदि को भी हमने यात्रा कार्यक्रम में शामिल कर लिया।

बारां से रेल से प्रातः साढ़े नौ बजे रवाना होने के बाद तय समय से दो घंटा विलम्ब से करीब दो बजे हम कोटा पहुंच पाये। सामान क्लाकरुम में डाले गये। कमलेश उसके चाचाजी के घर, प्रेमजी उनकी बेटी के घर तथा पारीक साहब व मैं मेरी बहिन शकुंतला के घर चले गये। हमने वहां खाना खाया और बाद में कुंवर साहब के साथ दादाबाड़ी उनका हाल ही खरीदा गया मकान देखने गये। दिन वहीं गुजारने के बाद शाम को हमारे ब्याई जी यतीशजी ने हमारे को स्कूटर से प्लेटफार्म पर छोड़ा। बहिन ने हमारे साथ रात का खाना भी बांध दिया गया। प्रेमजी हमें प्रतिक्षारत मिले और कमलेश को विदा करने उसके चाचाजी चंद्रप्रकाशजी प्लेटफार्म आये। पारीक साहब को चंद्रप्रकाशजी ने घर न आने के लिये उपालंभ दिया तथा लौटते समय मिलते हुये जाने का वादा लिया।

गाड़ी सही समय पर छूटी। सारी बातें ठीक होने के बावजूद सिरदर्द के कारण मुझे बहुत कम नींद आई। हमारा आरक्षण दिल्ली तक का ही था अतः हमने बाद की यात्रा अनारक्षित डिब्बे में की। हमारे सामान हमने भंवरगढ के गायत्री परिवार से जुड़े सहयात्री के पास आरक्षित डिब्बे में ही पड़े रहने दिये। मुजफ्फरनगर कुंवर साहब प्रवीणजी–बेटी पूनम के घर पंचवटी पहुंचने तक हमें तारीख 1.8.1996 गुरुवार दोपहर के साढ़े ग्यारह बज गये। घर पर हमें हालात सही नहीं मिले। यहां दो दिन से बिजली बंद है तथा पानी भी नहीं है। घर में हमें माताजी ही मिली। बेटी–दामाद बाजार गये हैं। हमें प्रवीणजी के फूफाजी के घर जाकर स्नान करने का निर्देश मिला। फूफाजी की बाजार में मकान के नीचे ही साइकिल की दुकान है। रास्ते में पारीक साहब ने आग्रह कर हमें यहां की प्रसिद्ध चाट खिलाई। थोड़ी देर बाद ही बेटी–दामाद आकर हमारे से मिले। दो बजे हमने उनके घर शानदार खाना लिया। हमें अभी ही देहरादून के लिये निकलना है। बेटी–दामाद हमें सवा तीन बजे बस में बिठाकर विदा करके गये।

उत्तर प्रदेश रोडवेज की डीलक्स बस में हमें सीटें नही मिली थी पर रूड़की आते–आते बस खाली जैसी हो गई। इस पूरे रास्ते हमें बरसात मिली। बस वाले ने रास्ते में एक स्वीमिंगपूल युक्त आधुनिक रेस्टोरेंट में यात्रियों को चाय नाश्ता करवाया। हम रात सात बजे देहरादून पहुंचे। बारिश जारी थी और हमें पता नहीं था कहां उतरना है? हमारा लक्ष्य मसूरी घूमना है। बस कंडक्टर ने हमें मसूरी बस स्टैण्ड जा कर मसूरी की बस पकड़ने की सलाह दी। हम हड़बड़ी में एक चौराहे पर उतर गये। सामान संभाले तो पता लगा पानी की केटली तो बस में ही रह गई है। कमलेश व मैं ऑटो कर बस स्टैण्ड पहुंचे और प्रयास कर कंडक्टर के चंगुल से हमारी केटली निकाल कर लाये। सामानों सहित मसूरी बस स्टैण्ड पहुंचे। पता लगा साढ़े सात बजे अंतिम बस जाती है जो आज बरसात के कारण रद्ध कर दी गई है। ऐसे अवसर पर हमें हमारे अनुभवी साथी पारीक साहब से पर्याप्त मार्गदर्शन न मिलना अखरा। हमने आज रात देहरादून में ही रुकने का निर्णय किया तथा कमलेश व मैं धर्मशाला में जगह तलाश करने गये।

केटली की तलाश में बस अड्डे की ओर जाते समय हमें बाजार में गांधी रोड पर जैन धर्मशाला व अग्रवाल धर्मशाला दिखाई दी थी। अग्रवाल धर्मशाला में जगह नहीं थी पर हमें जैन धर्मशाला में जाते ही बहुत बड़ा कमरा नम्बर 15 मिल गया। एक बार फिर याद आया भगवान जो करता है अच्छा ही करता है।

थोड़ी देर आराम कर, तरोताजा हो, हम दो दलों में बाजार जाकर भोजन कर आये। बुजुर्ग नौ बजे लौटे थे और हम नौ बजे गये तथा दस बजे लौटे। थोड़ी देर में सबको नींद आ गई और मैं प्रेमजी के खर्राटों से परेशान होता रहा। गहरी नींद बहुत देर बाद आई।

दिनांक 2 अगस्त, 1996 शुक्रवार

सभी साथी पांच बजे करीब उठे। कमलेश और मैंने इसी महात्मा गांधी मार्ग पर द्रोण होटल में स्थित गढ़वाल विकास मंडल के कार्यालय में जाकर पैकेज टूर के बारे में जानकारी ली। इसके बाद दर्शनिया गेट स्थित मसूरी बस स्टैण्ड से मसूरी के रास्ते के बारे जानकारी ली। मसूरी का रास्ता बंद है। हम आज देहरादून में ही घूमेंगे। यहां से सुबह साढ़े आठ बजे से पर्यटक बसें जाती हैं। बरसात के कारण रोडवेज ने अभी यमुनौत्री की बसें भी बंद कर रखी हैं। रोडवेज की किराया तालिका से ज्ञात हुआ कि यहां से यमुनौत्री आधार शिविर हनुमान चट्टी वाया यमुना ब्रिज मात्र 171 किमी है और रोडवेज का किराया 75 रु. है।

हम धर्मशाला जा तैयार हो सभी साथी ठीक समय पर बस स्टैण्ड पहुंच गये। पर यह क्या? सवा नौ बजे तक दफ्तर ही नहीं खुला। पता लगा पर्यटक ही नहीं आ रहे, बसें चला कर क्या करें? बाहर टैक्सी और ऑटो की लाइन लगी है। सब फालतू बैठे हैं। सौ रुपये में एक ऑटो तय किया। ऑटोवाला हमें सर्वप्रथम टपकेश्वर महादेवजी मंदिर ले गया। यहां गुफा में पहाड़ों से पानी टपकता रहता है। उसी में भगवान शिव विराजमान हैं। पास ही जलप्रपात है। यहां दर्शन कर वन अनुसंधान केन्द्र जिसे FRI अर्थात् Forest reaserch centre के नाम से जानते हैं; पर पहुंचे। यह लाल ईंटो और सफेद चूने या सीमेंट से परम्परागत कारीगरी से बना बहुत विशाल एवं भव्य भवन है। यहां वन, पर्यावरण, प्रकृति, मृदा संरक्षण, ग्रामीण विकास आदि से संबंधित अनुसंधान केन्द्र, कार्यशाला तथा प्रदर्शनियां है। इसमें वनों व वृक्षों का ज्ञान प्राप्त होता है। वनस्पति विज्ञान के विद्यार्थियों के लिये तो ज्ञान का भंडार है यहां। यह स्थान हम सभी को बहुत पसंद आया। यहां हमें एक घंटा लगा तो ऑटो वाला जल्दी मचाने लगा। कमलेश ने उसे बहुत जोर से डांटा भी। हमारा अगला पड़ाव माल्सा डियर पार्क अर्थात् हिरण उद्यान है। ऑटो में कुछ खराबी आई या ऑटो वाले ने मक्कारी कीः हमें चढ़ाई पर कोई आध किमी पैदल चल कर पार्क पहुंचना पड़ा। पार्क में हमारे अलावा मात्र चार लोगों की एक टोली ही थी। यहां बतखें, खरगोश, 6–7 बारहसिंघे तथा दो हिरण देखने को मिले। गर्मी और भूख ने भी हमें सताया। हमें यहां आना अखरा। ऑटो में बैठ हम घंटाघर के पास उतरे व ऑटोवाले को विदा किया। एक आलीशान मानसरोवर नाम के रेस्टोरेंट में घुस गये। वहां के मीनू में मांसाहारी भोजन देख खिसक लिये। पूछते हुये पास ही 15 ए राजपुर रोड पर स्थित उसी स्तर के कुमार वेजिटेरियन नामक भोजनालय में चले गये। इस वातानूकूलित भोजनालय में सामान्य से दुगुनी दरें है। यहां शुद्ध देशी घी का ही प्रयोग खाने में होता है। खाना खाने में मजा आ गया। एक सौ अड़सठ रु. का बिल आठ रु. टैक्स और पांच रु. टिप हमने खुशी से खर्च किये।

देहरादून का प्रसिद्ध पिकनिक स्पॉट सहस्त्रधारा देखना अब हमारा लक्ष्य है। पास ही बस स्टैण्ड से हम भीड़ भरी बस में खड़े–खड़े सफर करते वहां तक पहुंचे। देवपर्वत हिमालय की ऊंची पहाड़ियों के बीच से निकली उछलती–कूदती जलधारा के दोनों और बसा रमणीक स्थान देख हमारी सफर की थकान गायब हो गई। एक छोटा पुल पार कर जलधारा के दूसरे किनारे पहुंच, वहां बने घाट पर प्रेमजी व पारीक साहब ने स्नान किया। हल्की बारिश से हुआ गीला, कहीं पसीना सुखाने के लिये बैठने की जगह नहीं, मेरा मन नहाने का नहीं हुआ। बाद में एक मानवनिर्मित छतरी के अंदर हम चारों ने कोई घंटाभर, आराम करते, जलधारा व प्राकृतिक दृश्यों को देखते हुये गुजारा। बाद में कमलेश व मैंने भी स्नान किया। यहां स्नान का ही तो महात्म्य है। स्नान के बाद दर्शन व भ्रमण हुआ। वापसी के लिये बस स्टैण्ड की ओर बढ़ रहे थे तो एक टैक्सी वाले ने हमें टोका। वह मारुतिवैन में 15 रु. सवारी में हमें हमारी धर्मशाला छोड़ने को तैयार था। हमने सुविधा तथा समय की बचत को देखते हुये उसे 75 रु. दिये और फटाफट

धर्मशाला आ गये। हमें टैक्सी वाला अच्छा आदमी लगा और हमने कुछ सौदेबाजी कर उसे कल मसूरी दिखा लाने के लिये साढ़े पांच सौ रुपये तथा खाना खुराक में तय कर लिया।

पौने छः बजे हम धर्मशाला पहुंच गये। हमारे पास अब कोई काम नहीं है। आराम करने में समय गुजारा। मैं सिरदर्द से परेशान हूं। मुझे तीन रातों से अच्छी नींद नहीं आई है। हम आठ बजे भोजन करने बाजार गये। मैंने खूब खाया और ऊपर से दही की लस्सी भी पी। किसी तरह नींद तो आये। अब एकदम सोना भी अच्छा नहीं है। अजीर्ण हो जायेगा। हम दस बजे तक ताश खेलते रहे। बाद में सब साथी सो गये और मैं बारह बजे तक तो नहीं सो पाया था। बाद में नींद आई और सुबह मैं तरोताजा महसूस कर रहा हूं। इधर पारीक सा. को हाथपैरों में दर्द है, उन्होंने गोली ली है।

दिनांक 3 अगस्त 1996 शनिवार

टैक्सी वाले को प्रातः साढ़े सात बजे बुलवाया था। हम छः बजे उठे और सवा सात बजे तैयार हो टैक्सी का इंतजार करने लगे। टैक्सी वाला समय पर नहीं आया तो हमने वैकल्पिक साधन तलाश करने शुरु कर दिये थे। आखिर आठ बजे टैक्सी पहुंची। हम तुरंत ही रवाना हो गये। यहां देहरादून में हमें गर्मी लग रही थी पर हम मसूरी के रास्ते ज्यों ज्यों पहाड़ पर चढते गये सर्दी बढ़ती गई। हम गर्म कपड़े तो बिल्कुल ही नहीं लाये। न बिछाने की दरी या प्लास्टिक शीट न रैन कोट। मात्र एक छाता हमारे पास था। सर्दी और बारिश की परिकल्पना को हमने हंसी में उड़ा दिया था। रास्ते में एक थड़ी पर नाश्ता हुआ। मसूरी पहुंच हमारे कार चालक चंदू ने वहां की यूनीयन की पर्ची कटवाई और वहीं कैम्पटी फाल का रास्ता पूछा। यहीं आकर हमें ज्ञात हुआ कि यह चालक भी पहली बार ही मसूरी आ रहा है। अब यह हमारा मार्गदर्शन भी क्या करेगा? हमें निराशा सी हुई।

मसूरी हिमालय की चोटी पर बसा रमणीक पर्यटक स्थल है। इसे पहाड़ों की रानी कहा जाता है। एक अंग्रेज ने इस स्थान को खोजा एवं विकसित किया। मसूरी देहरादून से 33 किमी तथा कैम्पटी फाल मसूरी से 16 किमी है। अब यह बहुत बड़ा शहर बन गया है। होटल, ढाबे, हस्तशिल्प व ऊनी वस्त्रों के बाजारों से सजा। हम मसूरी शहर के बीच से निकल कर पहाड़ी दृश्य देखते हुये कैम्टीफाल की ओर बढ़े। बहुत ऊपर से गिरता पहाड़ी झरना दूर से ही दिखाई देने लगा। हमें यहां स्नान करना है। टैक्सी छोड़ने के बाद बहुत नीचे उतर पैदल जाना पड़ा। यहां आठ फुट का सीढियोंवाला पक्का रास्ता बना हुआ है। रास्ते के दोनों ओर बाजार लगा है। हम अपना कैमरा, खाने पीने के सामान, पानी की केटली तथा स्नान हेतु कपड़े साथ लाये हैं। हमारा कार चालक भी हमारे साथ ही हो लिया। थोड़ी देर पहले हुई बरसात से यहां कीच मिश्रित गीला हो रहा है। हमें साधनों का अभाव खला। हमने आज का खरीदा ताजा अखबार बिछाकर अपने सामान रखे और झरने के नीचे बने कुंड में जमकर स्नान किया। यहां पानी बहुत ऊंचाई से फैल कर गिरता है, इससे हमेशा तीखी सर्द हवा चलती रहती है। पानी भी बहुत ठंडा है। झरने के नीचे जाने पर पानी की बूदें शरीर पर गोली की तरह लगती है। हम चारों तैरना जानते हैं अतः कूद–कूद कर नहाये। गिरते हुये झरने के नीचे जाने का मेरा प्रयास सफल नहीं हुआ क्योंकि वहां बहुत गहरा है, तैर कर जाना पड़ता है और पानी का प्रवाह हमें वापस धकेल देता है। यहां हमने अपने कैमरे से फोटो लिये और पांच फोटो कैम्पटी फोटो सर्विस द्वारा गोयल कलर लैब, रेल्वे आउट एजेन्सी, द मॉल, मसूरी से खिंचवाकर उसे पूरा भुगतान दे दिया ताकि वह डाक से बारां फोटो भिजवा दे।

इस फाल से नीचे एक अच्छा होटल है जिसमें स्वीमिंग पूल बना हुआ है। हमारा मन स्वीमिंग पूल का मजा लेने को ललचाया। चंदू ड्राइवर व कमलेश वहां की व्यवस्थायें देखने गये। वहां नहाने के सौ रुपये मांगे गये। पानी तो इसी झरने का है। साफ सफाई भी नहीं दिखाई दे रही, कोई वहां नहा भी नहीं रहा। क्यों व्यर्थ ही खर्च करें? पूर्व में हमारी इच्छा आसपास घूमने की थी पर नहाने में ही हम थक गये और सर्दी से पस्त से हो गये। बहुत चढ़ाई चढ़कर टैक्सी तक पहुंचे तो सब बुरी तरह थक पसीना–पसीना हो गये। वापसी रास्ते पर मुझे गाड़ी में नींद ही आ गई। मसूरी पहुंच टैक्सी स्टैण्ड पर टैक्सी पैक कर चालक सहित हम पांचों घूमने के लिये माल रोड पर आ गये। हमने गीले कपड़े गाड़ी में ही सुखा दिये तथा हमारे पास सामानों के नाम पर मात्र एक छाता तथा पानी की केटली थी। हमें भूख लगी थी, हमने पहले भोजन करना उचित समझा। गांधी चौक पर महंगे शाकाहारी होटल 'उपकार' में जाकर बैठ गये और आर्डर दे दिया। यहां न कोई और ग्राहक है न कोई स्टॉफ। एक बैरा दस मिनट

बाद प्रकट हुआ तो पारीक साहब ने उससे कहा कि पानी तो दे जा। बैरे ने बदतमीजी की और पारीक साहब गुस्सा हो गये।

'चलो यहां से। यहां बेइज्जती कराने आये हैं क्या?'

पारीक साहब के पीछे–पीछे हम सब उठकर बाहर आ गये। काउंटर पर बैठा होटल मालिक एक शब्द भी नहीं बोला। हम पास ही गुलाब ढाबे में चले गये। वहां खाना बहुत महंगा और बहुत घटिया निकला। किसी तरह हलक से उतार क्षुधा शांत की। हमारे पास कोई मार्गदर्शक नहीं है। यहां गाइड तथा घोड़े वाले महंगे लगे। हम पैदल ही माल रोड पर बढ़ गये। माल रोड से मसूरी की पहाड़ियों एवं घाटी के सौन्दर्य को निहारते, भुट्टे खाते हुये, रुई के फोहे माफिक बादलों के बीच से गुजरते, गीत गुनगुनाते तथा हंसी मजाक करते हुये हम रोपवे स्टेशन तक पहुंच गये। यहां से यात्री रोपवे में बैठ कर गनहिल तक पहुंचता है। आज बद्किस्मती से मोटर जलने के कारण यह रोपवे बंद है। हमने पैदल ही गन हिल जाने का निश्चय किया। रास्ता न जानने के कारण हम भटकते रहे और थक गये। हार कर हमने एक गाइड तीस रुपये में गनहिल, कैमल बैक रोड तथा कम्पनी गार्डन दिखाने के लिये कर लिया।

गाइड ने पहले कैमल बैक रोड बताया। यहां पहाड़ी सौन्दर्य है तथा बिल्कुल सुनसान सड़क है जिसका आकार ऊंट की कूबड़ की तरह बनता है। यहां नवविवाहित जोड़े घूमने आते हैं। यहां दूरबीन वाले खड़े हैं जो पांच–पांच रुपये में पहाड़ी दृश्य दिखाते हैं। हमने उनकी सेवाओं का उपयोग नहीं किया। हमें यहां घनी धुंध ने घेर लिया है। दस हाथ दूर दिखाई देना भी बंद हो गया। स्थानीय लोगों ने कहा, 'भागो तेज बारिश आयेगी।' हमें गनहिल पहुंचने की उतावली थी। हम गाइड के साथ तेजी से चड़ाई वाले रास्ते पर बढ़ लिये। रास्ते में जोरदार बरसात आई ही। सड़क किनारे एक झोंपड़ी की आड़ में हमने शरण लीं। पानी बरसा और खूब जोर से बरसा। हम सब भीग गये। चंदू चालक उस झोंपड़ी में बैठी दो जवान लड़कियों से इजाजत ले अंदर जा बैठा। कुछ देर बाद वहां सोये लड़कियों के पिताजी की नींद टूटी। उसने उठते ही हमारे को लताड़ना शुरु कर दिया।

'यह बाल बच्चों वाला घर है आपको शर्म नहीं आती इस तरह बिना पूछे घर में घुसते। चलो तुरंत बाहर निकलो यहां से।'

गृह स्वामी का कथन अनुचित नहीं था। वहां दो युवा खूबसूरत बेटियां रहती है। हमने उससे माफी मांगी तथा कुछ देर और इसी हालात में टिके रहने देने का अनुरोध किया। हमारे चालक को हमने बाहर निकाला और फिर कुछ देर और उसी छपरे के सहारे भीगने से बचने का प्रयास करते टिके रहे। पानी थोड़ा कम हुआ तो हमने पास ही दूसरी जगह पर शरण ली। हमारा ड्राइवर उस झोपड़ी मालिक पर बहुत नाराज हो रहा था। उसने उसे बाद में देख लेने तक की धमकी। हमने उसे शांत करने का प्रयास किया।

हमारा एक घंटा बरसात ने खराब कर दिया था। हम सभी पूरे भीग कर ठंड से कांप रहे थे। इधर ड्राइवर को भय था कि दो दिन बाद खुला देहरादून मसूरी रास्ता फिर बंद हो गया तो टैक्सी यहीं फंस जायेगी। हमने गनहिल जाना स्थगित किया तथा पैदल टैक्सी स्टैण्ड आ वहां से टैक्सी में बैठ कम्पनी गार्डन जाने का निश्चय किया। बाजार में रास्ते में मुझे बहुत जोर से प्यास लगी तो मैंने पास ही चाय के होटल पर जाकर पानी पी लिया। उस डाकुओं के सरदार से दिखने वाले दुकानदार ने तुरंत ही कहा,

'चाय दूं?'

मुझे मेरे साथियों को रुकवा कर वहां चाय पिलानी पड़ी। सर्दी बरसात से परेशान वहां छाया में दुकान पर बैठ मैंने भी चाय ली। बिल्कुल बेस्वाद चाय। पारीक साहब ने तो चख कर छोड़ दी। दुकानदार का जवाब भी लठ्ठ छाप। अठारह रुपये देना बहुत अखरा। रिमझिम बारिश में भीगते हुये टैक्सी तक, फिर वहां से टैक्सी द्वारा बहुत दूर स्थित कम्पनी गार्डन पहुंचे। बरसते पानी और रात के अंधेरे में क्या देखना और क्या फोटोग्राफी? हमें आना बहुत अखरा पर क्या करें? टैक्सी के पैसे लग गये और गाइड को भी देने पड़े। यहां गाड़ी खड़ी होते ही मजदूर संघ वालों ने 15 रुपये की रसीद काट जले पर नमक और छिड़क दिया। निकले थे तीर्थ का नाम ले, मनाने चले मौज तो भगवान भी क्यों बख्शेगा?

मसूरी बस स्टैण्ड पर गाइड को छोड़ वापसी का रास्ता पकड़ा। टैक्सी चालक ने सियागंज गांव में चाय पिलाई। आपातकाल खत्म हो गया था, मैंने चाय नहीं ली। इसके बाद हम रास्ते की मसूरी झील

पर रुके। बहुत अच्छी जगह। कार बंद करने के बाद चंदू चालक को ध्यान आया कि गाड़ी की चाबी तो गाड़ी में ही रह गई है। वह गाड़ी खोलने की जुगत भिड़ाता रहा, हम झील पर घूमने आ गये। झील तक सीढियों से उतरे। मानव निर्मित एक छोटा तालाब। इसमें किराये की पैडलबोट पड़ी है जो सब पानी से गीली हो रही है। बारिश के कारण झील में मटमैला पानी है जिस पर कचरा भी तैर रहा है। यहां पर्यटकों के लिये पैडलबोट चलाना ही मुख्य आकर्षण है। उनका किराया भी ज्यादा रखा हुआ है। पंद्रह मिनट के दो आदमियों के लिये पच्चीस रुपये। बारिश आ चुकी थी हमने बोट नहीं चलाई। हमारे कैमरे से फोटो खींचे और आ गये। चालक ने पीछे के दरवाजे का ताला तोड़ कर गाड़ी को खोल लिया था। आगे हम शिवपुरी नामक आश्रम पर रुके। किन्हीं महात्माजी द्वारा बनाया शिवमंदिर, विद्यालय तथा पूजा के सामान, मूर्तियां, धार्मिक पुस्तकें एवं कीमती रत्नों की दुकानें यहां चलती है। प्रसाद के रूप में दो पूरी एवं छोले तथा नुक्ती के दाने ग्रहण किये। यहां मंदिर में कहीं भी दान पेटी नहीं है तथा कई जगह चढावा या भेंट न चढ़ाने के लिये हिदायत लिखी हुई है। आश्चर्यजनक लगा ही। सारे ही मंदिर आश्रम भेंट मांगते हैं और यहां मनाही है। यहां लगी दुकानों में सभी माल सही तथा शुद्ध होने की डेढ लाख रुपये की गारंटी दी गई है। हमारे युवा साथी कमलेश ने भी यहां रत्न, रुद्राक्ष, चंदन, पुस्तकें मालाओं आदि को खरीदने में रुचि दिखाई। हमें भी लगा कि ये सामान खरीदने के लिये यह उपयुक्त जगह है पर अभी तो हमारी यात्रा की शुरुआत ही है। सामानों को कहां साथ लिये फिरेंगे? कमलेश के बार–बार पूछताछ करने, गारंटी कार्ड मांगने व सामान्य फुटपाथी दुकानदारों से की जाने वाली झिकझिक से वहां विक्रेता के रूप में बैठे स्वामीजी नाराज हो गये। कमलेश ने पुखराज देखा फिर पूछ लिया, 'यह असली तो है न?' स्वामी जी ने नाराज होते हुये तल्खी से कहा, 'पहले अपने आप को तो देख ले'। बात बढ़ने से पहले मैने कमलेश को हाथ पकड़ खींच लिया और हम टैक्सी में आ बैठे। बाद में कमलेश को हम तीनों से कम बोलने के उपदेश सुनने पड़े।

सवा छः बजे सायं धर्मशाला पहुंच हमने टैक्सी को विदा किया। मुझे साबुन खरीदने के लिये बाजार में बहुत दूर तक जाना पड़ा। मैं फल भी लेता आया। हमने फल खाये तथा करीब सबने कपड़े भी धोये। रात आठ बजे भोजन करने गये। दिन भर कुछ न कुछ खाते रहने के कारण नाममात्र का भोजन हुआ। उसके बाद कमलेश ने फोन बूथ पर जाकर बारां बात की। बारां से बुरी खबर मिली। कमलेशजी के भाई साहब पुरुषोत्तमजी की बेटी गंभीर हालत में कोटा अस्पताल में भर्ती है। परिवार में अस्पताल का काम कमलेश ही देखता है। उसकी वहां सख्त जरूरत है। परिवार वालों ने निर्णय करने का काम कमलेश पर ही छोड़ दिया है। कमलेश ने तुरंत ही बारां लौटने का निश्चय कर लिया।

'भाई साहब भतीजी तो अभी मेरे जाते ही ठीक हो जायेगी पर मुझे भगवान यात्रा पर बुलाना ही नहीं चाहता।'

कमलेश ने आर्त स्वर में वेदना प्रकट की।

हमने उसे भारी मन से विदा किया। आगे यात्रा में काम आने वाले उसके कई सामान हमने रख लिये। मैं देहरादून के बस अड्डे पर उसके साथ गया और उसे दिल्ली जाने वाली बस में बिठा कर आया। वापस धर्मशाला लौट मैने साथियों से आगामी यात्रा कार्यक्रमों पर चर्चा की तथा अभी तक का हिसाब किया। मुझे आज भी बहुत देर से नींद आई।

तारीख 4 अगस्त 1996 रविवार

हमें आज यमुनौत्री यात्रा के पड़ाव हनुमान चट्टी जाना है। सामान बांध धर्मशाला का हिसाब किया और हम बाहर आ गये। धर्मशाला के लगभग बाहर से ही हमें एक प्राइवेट बस मिल गई जो ठीक सात बजे रवाना हो गई। तीन टिकट का किराया मात्र 198 रु. लगा। सहस्त्रधारा होती हुई बस विकासनगर पहुंची। विकासनगर में बस कोई एक घंटा रुकी। यह अच्छा कस्बा लगता है। यहां से कई जगह के लिये बसें उपलब्ध हैं। हमने यहां से फोन कर बारां बात की। हम बस रुकने के समयावधि की जानकारी न होने के कारण यहां नाश्ता नही कर पाये। यहां से बस साढ़े नौ बजे छूटी। आगे बहुत खराब रास्ता आया। शायद इस टूटे मार्ग के कारण ही रोडवेज ने बसें बंद कर रखी हैं। थोड़ा आगे एक रोड, इस रोड में आकर मिला, जहां 'कैम्पटीफाल 13 किमी' का बोर्ड लगा हुआ था। विकासनगर से 25 किमी आगे हर्षलपुर से बस पहाड़ी रास्ते पर आ गई। यह मार्ग बहुत खराब है। दायीं ओर यमुना नदी

तथा बाईं ओर ऊंचा पहाड़ है। आगे नैनबाग (जिला टिहरी) बड़ा गांव लगा। यहां से 3 किमी आगे चिलामू नामक गांव है। शूटर जसपाल राणा इसी गांव के हैं। यहां एक बड़ा बोर्ड यह सूचना दर्शाते हुये लगाया गया है। आगे मरोड नामक गांव होते हुये बस डामटा (जिला उत्तरकाशी) दोपहर डेढ़ बजे पहुंची। यहां सभी को भोजन करने के लिये कह दिया गया। हमने यमुना लॉज नामक ढाबे में अच्छा और सस्ता खाना खाया। लाल गेहूं की रोटियां दिखने में अच्छी नहीं थी पर खाने का स्वाद घर जैसा और मात्र 15 रु. थाली में। खाने से पूर्व पारीक साहब व प्रेमजी में वाकयुद्ध हुआ। हमारा बहुत सारा समय लड़ाई में खर्च हुआ और मैं तो भागता सा बस में बैठा। नौगांव होते हुये बस सवा तीन बजे बड़कोट पहुंची। यहां से बस रवाना होने का समय साढे चार बजे का बताया गया। बस का यहां पिंचर भी बनवाया गया। हम सामानों की तरफ से निश्चिंत हो बाजार में चले गये। लिम्का पी तथा अखबार पढ़ा। साढ़े चार बजे बस रवाना हुई। हर गांव ढाणी में सवारियां उतर चढ़ रही थी। कुछ देर बाद प्रेमजी को अहसास हुआ कि उनकी सीट के पास रखा पारीक साहब का बैग जगह पर नहीं है। सब जगह ढूंढा पर बैग तो चोरी ही हो चुका था। यह हमारी यात्रा के दौरान हमें दूसरा बड़ा झटका था। स्थानीय सहयात्रियों को भी बहुत क्षोभ हुआ। यहां यात्रा मार्ग में ऐसी घटनायें नहीं होती है। हमारा विश्वास टूट गया है।

छः बजे सायं हम सयाना चट्टी पहुंचे। बैग गायब होने से हमारे सामने कई समस्यायें खड़ी हो गई है। पारीक साहब के सूटकेस की चाबी बैग में ही थी। सयाना चट्टी और बाद में हनुमान चट्टी पहुंचकर हमने सूटकेस खोलने के कई प्रयास किये, बहुत समय खराब किया पर सफल नहीं हो पाये। पौने सात बजे हनुमान चट्टी पहुंच हमने पंवार लॉज नामक साधारण से होटल में दो कमरे ले लिये।

देहरादून से प्रातः सात बजे शुरु हुआ 191 किमी का हनुमान चट्टी तक का सफर बारह घंटे से भी ज्यादा समय में खत्म हुआ। पूरा रास्ता प्राकृतिक दृश्यों ऊंची पहाड़ियों से गिरते झरनों से समृद्ध है फिर भी हमारे मन का उल्लास गायब हो चुका है। न हंसी मजाक, न भजन कीर्तन। बस एक अजीब सा तनाव हमारे बीच में बन गया था। न जाने क्यों पारीक साहब प्रेमजी पर व्यंग्य करते रहते थे? प्रेमजी को उनकी न जाने कौन सी बात ज्यादा ही अखर गई? शायद इसी से नाराज हो वो बस में हमारे से दूर बैठे। रास्ते में उन्होंने हमारे द्वारा खाने के लिये दी गई ब्रेड स्थानीय बच्चों को बांट दी। डामटा में तो पारीक साहब के व्यंग्य बाण न सह सकने पर प्रेमजी राठौर उबल ही पड़े थे। उन्होंने पारीक साहब पर रास्ते भर का मन में भरा गुस्सा उतारा। यह आरोप भी लगाया कि खराब ब्रेड खाने के लिये उन्हें दी गई। मैंने बीच–बचाव किया तथा यह भी कहा कि हमने उसमें से भरपेट ब्रेड खाने के बाद ही आप को दी थी। ब्रेड खराब नहीं हुई थी। बहुत देर में उनका गुस्सा शांत हो पाया। इसीलिये हम डामटा में भोजन समय पर नहीं कर सके थे। अब बैग गुमने पर प्रेमजी ने प्रतिक्रिया जाहिर की,

'दांत्या खराब होते हैं'।

परीक साहब की मजाक के जवाब में प्रेमजी भाई साहब ने भी एक तगड़ी मजाक की। जैसे सौ सुनार की एक लुहार की। प्रेमजी ने यात्रा खर्च हेतु पारीक साहब से तीन हजार रुपये उधार लिये थे। पारीक साहब से रास्ते में प्रेमजी ने कह दिया कि वे रुपये तो घर रख आया हूं, बच्चे बच्चियों के खर्च के लिये। पारक साहब को इस जवाब ने पूरी यात्रा में तनाव में रखा। मेरे पास बात पहुंची तो मैंने प्रेमजी राठौर से एकांत में पूछा। उन्होंने मुझे अंटी में बंधे रुपये बताये और कहा, 'मैं तो उसका कलेजा जला रहा हूं।' यह हिदायत भी दी कि मैं भी उन्हें कुछ नहीं बताऊं।

हमने तनाव में ज्यादा देखाभाली नहीं की और हम इस पंवार लॉज में आकर फंस गये। बाथरुम न होने जैसा ही है तथा लैटबाथ दोनों में पानी नहीं है। तीन पलंग बिल्कुल सटाकर लगाये गये हैं। कमरा बहुत छोटा है। अंधेरा हुआ तो पता लगा यहां बिजली भी नहीं है। खंभा टूटने के कारण पूरी हनुमान चट्टी 15 दिनों से अंधेरे में डूबी हुई है। यहां सभी होटलों में जर्नेटर है हमारे होटल का जर्नेटर भी तीन दिन से खराब है। प्रयास कर नहाने के लिये बाल्टी तथा जग तथा उजाले के लिये एक मोमबत्ती होटलवाले से ली। होटल में नीचे भोजनालय चल रहा है उसका धुंआ यहां रहने वालों को परेशान करता है। किसी तरह नहा धो नीचे आ 15 रु. थाली में दाल रोटी खाई। आटे में कंकर आना सारे होटलों की समस्या है। न पापड़ चावल, न प्याज नीबू मिर्च। बस किसी तरह से पेट भर कमरे में आ रजाइयां ओड़ कर दुबक गये।

तारीख 5. 8. 1996 सोमवार

हम पांच बजे से पहले ही उठ गये। यमुनौत्री जाने के लिये बैग में सामान जमाने में बड़ा तनाव पैदा हुआ। हमें एक रात रास्ते में रुकना है। पारीक साहब के पास कोई सामान नहीं है। हमने छह बजे पद्यात्रा शुरु कर दी। पहला पड़ाव फूलचट्टी है। आजकल वहां जाने के दो रास्ते हैं। पुराना रास्ता तीन किमी ज्यादा है तथा ज्यादा चढ़ाई–उतार वाला है। अब प्रशासन नया रास्ता बना रहा है जिसमें अभी भूस्खलन से तीन स्थानों पर अवरोध आया हुआ है। सारे स्थानीयवासी तथा कुली नये रास्ते से जा रहे हैं। हमारे साथ कोई बच्चे महिलायें तो हैं नहीं हमने भी नये खतरनाक रास्ते से ही यात्रा करने का निश्चय किया। थोड़ा सा चलते ही टूटा मार्ग आ गया। यहां पारीक साहब तो उस रास्ते से तुरंत पार हो गये और हम दोनों की हिम्मत जवाब दे गई। छः आदमियों की एक पार्टी भी अभी इस रास्ते से वापस लौटी है। हम असमंजस में थे तभी एक कंडीवाला कंडी में एक बुढ़िया को बिठा कर लाया। उसने लौट रहे यात्रियों एवं हमारे को हिम्मत बंधाई। कंडीवाले ने कंडी जमीन पर रख हाथ पकड–पकड़ कर सभी यात्रियों को उस रास्ते से पार लगा दिया। आगे छोटे मोटे खराब रास्ते हमने हिम्मत कर पार कर लिये। नारद चट्टी पर हम बिल्कुल नहीं रुके। फूल चट्टी पर आध घंटे आराम किया। चाय पानी व फोटोग्राफी की तथा नौ बजे जानकी चट्टी पहुंच गये। जानकी चट्टी समुद्रतल से 2595 मीटर ऊंचाई पर है। रास्ते में हम इससे ज्यादा ऊंचाई को पार करके आये है। हनुमानचट्टी से एक दिन में यमुनौत्री यात्रा करवाकर वापस लाने के लिये यहां 1755 रुपये में कंडी तथा 500 रुपये में घोड़ा भी मिल जाता है।

यहां अरविंद आसरा नामक दुकान में ताजा दूध आने के आश्वासन पर पौन घंटे बैठे रहे। दूध न आने पर दो–दो परांठों का नाश्ता किया। यहां के लोगों का व्यवहार हमें पसंद आया और हमने इनसे लौटते में यहीं कमरा लेकर रात रुकने की बात कर ली। जानकी चट्टी से एक रास्ता करसानी गांव जाता है जहां यमुनौत्री के पंडे रहते हैं। कुछ दिनों पहले राज्यपाल मोतीलालजी वोरा करसानी गांव में हेलीकॉप्टर से उतरे थे तथा यमुनौत्री दर्शनार्थ गये थे। इसी तरह फूलचट्टी के पास बनास नामक गांव है जहां सालभर आबादी निवास करती है। अभी तक हम साढ़े आठ किमी यात्रा कर चुके हैं तथा यमुनौत्री अभी पांच किमी दूर है। जानकीचट्टी से साढ़े चार किमी आगे भैरोंघाटी तक सीधी चढ़ाई है। पूरे एक हजार मीटर चढ़ना होता है। तीन किमी बाद घना कोहरा छा गया। कोहरे की फुहारें हमें सहलाने लगी। हमने अपने बरसात के सामान धारण कर लिये। मैंने रैनसूट पहना है पारीक सा. के लिये घूघी ली गई थी तथा प्रेमजी छतरी लाये हैं। यमुनौत्री 3666 मीटर पर है। यमुना नदी 6315 मीटर ऊंची बंदरपंच चोटी से निकली है। हमें यमुनौत्री पहुंचने में दोपहर साढ़े बारह बज गये। इस पूरे मार्ग पर हिमालय बहुत खूबसूरत तथा हराभरा है। यहां सरकार द्वारा योजनाबद्ध वृक्षारोपण करवाया गया है। इस देवभूमि को देख हमें स्वर्ग का सा आभास हो रहा है। दोनों ओर ऊंची–ऊंची पर्वत मालायें और उनके बीच बहती, बलखाती इठलाती शोर मचाती अल्हड़ किशारी सी यमुना मैया। हम बढ़ रहे हैं यमुना मैया के बाल रूप को देखने।

बरसात से यमुनौत्री पहुंचते–पहुंचते मेरा रैनसूट पूरा भीग गया है। बाहर पानी से और अंदर पसीने से। मेरे सारे कपड़े पसीने से भीग चुके हैं। इस रैनसूट को पहनकर चलने में मुझे बहुत तकलीफ हो रही है। यहां फोटोग्राफी नहीं हो सकी है। मैं कैमरे में रील नहीं डाल पाया। यहां गहरी धुंध के बीच एक ढाबे में हलुये का नाश्ता किया। पारीक साहब हमें यमुना के दूसरी ओर मुख्य मंदिर के पास हनुमानजी के मंदिर में ले गये। पारीक साहब ने यहां 1982 में एक बंगाली बाबा का आतिथ्य ग्रहण किया था। उन बंगाली बाबा ने गत 34 वर्ष से यमुना पार नहीं की है। आज उनके चेले उपदेश दे रहे है। हमें उनके उपदेश सुनने पड़े। बाद में हम गर्म पानी के कुंड में नहाये। प्रेमजी श्रद्धावश पहले यमुनौत्री के शीतल जल से भी नहा कर आये। मंदिर पर पूजा कराने हेतु हमें स्वतः ही एक पंडेजी ने पकड़ लिया। पंडेजी ने पूजा करवाकर दक्षिणा ग्रहण की। यहां के गर्म पानी के सबसे छोटे कुंड में पोटली में चावल बांधकर लटका दिये जाते हैं। पानी इतना ज्यादा गर्म रहता है कि कुछ देर में चावल पक जाते है और श्रद्धालु उन्हें प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं। वर्ष 1974 में मैं अपने माता–पिता के साथ यहां आया था तब हमारा खाना इस तरह पकाये चावल ही था। अभी यहां विशाल आधुनिक मंदिर बन गया है जो कलकत्ता के मारवाड़ी सेठ जालान जी द्वारा बनवाया गया है। पुराना मंदिर तथा कुंड सन् 1982 में हुये भारी

हिमस्खलन में टूट गये थे। बंगाली बाबा के चेलों ने हमें उस समय का वाकया सुनाया। बाबाजी अकेले उस हिमस्खलन के समय मंदिर में फंस गये थे। वे कई दिनों बाद बर्फ खुरच–खुरच कर रास्ता बना बाहर निकल पाये। अभी भी बंगाली बाबा अपने दो तीन चेलों के साथ साल भर यहीं रहते है। अभी यहां यमुनौत्री विकास समिति के नाम से एक संस्था काम कर रही है।

हमारी वापसी यात्रा डेढ़ बजे शुरु हुई। हल्की बरसात व भारी कोहरे के कारण दस कदम आगे ही कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, घाटी का सौन्दर्य तो कहां से निहारते? तेज गति से चलते हुये पौने चार बजे होटल अरविंद आसरा जानकीचट्टी आ पहुंचे। मात्र अस्सी रुपये में अटैच लेट बॉथ कमरा ले लिया। दूध चाय पी सात बजे तक रजाइयों में दुबक कर समय गुजारा। सात बजे भोजन तैयार हो गया। रोटी, अरहर की दाल, आलू भाजी और चपाती। भोजन के बाद वहीं चूल्हे के पास बैठ तापते तथा बतियाते रहे। मैंने अपने गीले कपड़े भी आंच में सुखाये। होटल के ही एक कर्मचारी को जोड़ीदार बना हमने नौ बजे तक ताश खेली व बाद में सोये। हमेशा की तरह प्रेमजी राठौर तो लेटते ही खर्राटे भरने लगे और मुझे जुकाम के कारण बहुत देर बाद नींद आई।

तारीख 6.8.1996 मंगलवार

प्रातः चार बजे जागे तो बिजली गुल थी। ऐसे में प्रेमजी की जेब में रखी माचिस काम आई। एक–एक तीली कंजूसी से जला हम सुबह के कामों से निबटे। पांच बजे होटल मालिक को जगाया। उसका हिसाब कर सवा पांच बजे वापसी यात्रा पर कूच कर गये। अभी यहां झूड़ लग रहा है अर्थात् लंबे समय तक चलने वाली धीमी बरसात हो रही है। हमने बरसाती सामान पहन लिये थे। जाते समय यमुनाजी में नीला चमकदार जल था अभी बारिश का मटमैला पानी आ गया है। छः बजे फूलचट्टी पहुंच चाय पानी लिया। यहां हमने अपने बरसाती व गरम कपड़े सब बैग में डाल लिये। चलने से पसीना सा आ रहा है। यहां बारिश नहीं है। वापसी में एक टूटे हुये रास्ते से स्थानीय निवासी का हाथपकड़ कर निकले। हनुमान चट्टी पहुंचने से कुछ पहले एक दुर्घटना देखने को मिली। टूटे रास्ते से एक महिला फिसल कर चीखती हुई नदी की ओर गिर गई। सबने समझा कि यह तो गई मौत के मुंह में। कई यात्रियों की चीखें निकल गई। वहां स्लेटी पत्थर का मलबा था जिसमें महिला के पैर जम गये। वह पहाड़ का सहारा ले मलबे पर खड़ी रह गई और मौत से बच गई। आश्चर्यजनक तरीके से कुलियों ने उसी मलबे में कूद महिला को खींच कर बाहर निकाल लिया और महिला बिना कोई चोट खाये आगे की यात्रा पर रवाना हो गई। जय यमुना मैया!

तेज गति से चल साढ़े सात बजे हनुमान चट्टी पंवार होटल पहुंचे। बड़कोट जानेवाली बस तैयार खड़ी थी। हमने अपने सामान समेट बस में डाल लिये। होटल वाले को पांच रुपये प्रति चाय तथा पांच रुपये प्रति सूटकेस क्लॉकरुम चार्ज देना हमें थोड़ा अखरा। बस आठ बजे रवाना हो गई पर थोड़ा आगे एक गांव में सामान लादने के लिये बीस मिनट रुकी। स्यानाचट्टी आदि गांवों में होती हुई बस पौने दस बजे बड़कोट पहुंच गई। वहां हमें उत्तरकाशी जाने वाली बस तैयार खड़ी मिली। बस साढ़े दस बजे निकली। इसी बीच हम पानी पेशाब से निबटे, बारां फोन से बात की तथा अखबार खरीदा। 10–12 किमी चढ़ाई के बाद आये राड़ी घाटी पर बने भैरों मंदिर पर बस वालों ने पूजा की तथा नारियल प्रसाद सारे यात्रियों को भी बांटा। आगे हुण्डा गांव तक उतार आता है। बीच में ब्रह्मखाल तथा धरांसू बड़े गांव आते हैं। ऋषिकेश से गंगोत्री का स्टेटहाइवे धरांसू से हमें मिल गया। धरांसू में बस यात्रियों को भोजन का समय दिया जाता है। पारीक सा. व मैं तबियत नरम होने के कारण मात्र केले खाकर काम चलाते हैं। हम दो दिन पुराने गंदे पसीनेवाले कपड़े पहने हुये हैं। आज तो हमारा स्नान भी नहीं हुआ है। कुछ बुरा सा लग रहा है। बस ने हमें पौने तीन बजे उत्तरकाशी पहुंचाया। पारीक सा. व मैंने रुकने की जगह ढूंढी। बिरला गेस्ट हाउस तथा गढ़वाल मंडल धर्मशाला देखी और अंत में हमें एक होटल कपूर लॉज में अस्सी रुपये रोज में अटैच कमरा मिल गया। सामान जमाने के बाद पारीक साहब उसी होटल के बाल मजदूर को लेकर ताला खोलने वाले सरदारजी की दुकान पर अटैची लेकर पहुंचे। जब तक सरदारजी ने सूटकेस की दूसरी चाबी बनाई पारीक साहब ने बैग में खोये हुये आवश्यक सामान करीब 600 रुपये खर्च कर बाजार से खरीद लिये। इसी अवधी में हम नहा धो निबटे। हमने हमारे बहुत सारे कपड़े भी धोये जिन्हें सुखाने हेतु कमरे में रस्सी बांधी। पारीक सा. के आने के बाद हमने बचे समय का सदुपयोग किया।

काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन किये तथा घाट पर गंगा आचमन किया। वापसी में कैमरे की रील बदलवाई। रात नौ बजे सोये।

तारीख 7.8.96. बुधवार

रात पारीक साहब व मेरे को गहरी नींद नहीं आई। बस में असुविधाजनक स्थिति में बैठे–बैठे अच्छी नींद आती है और यहां नर्म बिस्तरों पर आदमी करवटें बदलता रहता है। नींद हमारी गुलाम नहीं है। हम पांच बजे उठ तैयार हो, छः बजे गंगोंत्री जाने वाली बस में आ बैठे। हमारी बस का नम्बर एन एल 028 0435 है जो उत्तरकाशी से गंगौत्री जाने वाली दूसरी बस है। इससे पूर्व पांच बजे वाली बस जा चुकी है। हमारी बस का चालक युवा है और बहुत तेज गति से बस चला रहा है। सात से आठ बजे तक बस भटिवाड़ी नामक गांव में चाय–पानी के लिये रुकी। यहां तक बस पूरी भर चुकी थी। भटिवाड़ी से दस बारह किमी पहले से छात्र–छात्रायें बस में चढे जिन्हें खड़े–खड़े सफर करना पड़ रहा था। दो छात्रायें हमारे सूटकेस पर भी आ बैठी थी। मैंने समय गुजाारने के लिये उनसे बातचीत शुरु की पर उन्हें मेरी शुद्ध हिन्दी भी मुश्किल से समझ में आ रही थी। स्थान–स्थान पर बोली में लहजे का फर्क आ जाता है। ये छात्रायें ग्याहरवीं कक्षा में पढ़ती हैं। इस बस में बैठे अधिकांश विद्यार्थी भटिवाड़ी के उच्च प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते हैं तथा रोज इसी तरह बस से आते–जाते हैं। बस वाले ने उनसे किराया भी नहीं लिया। पता नहीं क्यों? मैं उन छात्राओं से बात कर वहां की शिक्षा के बारे में जानना चाहता था पर पारीक साहब ने मुझे कोई बहुत ही अपमानजनक बात कह कर चुप करा दिया।

भटिवाड़ी से गंगवानी रास्ता ठीक कटा पर आगे जाम लगा था। हमारे बस चालक ने जाम रास्ते पर बस आगे तक घुसेड़ दी। यहां हमें सड़क पर पहाड़ से गिरा मलबा दिखाई दिया। हम यात्री उतर कर इस पहाड़ी दृश्य को देखने पहुंचे। अच्छा सीन है। पहाड़ बड़े–बड़े वृक्षों सहित सड़क पर आ गिरा है। अभी भी छोटे पत्थर रह–रह कर नीचे गिर रहे हैं। दोनों ओर यात्रियों की चिंतित भीड़ जमा है। अभी पौने नौ बजे है। चार–पांच मजदूर यहां काम कर रहे हैं पर वे कैसे सड़क खुलासा कर पायेंगें? अब हमारी यात्रा का क्या होगा? यहां तो खाने–पीने का कोई इंतजाम भी नहीं है। पचासों सवाल हमारे सामने खड़े थे। पर सब सवाल फिजूल साबित हुये। थोड़ी देर बाद ही वहां एक मेटाडोर में सरकारी अमला आ गया। बड़े पत्थर हथौड़ों से तोड़ कर नदी में फेंके गये। यात्रियों ने भी हाथ बंटाया। पेड़ों को मेटाडोर से बांध कर खींचा गया। धन्य है सड़क रक्षक। साढ़े ग्यारह बजे एक बस निकलने लायक रास्ता बन गया। इसी बीच प्रेमजी को कहीं से कच्चे दूध की थैलियां मिल गई और वे तीन थैली दूध खरीद लाये। आपातकाल में उनके इस निर्णय की हमने तारीफ की। प्रेमजी व मैंने आधा–आधा लीटर कच्चा दूध पी लिया और पारीक साहब ने थोड़ा दूध पीकर बाकी थैली फेंक दी। कुछ तो राहत मिली ही। हमारा युवा चालक बस मालिक का बेटा ही है। उसे शाम को गंगौत्री से वापस उत्तरकाशी भी आना है। उसने बहुत तेज बस चलायी। यात्रियों ने उसे टोका भी और प्रेमजी भाई साहब जो उसके पास ही बैठे थे; समय बचाने व जोखिम कम करने के लिये उसकी बीड़ीयां सुलगाने में उसकी मदद करते रहे। एक बहुत ऊंची घाटी और बाद में बहुत सारा उतार पार करने के बाद गंगा पर पुल आया और बस गंगा के पश्चिमी ओर चली गई। हरसिल गांव पास करने के बाद बस का पहिया पंचर हो गया। पहिया ठीक होने के समय में हमने उस जंगल में फोटोग्राफी की। बाद में पुनः वही तेज गति। आगे एक जीप को बचाने के लिये चालक ने बस को जोरदार ब्रेक लगाया। पारीक साहब जो बाहर की सीट पर बैठे थे धड़ाम से बस के फर्श पर नीचे गिर गये। इसी बस में हमारे इलाके के शहर बूंदी की चित्तौड़ा परिवार की सवारियां भी थी। ब्रेक लगाने से उन सहित कई सवारियों को चोटें आई। सबने चालक को कोसा पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ा। हरसिल व मेयांग होती हुई बस भैरोंघाटी पहुंची। यहां से एक रास्ता तेलांग नामक जगह को जाता है जो 23 किमी दूर सेना का चीनी सीमा पर मोर्चाबंदी की हुई जगह का नाम है। हमारा लक्ष्य गंगौत्री मात्र आठ किमी है। इतनी ऊंची जगह पर भी गांव बसे होना हमारे लिये आश्चर्य की बात है। सब होने के बावजूद हम सही सलामत गंगा मैया के दरबार में पौने तीन बजे पहुंच गये।

यहां लॉज थोड़े महंगे लगे और कंजूसी कर हमने सुदर्शन सेवा सदन, गंगोत्रीधाम नामक धर्मशाला में कमरा ले लिया। यह धर्मशाला पुरानी है। इसे सेठियों द्धारा बनवाकर पंडित गंगा गुप्त,

सुभाषचंद्र तथा दिनेशचंद्र को समर्पित किया हुआ है। कमरे में घुसने के बाद हमें इस जगह ठहरने का पश्चाताप हुआ। बहुत छोटा कमरा, खिड़की नहीं, अटैच लेट पर उसकी खिड़की भी कमरे में ही खुलने वाली और सीलन। हमें रास्ते में कच्चा दूध पीने का खामियाजा उठाना पड़ा। प्रेमजी व मेरे पेट में गड़बड़ हो गई। हमने सामाान जमाने के बाद इसी धर्मशाला की ऊपरी मंजिल के भोजनालय में जाकर बेस्वाद भोजन ग्रहण किया। भोजन के बाद कमरे में आ कपड़े जमाये और मंदिर के पास के ही घाट पर जाकर दो–दो लोटे हिम का सा ठंडा तथा हिमालय की मिट्टी मिला मटमैला पानी, शरीर पर डाल, नहाने की रस्म अदा की। नहाने के बाद एक पंडितजी के सानिध्य में भागीरथ की तपोस्थली गंगा माता के मंदिर में पूजा अर्चना की। उसी समय वहां आठ विदेशी महिला पुरुषों की टोली एक भारतीय महिला गाइड के साथ आई। उन सबने भी गंगा माता के हाथ जोड़े तथा तिलक लगवाया। देखकर बड़ा अच्छा लगा।

दर्शनोपरांत हम टहलते से कालीकमली वालों की धर्मशाला में चले गये। पुरानी धर्मशाला जीर्णशीर्ण हो चुकी है। सन् 1974 की कुछ स्मृतियां मुझे याद आ गई। हम उस समय इस धर्मशाला में रुके थे। समय गुजारने के लिये आज हमने गंगौत्री के विभिन्न स्थान देखने का निश्चय किया। गंगा मंदिर में एक साइन बोर्ड पर यहां देखने योग्य स्थानों की सूची लगी हुई है। हमने धर्मशाला आ अपने गीले कपड़े सुखाए तथा कैमरा व टॉर्च लेकर घूमने निकल पड़े। मंदिर के सामने के पुल से गंगा को पार किया। यहां से गंगा का विकरालरूप दिखता है। वहां से हम केदार गंगा के किनारे चलते हुए आगे बढ़े। यहां बहुत सारे सरकारी कार्यालय बने हुये हैं। यहां से पूछताछ करते हुये हम ब्रह्मकुंड तथा गौरीकुंड दर्शनार्थ गये। दोनों स्थानों पर गंगा का पानी चट्टानों के बीच टकराकर गरजता हुआ उछलता है। पानी उछलने से ऊंची–ऊंची फुहारें उठकर बादलों का रूप धारण कर रही है। गंगा में पानी गिरने से बने इन विशाल गड्ढों को कुंडों की मान्यता दे दी गई है। यहां स्नान करना तो दूर, पानी तक पहुंचना भी असंभव है। कुंडों में वेग से गिरती गंगा हमारा दिल दहला रही है। इस नयनाभिराम दृश्य के अवलोकन के बाद हम सूर्य कुंड के पास बने पुराने पुल से गंगा के इस पार आ गये। रास्ते में हमने गौमुख तथा तपोवन की सैर करवाने वाले एक गाइड से बातचीत कर बहुत सारी जानकारियां हासिल की। वैसे हम यमुनौत्री यात्रा से थके हुये हैं तथा आज के गंगौत्री दर्शन में ही हमारे पैर जवाब देने लगे हैं। यहां सर्दी बहुत है। धर्मशाला आते ही मेरे दोनों साथी सात बजे ही कमरे में जाकर सो गये। मैं यहां के पंडे एवं सहयात्रियों से बतियाने लगा। रात सवा आठ बजे तक मैं बाहर कुर्सी लगा, गंगा को अट्टहास करते, सूर्यकुंड में गिरते देखते हुये, लिखता रहा।

8.8.1996 गुरुवार

रात नींद अच्छी आई। प्रातः पांच बजे उठे एवं गौमुख जाने का निश्चय कर तैयार हो गये। हमने तीन सूटकेस धर्मशाला वाले को जमा करवाये तथा तीनों ने एक–एक बैग में आवश्यकता के सामान रखे और गौमुख पद्यात्रा के लिये रवाना हो गये। आज हमारे पैरों में दर्द है फिर भी हम तेज गति से चल, मनोरम वनखंड को पार कर, नौ किमी दूर चीरबासा नामक स्थान पर साढ़े नौ बजे पहुंच गये। चीरबासा समुद्र तल से 3525 मीटर ऊंचाई पर है तथा यहां कई अच्छे होटल हैं। हमने गंगा होटल नामक ढाबे पर परांठो का नाश्ता किया। दोनों साथियों को बैग का बोझ अखर रहा था अतः उनके बैग हमने यहीं छोड़ दिये। अब हमारे पास सामानों के नाम पर मेरे कंधे पर लटकने वाला एक बैग रह गया है। इसमें अधिकांश सामान मेरे ही हैं। साढ़े दस बजे चीरबासा से प्रस्थान कर टेढ़े–मेड़े रास्ते पार करते, चार पांच फुट की पगडंडी पर चल हम बारह बजे भोजबासा नामक स्थान पर पहुंचे। चीड़बासा नामक स्थान तक चीड़ के घने वृक्ष मिलते हैं और आगे भोजपत्रों के वृक्षों का वन चालू हो जाता है। भोजबासा से आगे वृक्ष लगभग समाप्त हो जाते हैं और नंगी पहाड़ियों पर कहीं–कहीं घास या झाडियां ही वनस्पति के रूप में दिखाई देती है। लगता है जैसे दोनों स्थानों के नाम यहां वृक्षों की अधिकता के आधार पर ही रखे गये हों। रास्ते में एक संकरे मार्ग पर मुझे चक्कर आये। मैं कुछ देर बैठा तथा मैंने पानी पीया। मेरे चक्कर आने से साथी लोग भी बहुत चिंतित हुये पर मैं कुछ देर बाद सामान्य हो गया। भोजवासा से पूर्व रास्ते में पारीक साहब ने मुझे एक टॉफी खाने को दी थी। टॉफी बनारसी पान की थी। मुझे लगा उसी से मुझे चक्कर आये हैं। बारां में एक बार मीठा पत्ता पान खाने के बाद मुझे एक घंटा तक चक्कर आते रहे थे। उसके बाद मैंने मीठा पत्ता पान खाना छोड़ दिया था। 1994 की अमरनाथ यात्रा के समय मैंने पान का

पूर्णतः त्याग कर दिया। भोजबासा में लालबाबा का आश्रम है। बारां में हमारे मित्र साबू परिवार का इस आश्रम से जुड़ाव है। वे प्रतिवर्ष यहां दान भेजते हैं। यह आश्रम रास्ते से बहुत नीचे जाकर आता है इसलिये सामान्य यात्री वहां नहीं जाता। हम भी बहुत थके हुये हैं, अब एक दो किमी अतिरिक्त क्यों चलें? आश्रम के पास ही गढ़वाल निगम का रेस्टहाउस तथा रेस्टोरेन्ट भी है। इन दो स्थानों के अतिरिक्त यहां मार्ग के किनारे दो अस्थाई टापरियां बनाकर रुकने का स्थान तथा ढाबे चलाये जा रहे हैं। यहां रजाई गदेले तथा कंबल रखे हुये हैं। मुझे यहां आते–आते भूख महसूस हुई। एक टापरी दुकान में बने ढाबे में आधी प्लेट दाल चावल की लेकर खाई। बहुत कचरे कंकर वाला तथा बदबूदार खाना, किसी तरह हलक के नीचे उतारा। होटलवाले को शिकायत भी की। यहां से साढ़े बारह बजे रवाना होकर हम दो बजे दोपहर गौमुख पहुंचे।

गौमुख क्या है? वास्तव में गंगा नदी इस स्थान से बर्फ के विशाल ग्लेशियर से बाहर निकलती है। जहां भी जलधारा धरती का सीना तोड़ बाहर आती है वहीं हिन्दु समाज ने गौमुख नाम रख दिया है। धारा के साथ बर्फ के छोटे बड़े टुकड़े भी बह–बह कर नदी में आते रहते हैं। मेरी कल्पना थी कि बर्फ में से पानी निकलता है वह चमकदार और साफ होता है। पर यहां गंगा में मटमैला पानी आ रहा है। गंगा का उद्‌गम स्थल क्या मिट्‌टी से बना पहाड़ है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार गंगा कैलाश पर्वत से निकलती है जो यहां से बहुत दूर है। हमारे मनीषियों ने वर्तमान में जहां गंगौत्री की स्थापना की है, हो सकता है हजारों वर्ष पूर्व गौमुख वहीं हो। मानव द्वारा प्रकृति का नाश करने, पर्वतारोहियों, ,यात्रियों, होटलों द्वारा गर्मी पैदा होने तथा धरती पर प्रदूषण के कारण ग्लेशियर लगातार छोटे होते जा रहे हैं। आज हमें गौमुख देखने के लियें गंगौत्री से उन्नीस किलोमीटर चल कर आना पड़ा है। इस रास्ते में यमुनौत्री जैसी कठिन चढाई नहीं है। यमुनौत्री में जानकी चट्‌टी के बाद पांच किमी में 1000 मीटर चढ़ाई है जबकि यहां 19 किमी में मात्र 900 मीटर चढ़ाई है। पौराणिक आख्यान है कि राजा भागीरथ ने पांच हजार वर्षों तक तपस्या कर शिवजी की जटाओं में से गंगा को इस धरती पर उतारा। मैं सोच रहा हूं महान् भू वैज्ञानिक भागीरथजी ने बहुत वर्षों तक प्रयास कर इस गंगा की धारा को भारत की ओर मोड़ा। उन्होंने कहीं पहाड़ खोदा होगा, कहीं बांध बनाया होगा। गंगा हमारे देश के लिये जीवनदायिनी है। इसमें बारहों मास पानी आता रहता है। इससे पूर्व गंगा कहां से बहती होगी? दोनों ओर तो बहुत ऊंचे–ऊंचे पहाड़ हैं। यदि किसी युग में यह मानवीय प्रयास हुआ भी हो तो हो सकता है यह निर्माण गौमुख से पूर्व का हो। शिवजी की जटाओं से गंगा निकलने का यह अभिप्राय भी हो सकता है कि गंगा शिवलिंग पर्वत श्रृंखला से निकली हो। गौमुख से उत्तर में मौसम साफ रहने पर विशाल शिवलिंग आकार का पर्वत दिखाई देता है। उसी के पास भृगुपंथ पर्वत तथा पूर्व में सुमेरु पर्वत खड़ा है। बादलों की लुका छिपी के बीच हमें इन शिखरों के दर्शन हुये।

गौमुख के रास्ते जाते हुये हमें सेना के जवान मिले। एक–एक जवान की पीठ पर कोई चालीस चालीस किलो वजनी सामान लदा था जिसमें सूखी लकड़ियां भी थी। मेरी एक जवान से दो मिनट मात्र बात हुई थी। उसने बताया कि वे नौ आदमी सात दिवसीय ट्रेकिंग पर जा रहे हैं। इधर से जाकर बद्रीनाथ जी के पास वसुधारा से वापस उतरेंगें। आज की रात वे तपोवन नामक स्थान पर रुकेंगे जो गौमुख से पांच किमी करीब आगे है। हमारे सेना के ऐसे अभियान चलते रहते हैं और कभि मौसम खराब हो जाये तो हादसे भी हो जाते हैं।

तपोवन के बारे में हमने भी जानकारी ली थी। वहां हमें जाने की अनुमति है। रात रुकने के लिये एक तपस्वीनी जी का आश्रम भी वहां पर है। रास्ता कोई नहीं है। कई जगह रेंग कर या पेड़ों झाड़ियों को पकड़–पकड़ कर बर्फ के ग्लेशयर से आगे पहाड़ पर चढ़ना पड़ता है। हमें वहां ले जाने के लिये गाइड भी मिल जाता पर निश्चय ही यह हमारे बस का काम नहीं है।

गौमुख में अंतिम एक किमी पर कोई रास्ता नहीं है। बहुत बड़ी–बड़ी चट्‌टानों की बीच मानव के चलने से एक पगडंडी सी बन गई है। आध किमी पूर्व तो सरकार ने चेतावनी बोर्ड लगा रखा है, जिसमें प्रदर्शित है कि इससे आगे जाना खतरनाक है। पारीक साहब इस रास्ते को सहजता से पार कर रहे हैं और कई जगह हमारी हिम्मत जवाब दे रही है। एक चट्‌टान पर तो मेरे साथ कई सहयात्री अटक गये थे। एक स्थानीय निवासी ने सहारा दे सभी को निकाला। हम अंत में गंगा के किनारे पहुंच ही गये। यहां कई यात्री स्नान कर रहे हैं। कुछ बहादुर यात्री इससे भी आगे जा रहे हैं जहां से गंगा बर्फ के बीच से

निकलती दिखाई दे रही है। यहां घुमाव होने के कारण हम उस गौमुख को नहीं देख पा रहे। लगता है यह पहाड़ी बाद में गिरी है जिससे ठेठ गौमुख जाने का हमारा रास्ता रुक गया है। कुछ लोगों की देखा–देखी पारीक साहब ने हमें भी प्रेरित किया पर रास्ता इतना खतरनाक था कि हम हिम्मत नहीं कर पाये। पारीक साहब कैमरा लेकर उस स्थान पर चले गये तथा गौमुख के सामने खड़े हो दूसरे यात्री से दो फोटो खिंचवा लाये। पारीक साहब जब तक हमारी आंखों से ओझल रहे हमें उनकी चिंता रही। अभी–अभी मौसम एकदम खराब हो गया है। सारे इलाके में धुंध छा गई तथा छींटे भी आने लगे। यहां भी एक तंबू दुकान लगी हुई है। हमने अपना सामान वहीं डाल दिया है। प्रेमजी व पारीक जी ने यहां गौमुख में स्नान किया। प्रेमजी तो घुटनों–घुटनों तक पानी में उतर कर नहाये। किनारे पर बर्फ की सिल्लियों के बीच से रास्ता बनाते हुये वे गंगा नदी में उतरे। मेरी तो कपड़े उतारने तक की भी इच्छा नहीं हुई। मैंने 'धोये कान हुआ स्नान' मान मुंह धो शरीर पर छींटे मार लिये। बारिश आने पर मैंने तो अपना रैनकोट पहन लिया पर मेरे साथियों के पास बरसात से बचाव का कोई साधन नहीं है। वे अपने सामान चीरबासा में ही छोड़ आये हैं। मुझे उनकी ज्यादा चिंता है। अब तुरंत लौटने में ही खैर है। हम तेजी से बढ़े। वापसी में खतरनाक रास्ता हमने कब पार लिया पता ही नहीं चला। हमने तीन बजे गौमुख से वापसी यात्रा शुरु की। साढ़े चार बजे भोजबासा पार किया तथा साढ़े छः बजे चीड़बासा के गंगा होटल में जाकर ही दम लिया। यहां हमारे सामान रखे हुये हैं तथा हम यहां जाते समय ही रुकने की बात कर गये थे। होटल वाले ने पूर्व की बात से ज्यादा पैसा मांगा जो हमें मंजूर करना पड़ा। यहां हमने दस रुपये वाली मक्खन की टिकिया बीस रुपये में खरीद कर, बढ़िया खाना बनवा कर खाया। खाना अच्छा बना तथा हम तृप्त हो गये। यहां प्रेमजी भाई साहब का मुंह कडुआ हो रहा है। उन्हें बुखार हो गया है। उनके पैर घुटनों तक काले–काले से हो गये हैं। शायद गौमुख के बर्फीले पानी में कुछ देर खड़े रहने से ऐसा हुआ हो। वे दाल चावल रोटी नहीं खा सके। उनके लिये दो परांठे लिये जो उन्होंने अचार से खाये। खाना खाते ही हमें तेज सर्दी महसूस हुई और हम रजाइयों में जा दुबके। रात में यात्रियों के आने–जाने से थोड़ा व्यवधान हुआ, अन्यथा नींद गहरी आई। आखिर हमें उन्तीस किमी चलने की थकान जो थी। यहां चीड़बासा में रात भर गहरी धुंध छाई रही।

दिनांक 9.8.1996 शुक्रवार

पारीक साहब ने प्रातः चार बजे ही उठा दिया। प्रातःकालीन क्रियाओं के लिये जंगल जाना पड़ा जो धुंध तथा सर्दी में बहुत भारी लगा। पांच बजे अंधेरे में ही हमने वापसी यात्रा शुरु कर दी। मैंने धुंध तथा अंधेरे का हवाला देते हुये विरोध किया था पर टॉर्च होने के कारण हमें रास्ते में कोई परेशानी नहीं आई। पहला विश्राम पांच किमी चलने के बाद किया। इसके बाद मिनट–दो मिनट तीन–चार जगह रुके और आठ बजे से पूर्व ही गंगौत्री पहुंच गये। रास्ते में हमने एक आश्रम में राम मंदिर में दर्शन भी किये। आठ बजे हम गंगा मंदिर पहुंचे। प्रेम जी ने वहां दो गंगाजली चरियां खरीदी तथा गौमुख से केटली में लाया गंगा जल उन चरियों में भरकर उन्हें झलवा लिया। इस काम में हमारा आध घंटा तथा सत्तर रुपये खर्च हुये। पारीक साहब बस स्टॉप चले गये हैं। अभी नीचे जाने वाली कोई बस नहीं है। पांच, छः व सात बजे वाली बसें जा चुकी है। गौमुख से आने वालों के लिये उन्हें पकड़ना मुश्किल होता है। हमें पूर्व में बसों की कोई जानकारी नहीं थी। अगली बस नम्बर यूपी 07 सी 0179 बारह बजे जानी है। वह बस स्टैण्ड पर खड़ी हुई है। हमने धर्मशाला या होटल में किराया देने की अपेक्षा बस में बैठना ही उचित समझा। हमने नौ बजे अपने सामान बस में आगे की सीटों पर ले जाकर रख दिये। पारीक साहब व मै प्रेमजी को सामानों के पास छोड़ नाश्ते की तलाश में बाजार आये। यहां आलू परांठे के अलावा कोई नाश्ता ही नहीं बनता है। इसे खा–खाकर हम बोर हो गये हैं। हमारे गंगादर्शन होटल में खाना तैयार था, हमने खाना ही खा लिया। वापस आये तो पता लगा कि हमारी रोकी गई सीटें बस वाले ने किसी ओर के बुक कर दी। पारीक साहब बस वाले व प्रेमजी दोनों से ही बहुत नाराज हुये। सभी ने उन्हें मनाया व दो आगे की सीटें ली। प्रेमजी बस में बैठे आराम करते रहे और बस वाले ने न जाने कब बुकिंग कर ली। खैर यह विवाद निबटा तो हमने पास लगे नल पर स्नान किया। मैं तो गंगादर्शन होटल के हमारे कमरे में ही स्नानादि से निपट आया। बस में पर्याप्त सवारियां हो गई तो बस साढ़े ग्यारह बजे ही छोड़ दी गई।

आगे बस में बहुत भीड़ हो गई। हमें बहुत कठिनाई में यात्रा करनी पड़ रही है। हम सोच रहे हैं, आज तो बुरे फंसे। पर देखें अभी आगे क्या–क्या होता है?

रास्ते में भैरोंघाटी और लंका के बीच बरसात शुरु हो गई। हरसिल की ऊंची पहाड़ियों से कई स्थानों पर सड़क पर पत्थर गिर रहे हैं। पुराने धार्मिक स्थल गंगवानी तक हमें रास्ता सही मिला। गंगवानी में कई आश्रम तथा मंदिर हैं यहां के गर्म पानी के कुंडों में नहाने का महात्म्य है। हमें यहां भी रुकना चाहिये था। अभी भी रुक जाते तो अच्छा था पर हमें और मुश्किलें देखनी है। इसके आगे बड़ा कस्बा भटियारी आता है। भटियारी से छः किमी पूर्व ही पहाड़ गिर जाने के कारण रास्ता जाम हो रहा है। चालक को गंगवानी में ही इसका आभास हो गया था पर उसने बताया नहीं। यात्रियों में भी चर्चा थी कि सामने से कोई गाड़ी क्यों नहीं आ रही है? ठेठ गंगौत्री से यहां तक गंगौत्री की ओर जाती हुई हमें मात्र एक बस मिली है वह भी रात हरसिल में रुकी हुई थी। बस वाले चाहते तो हमें गंगवानी में आराम करने की सलाह दे सकते थे। तब उनके भाड़े का नुकसान हो सकता था। सबका अपना–अपना स्वार्थ है। दोपहर तीन बजे हमारी बस बहुत सारे वाहनों के पीछे खड़ी हो गई। हम अनिश्चितता के भंवर में झूलते रहे और हमारी बस की आधी से ज्यादा सवारियां पैदल टूटा रास्ता पार कर भटियारी के लिये रवाना हो गई। उनके पास सामान नहीं था तथा वे स्थानीय निवासी थे। हमें तो बस के साथ ही जाना होगा। हमने कई बार पैदल दूसरी ओर जाने का मानस बनाया पर हमारे पास सामान बहुत ज्यादा था तथा बारिश भी आ रही थी। हमें यह भी ज्ञात नहीं था कि दूसरी ओर कोई साधन मिलेगा या नहीं। इधर पारीक साहब को बुखार चढ़ आया था तथा हम तीनों बुरी तरह थके हुये थे। पारीक साहब व प्रेमजी दोनों पैदल बरसते पानी में छाता लेकर टूटे हुये रास्ते तक गये। उसी समय वहां सड़क ठीक करने वाला दल आ गया। दल ने आते ही काम शुरु कर दिया। कुछ पत्थर छैनी हथौड़े से तोड़ कर नदी में फेंके गये। एक बड़ी चट्टान को तोड़ने के लिये उसमें बारूद लगाया गया। सभी वाहनों एवं यात्रियों को घटनास्थल से आधा किमी दूर किया गया। बत्ती लगा कर मजदूर भाग कर पहाड़ की मजबूत चट्टानों के बीच बनी कोटरों में छुप गये। एक आदमी ने बत्ती में आग लगाई और अपनी पूरी ताकत लगा कर दूर भागा। विस्फोट होने में कोई दो मिनट लगे। तब तक सभी की सांसे थमी रही। मैं हमारी बस की आगे ही आगे की सीट पर बैठा पलीते में से उठता धुआं देखता रहा। इसके बाद बहुत जोर से धमाका हुआ, जैसे कहीं बादल गरजा हो और बिजली गिरी हो। पांच सात सैकण्ड तक पहाड़ों पर उसकी प्रतिध्वनि गूंजती रही। सारे लोग सन्न रह गये। प्रेमजी मेरे सामने सड़क पर खड़े थे, वे कान बंद कर सुरक्षित स्थान हेतु इधर–उधर देखने लगे। विस्फोट के बाद लगा सारा पहाड़ ही टूट कर गिरने वाला है। मैंने बस में बैठे–बैठे जोरदार कंपन महसूस किया। खैर कोई दुर्घटना नहीं हुई तथा तुरंत ही मजदूरों ने बाहर निकल टूटे पत्थरों को उठा–उठा कर नदी में फेंकना शुरु कर दिया। एक विस्फोट से पूरी चट्टान साफ नहीं हुई थी। मार्ग खोलने के लिये तीन विस्फोट किये गये। हर बार यही प्रक्रिया दोहराई गई। टूटा फूटा रास्ता बन गया। पहले छोटे वाहन निकाले गये, बाद में बसों का नम्बर आया। आध किमी आगे भी पहाड़ टूटा मिला। यहां भी सीमा सड़क संगठन वालों ने थोड़ी देर पहले ही मलबा हटा कर रास्ता खोला है। दोनों टूटे रास्तों के बीच दो बसें फंसी हुई थी जो अब निकली है। मार्ग का इतनी जल्दी खुलना हमारे लिये सुखद आश्चर्य ही है। हमारे बस वाले तक को यह उम्मीद थी कि रात यहीं गुजारनी पड़ सकती है। हम पौने पांच बजे यहां से रवाना हो सात बजे उत्तरकाशी पहुंच गये।

पूर्व में रुके कपूर लॉज में ही हमने इस बार भी कमरा ले लिया। कुछ देर आराम कर बाजार निकले। बारां फोन किया, खाना खाया तथा सेवफल व मेटासिन की गोलियां लाये। हम तीनों की तबियत नासाज है। पेट की खराबी तथा बुखार की हरारत। गोलियां खा–खाकर चल रहे हैं। यहां उत्तरकाशी में पिछले चौबीस घंटो से लगातार बरसात हो रही है। हमारे गीले कपड़े सूखने की कतई संभावना नहीं है। हमने अपने वस्त्र नहीं धोये। प्रेमजी भाई साहब के धोती कमीज फटाफट सूख जाते हैं। वे हर जगह कपड़े धो लेते हैं। उनका कम कपड़ों में काम चल रहा है। हमें सुबह उसी बस में बैठना है। हमारा टिकट गौरीकुंड तक का है। यहां लंबी दूरी की बसें कई बार रात में विश्राम ले लेती है। बीच में रुकने का खर्च यात्री का रहता है। यात्री चाहे तो बस में भी सो सकता है। रात नौ बजे से सुबह पांच बजे तक सभी को गहरी नींद आई।

दिनांक 10 अगस्त 1996 रविवार

बस वाले ने सात बजे बुलाया था पर आगे की सीटें लेने के लिये छः बजे ही बस में जा बैठे। कंडक्टर ने कोई एतराज नहीं किया क्योंकि हम कुल चार बेवकूफ ही सीधा टिकट लेकर बैठे थे। हमारे अलावा एक साधु बाबा। कुल पंद्रह सवारियों को लेकर बस सवा सात बजे छूटी। धरांसू होते हुये पौने नौ बजे टिहरी पहुंचे, जहां बेकार सा नाश्ता किया। टिहरी–मुरादाबाद रोड के बाद, एक ऊंची घाटी पार कर अलकनंदा के किनारे–किनारे चलते हुये कीर्तिनगर होते हुये श्रीनगर (गढ़वाल) पौन बजे पहुंचे। यहां भोजन हुआ। श्रीनगर से आगे बस पूरी भर गई। रास्ते में हमें पता लगा कि गौरीकुंड का रास्ता बंद है। कल के अनुभव को देखते हुये बस परिचालक से बात की। उसने बताया कि कुंड तक तो बस जायेगी ही उसके आगे दूसरी बस मिल जायेगी। आगे यही हुआ। कुंड गांव से करीब आधा किमी आगे सड़क पर पहाड़ गिरा पड़ा था। बस चालक के निर्देशानुसार सारे यात्री बस से उतर मलबे को पैदल पार दूसरी ओर चले गये। बाद में भी बसें आई पर इधर कोई यात्री नहीं रुका। संभावना थी कि उन्हें वहां दूसरी बस मिल जायेगी। हम असमंजस में कोई निर्णय नहीं ले पाये या हिम्मत नहीं जुटा पाये। सात बज गये हैं, रात होने वाली है, हमारे पास सामान ज्यादा हैं; यहां कोई कुली नहीं है; उधर साधन नहीं मिला तो? फिर प्रेमजी भाई साहब टूटा रास्ता देख कर आये हैं, वहां अभी तक पत्थर गिर रहे हैं। उन्होंने आते ही कहा,

'यहां मरने थोड़े ही आये हैं, मैं तो अभी नहीं जाऊंगा उधर।'

हमने इस पार ही रुकने का निश्चय कर लिया। यहां पीने का पानी है, एक छोटा रेस्टोरेंट है जिसमें आधुनिक लैटबॉथ भी है तथा सोने के लिये बस है। हमने रेस्टोरेंन्ट में बीस रुपये में एक प्लेट दाल चावल का आर्डर दिया है। इस रेस्टोरेंट को तीन विद्यार्थी समय गुजारने के लिये चला रहे हैं। इनके पास कोई स्टाफ नहीं है न ही खाद्यान का स्टॉक है। अभी ऑफ सीजन है फिर भी दो दिन से रास्ता टूटने के कारण उनके पास बहुत काम है। हमारा आर्डर मिलने के बाद एक लड़का मोटर साइकिल से निकट के कस्बे में जाकर दाल चावल खरीद कर लाया है। हमें भोजन बहुत देरी से मिला। उसे उजाले के लिये बाजार में मोमबत्ती नहीं मिल पाईं थी। रेस्टोरेंट में अंधेरा है। घासलेट के तेल की देशी चिमनी जलाने के लिये अंधेरे में उसे माचिस भी बहुत मुश्किल से मिल पाई। उसी के उजाले में हमारे सहित कई लोगों ने भोजन किया। पारीक साहब ने कुछ नहीं खाया। उनकी तबियत ज्यादा खराब है। भोजन करने के तुरंत बाद लड़के ने पूछा,

'कैसा बना?'

हमने खाने की तारीफ की। दाल चावल बने ही बहुत अच्छे थे। हम भोजन करके रात आठ बजे बस में आ गये। हमारी बस के स्टॉफ ने भी वहां ,खाने का आर्डर दिया है। खाना नहीं बना तो चालक तो ब्रेड खाकर ही बस में सो गया। बाकी उसके दो साथी एक खलासी तथा दूसरा बस मालिक का लड़का देर से भोजन करके आकर बस में सोये। तब तक हम निंद्रादेवी के आगोश में जा चुके थे। आश्चर्य इस असुविधाजनक जगह पर मेरे को गहरी नींद आई। मैं आगे की सीट पर लेटा था। थोड़ी देर पांव समेट कर सोया बाद में खिड़की खोल उसमें से पांव बाहर निकाल लिये। बारिश आने पर मुझे पुनः पैर अंदर करने पड़े। जरा सा हिलते ही सीटें शोर मचाती। करवट बदलने की तो जगह ही नहीं थी। रात में सर्दी लगी तो बस की खिड़कियां बंद की गई। मैने गले में रुमाल बांध लिया। रात में तीन बजे मुझे पेशाब की हाजत हुई। धुप्प अंधेरा, भयंकर सर्दी, सायं सायं करता घना जंगल, जहां विभिन्न आवाजें कंपा रही थी। एकाएक बस के बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हुई। किसी को नींद से जगाना भी मैंने उचित नहीं समझा। टॉर्च निकाल कर चुपके से बस का दरवाजा खोला। मेरी बस से दूर जाने की हिम्मत ही नहीं हुई। वातावरण में बहुत नमी है तथा जंगल भयावह लग रहा है। लुटेरे, अज्ञात शक्ति या जंगली जानवरों का भय जेहन में घुसा है। मैंने लगातार टॉर्च जलाये रखी और अपना काम कर तुरत–फुरत बस में चढ़ा। तभी पारीक साहब की आवाज गूंजी,

'ले मैं भी पेशाब कर ही लेता हूं।'

मैने उनके लिये भी टॉर्च जलाये रखी। साथ में रखी केटली के पानी से हाथ धो कर सोये।

इस जंगल में रात को विचित्र अहसास हुआ। गहरी नींद के बीच अजीब सपने आये। एक सपने में विष्णुजी गर्ग मेरे से मिलने हमारे पुराने मकान पर आये। उनसे मैंने मेरी बंबई टाटा मेमोरियल अस्पताल की फाइल की चर्चा की। बाद में वे तथा उनकी बहिन दोनों मेरी किराना दुकान पर आये और

वहां भी उसी फाइल के बारे में चर्चा हुई। मैंने चाचा विष्णु से कहा कि पेशेन्ट क्या करे? वहां दिन भर बैठा, रहा डाक्टर ही नहीं आये। चाचा ने कहा कि मैं उसे फाइल नम्बर लिख कर दूं। मैंने बहुत प्रयास किया पर मैं फाइल नम्बर कागज पर नहीं लिख पाया। कभी पेन नहीं मिला। मिला तो चला नहीं कभी कागज फट गया। कभी ओवर राइटिंग हुआ और कभी स्याही फैली।

एक दूसरे स्वप्न में हमारे पुराने मकान में मेरे पिताजी के चाचाजी मुझे डांटते हुये कहते हैं,

'इस बछिया का क्या हाल कर रखा है?'

स्वप्न के एक अन्य दृश्य में मेरे मौसाजी का लड़का अनिल प्रताप चौक के पास एक घर दिखाते हुये कहता है कि आपकी दादी यहां है। मैंने कमरे में झांककर एक अन्य महिला के साथ लेटी हुई मेरी दादी को उसकी खुली टांगें देख कर पहचाना। उसी समय हमारे जीजाजी गिर्राजजी प्रकट हुये और उन्होंने मेरे से कहा कि आपके यहां से आने के बाद से ही ये यहीं हैं।

केदारनाथजी तीर्थ के रास्ते मंदाकिनी के किनारे ऐसे स्वप्न दिखा कर ईश्वर मुझे क्या याद दिलाना चाहते हैं? विष्णु गर्ग 18 साल से बंबई में है। मुझे अपना पुराना मकान छोड़े 24 साल बीत चुके हैं। मै 15 सालों से किराना दुकान नहीं बैठा। टाटा अस्पताल के स्वप्न में आये दृश्य मैंने कभी नहीं देखे। पिताजी के चाचाजी को गुजरे एक साल हो चुका है। स्वप्न में देखी गाय की बछिया भी पांच वर्ष की होकर हमारे घर में कोई एक साल पहले मर गई थी। मेरी दादी को मरे सात साल हो चुके हैं। मैने स्वप्न में दादी को पांच छः साल की बच्ची के रूप में ही देखा है। हो सकता है उसने कहीं जन्म लिया हो और यह स्वप्न मुझे संकेत कर रहा हो। इस रात के विचित्र अहसास को मैं उम्र भर नहीं भुला पाऊंगा।

11 अगस्त 1996 रविवार

सुबह पांच बीस पर उठे। उजाला हो गया है तथा हल्की बरसात हो रही है। साढ़े सात बजे तक हम पानी रुकने का इंतजार करते रहे। न पानी रुका न पत्थरों का गिरना। यात्री इधर से उधर आ जा रहे हैं। हमें जानकारी मिली कि उधर आराम से साधन मिल जायेगा। साढ़े सात बजे हमने हिम्मत की और आगे जाने हेतु बरसाती कपड़े पहने। पारीक साहब अपना सूटकेस व बैग उठाकर हमारे से पहले ही निकल गये। हम कुली ढूंढने लगे। हमें अपना पहुंचना ही कठिन लग रहा है सामान साथ हो तो और कठिनाई होगी। हमने आवाज लगाई तो कुली मिल ही गया। कुली के पीछे–पीछे हम चल दिये। टूटे रास्ते पर पांच सात गांव वाले खड़े थे। उन्होने हमें रोका। अभी नीचे से एक बस और आई है। उसकी सवारियों को इस स्थिति का पता था। कई लोग भाग कर टूटे रास्ते के पास आ गये। पत्थर गिरना थोड़े रुके तो हमारे कुली उस ओर निकल गये। उनके पीछे मैं भी भाग निकला फिर प्रेमजी और सारे यात्री। पारीक साहब पूर्व में ही उधर पहुंच हमारा इंतजार कर रहे थे। उन्होंने वहां खड़ी बस में हमारे लिये जगह रोक रखी थी। पारीक साहब ने बताया कि हमारे लिये कुली उन्होंने ही भेजा था। इस तरह हमने एक रोमांचक यात्रा पूरी की। बस आठ बजे छूटी। यहां हमारे से 18 रुपये किराया लिया गया जबकि पिछली बस वाले ने 15 रु. वापस किये थे। नौ रु. भाड़ा तथा दस कुली के हमने उन्नीस रु. में रात गुजारी। इससे सस्ता और क्या हो सकता है?

कुंड से चढाई वाला रास्ता है। आगे दायीं ओर का रास्ता ऊखीमठ जाता है तथा सामने गुप्तकाशी है। बरसात से सारी सड़क क्षतिग्रस्त है। कुंड से गुप्तकाशी तथा ऊखीमठ दोनों आठ किमी हैं। ऊखीमठ से एक रास्ता चमोली होता हुआ बद्रीनाथजी जाता है। पुराने समय में पैदल यात्रा में यही रास्ता काम आता था पर अभी यह वीरान है। हम गुप्तकाशी, नालाचट्टी, फाटाचट्टी, रामपुर, सीतापुर आदि गांवों को पार करते हुये ग्यारह बजे गौरीकुंड उतरे। सामने दिख रहे होटल में सामान रख पकौड़ी का आर्डर दिया। प्रेमजी भाई साहब स्वयं मसाले मिला पकौड़ी बनाने लगे। आधा किलो बारां स्टाइल की पकौड़ी तथा तीन चाय का भुगतान कर हमने क्लॉकरुम ढूंढा। आवश्यक सामान बैग में निकाले तथा तीन सूटकेस वहां छोड़े। गौरीकुंड पहुंच गर्म पानी में स्नान किया। यहां छाया नहीं है इसलिये हमें बरसात में हमारे बैग भीगने से बचाने में विशेष मशक्कत करनी पड़ी। हमने स्नान के तुरंत बाद केदारनाथजी के लिये पैदल चढ़ाई शुरु कर दी। दो किमी बाद आराम चट्टी से पारीक साहब ने हमारी अनिच्छा के बावजूद तीन घोड़े कर लिये। पैदल यात्रा का संकल्प चकनाचूर हो गया। आराम चट्टी के आगे बरसात

तेज हो गई। इस रास्ते चार किमी पर जुगल चट्टी तथा सात किमी पर रामबाड़ा है। रामबाड़ा में इंसान तथा जानवर सभी आराम करते हैं तथा पेटपूजा होती है। इस पूरे रास्ते में चढ़ाई है। गौरीकुंड 1981 मीटर ऊंचाई पर है जबकि केदारनाथ 3600 मीटर। तेरह किमी रास्ते में 1600 मीटर चढ़ाई है। तेज बरसात में मुझे पारीक साहब का घोड़े करने का निर्णय उचित लगने लगा। घोड़े की काठी हमें सालने लगी है। हमारे कपड़े जूते भीग चुके हैं। चेहरे और हाथों पर शीतल हवा चुभने लगी है। हम गरुढ़ चट्टी पर भी नहीं रुके। सात किमी लगातार चल केदारनाथ के घोड़ा स्टैण्ड पर उतरे। हमारे पैर, कुल्हे तथा कमर दर्द कर रहे हैं। सामने ही दिख रहे एक होटल में घुस गये। हाथ–पैर पौंछे तथा गर्मा गर्म चाय पी। इसी अवधि में यहां हमें कई पंडों के सवालों के जवाब देने पड़े। कौन गांव? कौन जात? कौन मौहल्ला? कितने यात्री? आखिर सत्यनारायणजी राजगुरु हमारे पंडा निकले और उनके प्रतिनिधी ने हमें उनकी धर्मशाला में पहुंचने का न्यौता दे दिया। पारीक साहब पंडों से दूर रहना चाहते हैं और हम दोनों एक बार पंडों को भी आजमाना चाहते हैं। कुछ बहस के बाद, हम पूछते हुये उनकी धर्मशाला में पहुंच गये। चढ़ाई पर पैदल चलना, तेज बरसात और सबसे बढ़कर पूरे रास्ते पंडों के सवालों के जवाब; हम परेशान से हो गये। हम पांच बजे घोड़ों से उतरे थे तथा धर्मशाला पहुंचने में हमें छः बज गये।

आशा के विपरीत धर्मशाला में होटल जैसी ही उत्तम व्यवस्था मिली। पहली मंजिल पर हमें एक चार पलंगों वाला अटैच लैटबाथ कमरा दे दिया गया। कमरे में बहुत बढिया वाशबेसिन तथा कांच लगा है। पलंगों पर बढ़िया गदेले, धुली हुई चादरें तथा अच्छी रजाइयां हैं। पूरे कमरे में तथा कमरे के बाहर बरामदे में भी मैट बिछी हुई है। हम प्रसन्नतापूर्वक हाथमुंह धो रजाइयों में जा दुबके। सात बजे करीब पंडाजी का कर्मचारी हमारे लिये गर्मागर्म खाना तीन थालियों में परोस कर लाया। दाल, चावल, रोटी, सब्जी। जब तक हमने खाना खाया वह हमारे पास बैठा पंखा झलकर मक्खियां उड़ाता रहा। हमें हॉट केस में से रोटियां व सब्जियां भी गर्म गर्म परोसी गई। इतना अच्छा स्वागत! हम अभिभूत हो गये। भोजन के बाद हम भगवान केदारनाथजी की शयन आरती के दर्शन करने गये। भगवान का विशेष श्रृंगार हो चुका था। हमारे जाने के बाद भीड़ बढ़ती गई। कुछ लोगों को अंदर भी बिठाया गया शायद कोई विशेष व्यवस्था हो। यहां एक भक्त ने अद्भुत तांडव नृत्य किया। नृत्य करते–करते भक्त चक्कर खाकर जमीन पर लुढ़क गया, जिसे उसके साथियों ने संभाला। उसके हाथ पांव वैसे ही कांप रहे थे जैसे देवी देवताओं के भाव शरीर में आने पर कांपते हैं। हम आरती ले, परिक्रमा कर, धर्मशाला आ सो गये।

तारीख 12.8.1996 सोमवार

मैं प्रातः पांच बजे उठा तब तक पारीक साहब भगवान केदारनाथ के जलाभिषेक झांकी के दर्शन करके आ चुके थे। हम मंदाकिनी गंगा स्नान हेतु नहीं गये। पंडाजी ने सलाह दी कि नलों में भी मंदाकिनी का ही पानी आता है। फिर मन चंगा तो कठौती में गंगा। यहां हमारे लिये गर्म पानी की व्यवस्था भी थी पर इतनी तो हमारी श्रद्धा है ही। बाहर मौसम सुहावना है। खिड़की में से बर्फ से लदे गगनचुंबी पर्वतों के दर्शन हो रहे हैं। रात तो धुंध के कारण कुछ नहीं दिखाई दिया था। हम छः बजे धर्मशाला से निकले। पहले हम मंदाकिनी घाट पर गये। नहायें नहीं तो आचमन तो कर ही लें। वहां महिलायें स्नान कर रही थी। हम संकोचवश घाट पर नहीं गये और हमारा आचमन भी नहीं हो पाया। हम मंदिर गये तो दर्शन बंद हो चुके थे। यहां हमने मंदिर के सामने खड़े रहकर बाजार के फोटोग्राफर से फोटो खिंचवाये। बाद में हमने शंकराचार्य की समाधि और शंकराचार्य दंड के दर्शन किये। पास ही मंदाकिनी बह रही है। वहां जाने लगे तो इंसानों द्वारा की गई भारी गंदगी ने हमारा रास्ता रोक लिया। यहां मंदाकिनी की तीन धारायें पर्वत से निकलकर आती दिखाई देती है। यहां से पर्वत पर जाने की पगडंडी भी दिखाई दे रही है। ऊपर वसुकुंड देखने लायक जगह है जहां बम–बम बोलते ही कुंड में से बुलबुले निकलते हैं। पूर्वी ओर भैरवनाथ मंदिर है तथा पश्चिमी ओर आधुनिक बिजलीघर बनाया गया है। हमारे पैरों में चलने की श्रद्धा नहीं है। सभी बीमार से हो रहे हैं। आज सुबह मुझे भी अजीर्ण हो गया। दवाइयां ली थी। हम सात बजे धर्मशाला वापस आ गये।

अभिषेक कराने जाने के लिये पंडित जी से सात बजे की बात हुई थी। खूब इंतजार करवाया और सवा आठ बजे पंडितजी आये। हमने उनकी नीचे लगी दुकान से पूजा की तीन थालियां ली। पंडितजी के निर्देशन में मंदिर जा पहले भगवान गणपति की पूजा की और भगवान केदारनाथ के अभिषेक

कराने वाले भक्तों की लाइन में लग गये। कुछ देर बाद हमने पूजा की। यहां भी अन्य धर्मस्थलों की भांति कई पंडाओं ने विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियां रख अपनी दुकानें जमा रखी है। हम सबको नमन करते वापस धर्मशाला आ गये। प्रसाद थैलियों में रख पूजा का हिसाब किया। हमने पंडाजी से विदा मांगी। वे अपने पोथी पन्ना लाये। बहुत खोजबीन के बाद 1974 संवत् 2031 की पिताजी के साथ की गई यात्रा का लेखाजोखा मिला। हमने प्रत्येक ने सहर्ष पंडेजी को 51–51 रु. दक्षिणा दी। हमें उम्मीद थी कि पंडेजी और कुछ मांगेंगे तो हम और दे देंगे पर उन्होंने एक शब्द भी इस बारे में नहीं कहा। वे पूर्ण संतुष्ट लगे और हम तो उनकी सेवाओं पर लट्टू हो ही गये हैं। पंडेजी का आशीष ले हमने साढ़े नौ बजे धर्मशाला छोड़ दी। अब हमें पैदल ही चलना है। बाजार में एक दुकान पर दूध का कढ़ाह दिखाई दिया। हमने वहां दूध बिस्किट लिये। दूध बहुत अच्छा था। पारीक साहब ने बाजार से एक ब्रह्म कमल तथा कुछ तस्वीरें खरीदी। दस बजे हमने मंदाकिनी घाट पर आचमन किया तथा शरीर पर गंगा का पवित्र जल छिड़का और केदारनाथजी से विदा ली। 2 किमी चलने के बाद बरसात शुरु हो गई जो ठेठ गौरीकुंड तक चली। रामबाड़ा में बरसात ज्यादा तेज हो गई तो हम एक अस्थाई ढाबे में रुक गये। यहां लकड़ी के चूल्हे पर रोटी बन रही थी। तीन–तीन रोटियां खाई। खाना बहुत अच्छा लगा। यहां चूल्हे के पास बैठ तापते रहे। फूंक मारकर चूल्हा जलाने में तथा धुयें से आंखें जलाने में भी हमें मजा आता रहा। कुछ देर बाद हमें चलना ही पड़ा। बरसात तो रुकने से रही। जंगल चट्टी तक मैं बहुत तेज चला उसके बाद मुझे थकान और शायद बुखार आ गया। हम ढाई बजे गौरीकुंड पहुंचे। होटल देवलोक में कमरा नम्बर 4 किराये से लिया। हमने लॉकरुम से कुली की मदद से सामान लाकर कमरे में रखा। गंदगी के कारण बाद में हम निचली मंजिल पर कमरा नम्बर सात में आ गये। डेढ घंटा आराम करने के बाद हम गौरीकुंड स्नान हेतु गये। अभी गौरीकुंड में पानी बहुत गंदा हो गया है तथा कुंड सफाई हेतु खाली किया जा रहा है। बरसात की फुहारें भी आ रही है। हमस सीधे गौमुखी में ही नहाये जिसका पानी बहुत गर्म आता है। स्नान से थकान में बहुत राहत मिली। होटल आ, तैयार हो, हम बाजार आ गये। हमें मेरी घड़ी ठीक करानी है तथा कपड़े धुलवाने हैं। दोनों काम यहां नहीं हो सके। गढ़वाल मंडल के बस स्टॉप पर कल सुबह जाने वाली बसों की जानकारी ली। अभी रास्ता पूरी तरह नहीं खुला है। सुबह जैसा होगा देखेंगे। पारीक साहब हमें बसस्टाप पर छोड़ कटिंग कराने चले गये। बहुत देर इंतजार के बाद हम होटल पहुंचे तो वहां पारीक साहब हमारा इंतजार कर रहे थे। आपसी समझ में फर्क आने से हमारा आराम करने का समय खराब हुआ। मुझे सर्दी लग रही है तथा मेरा पूरा बदन टूट रहा है। मैं बीमार हो चुका हूं। मैने बुखार की दवा ली और सो गया। पारीक साहब व प्रेमजी बाजार से खाना खाकर आये और मेरे लिये चार रोटी दाल व लौकी की सब्जी लाये। खराब तेल की बनी सब्जी होने के बावजूद मैं सब खा गया। मुझे तेज भूख लगी थी। मैं बहुत देर तक अंदरूनी कपड़ों में ही रजाई के अंदर सोता रहा जिससे मेरी सर्दी नहीं रुक पाई। इस बात पर मुझे बुजुर्गो से डांट सुननी पड़ी। बाद में मैंने पेंट शर्ट व जरसी पहनी तथा शाल ओढ़ा तो मुझे बहुत आराम मिला। रात साढ़े नौ बजे बाद गहरी नींद सोये।

तारीख 13.8.1996 मंगलवार

प्रातः पांच बजे से पहले ही हम स्नान हेतु गौरीकुंड पहुंच गये। आश्चर्य इतनी जल्दी भी यहां इतनी भीड़। रात को कुंड साफ कर दिया गया था। सुबह कुंड में करीब नौ इंची ज्यादा गर्म पानी था। बदन की अच्छी सिकाई हो गई। मेरे पास सूखे कपड़े नहीं है। सारे कपड़े गंदे हो चुके हैं। सर्दी और बरसात, कपड़े न धुल पा रहे और न ही सूख पा रहे। नहा धो तैयार हो हम होटल खाली कर छः बजे से पहले बस स्टैण्ड पर आ गये। ऋषिकेश जाने वाली बस नम्बर यू 57–3528 में हमने रुद्रप्रयाग तक के तीन टिकट लिये जिनका सीट नम्बर 23 24 25 मिला। ज्यादा सवारियों के लालच में बस विलंब से छः की जगह पौने सात बजे चली, वह भी ठसाठस भरकर। डेढ़ घंटे में गुप्तकाशी आ गया। यहां चाय नाश्ता हुआ। आज मौसम साफ है। हमें घाटा चट्टी से गुप्तकाशी के रास्ते निरंतर बर्फ से लदी हिमालय की चौखंभा नामक पर्वत चोटी के नयनाभिराम दर्शन होते रहे। पूरी बस की सवारियां उत्तर दिशा में चांदी से पहाड़ों पर सूर्य रश्मियों से बन रहे अद्भुत दृश्य देख आनंदित होती रही। स्थानीय निवासी ने जानकारी दी कि यही चार खंभा पर्वत श्रृंखला गंगौत्री, यमुनौत्री व बद्रीनाथ जी से भी दिखाई देती है। चारों तीर्थ इसके आसपास हैं। यहां बस स्टैण्ड पर खड़े हो घंटाभर तक हिमालय की शोभा निहारते रहे। ऐसा

लगता रहा कि मात्र दो तीन किमी चल कर ही हम बर्फ पर पहुंच जायेंगे। बस कंडक्टर सवा घंटे बाद लौटा। सभी यात्री उस पर बिगड़े। उसने बताया कि नीचे रोड खराब है। जंगल में खड़े रहने से अच्छा है यहां खड़े रह कर इंतजार किया जाये। हमने कहा पहले ही बता कर जाता तो हम यहां काशी विश्वनाथ मंदिर तथा गुप्तगंगा कुंड के दर्शन तो कर आते। सामने से ही तो रास्ता जा रहा है, मात्र आधा किमी दूर कोई 100 मीटर ऊंचाई पर।

बस आगे बढ़ी और छः किमी बाद उसी स्थान पर खड़ी हो गई, जहां हमने जाते समय रात गुजारी थी। लंबा व्यवधान जान हमने झाड़ियों पर कपड़े सुखा दिये। मैं कीचड़ भरी पहाड़ी पर चढ़ गया। मैंने बरसाती सैंडल पहन रखे थे। कीचड़ के पांव धोये तो मेरे दोनों पैरों में छोटी–छोटी दस बीस काली जोंके चिपकी दिखाई दी। एक जोंक खीच कर निकाली तो हल्का सा खून आ गया। हमारे साथियों में एकाएक चिंता दौड़ गई। मुझे डांटने का अवसर भी साथियों को मिल गया। बहुत सारे यात्रियों ने बहुत सी सलाहें भी दी। एक अच्छी सलाह यह मिली कि नमक लगा के निकालो। यहां नमक उपलब्ध हो गया और थोड़ी ही देर में मैने अपने पांवों को जौंकों से मुक्त करा लिया। मुझे यह घटना मामूली लगी पर सहयात्रियों ने इस पर बहुत प्रतिक्रिया व्यक्त की। यहां ज्यादा नहीं रुकना पड़ा। कीचड़ भरे रास्ते से एक–एक गाड़ी निकाल दी गई। अगस्तमुनि गांव के डेढ किमी बाद पुनः काफिला रुक गया। पारीक साहब तुरंत बस से उतर कर स्थिति का जायजा लेने गये। बीस मिनट बाद वापस आये और आदेश दिया,

'सामान उतारो और मेरे साथ चलो।'

तब तक हमें भी पता चल गया था कि आगे पहाड़ सड़क पर आ गिरा है। हम सामान लेकर आगे बढ़े। रास्ते में बस का कंडक्टर मिल गया। सारी सवारियां उससे किराया वापस ले रही थी। हमें भी उसने 10 किमी के पंद्रह रुपये वापस कर दिये। आध किमी करीब पैदल चल खराब रास्ता पार कर हमने उस ओर खड़ी एक जीप में अपना सामान डाला। उसने चौबीस रुपये किराया ले हमें दोपहर ग्यारह बजे रुद्रप्रयाग के बस स्टैण्ड पर उतार दिया।

रुद्रप्रयाग एक महत्वपूर्ण स्थान है, यहां मंदाकिनी तथा अलकनंदा का संगम होता है। पैदल यात्रा में इस संगम में स्नान करने का भी बहुत महात्म्य था। ऋषिकेश से बद्रीनाथ व केदारनाथ जाने वाले मार्ग यहीं से अलग होते हैं। हम आज ही बद्रीनाथ पहुंच सकते हैं पर हमने थकान व बीमारी के कारण यहां आराम करने का निश्चय किया। यहां बस स्टैण्ड पर हमें ठीक होटल नहीं मिल सका। रुद्रप्रयाग तीन भागों में बंटा है। ऊपरी, मध्य और निचला। रहने के स्थान ऊपरी और निचले हिस्से में है। हम पहले कह देते तो जीप वाला हमें सही जगह उतार देता। यहां काली कमलीवालों की धर्मशाला भी है। कुछ चलने के बाद हमें बद्रीनाथ रोड पर होटल रिवर व्यू में पहली मंजिल पर तीन बैड का कमरा, नम्बर एक – सौ रुपये में मिल गया। दस रुपये कुली को दे सामान कमरे में रखवाया। पहले हमने इसी होटल के भोजनालय में जाकर सस्ता और अच्छा भोजन ग्रहण किया। फिर होटल के बॉथरुम का क्रमशः इस्तेमाल हुआ। सारे कपड़े धोये तथा साबुन से मलमल कर नहा दो दिन का मैल निकाला। बीच में पारीक साहब व प्रेमजी ने गहरी नींद निकाल ली। हम तीन यात्री अलग–अलग आदतों वाले हैं। हमारे में मैं पारीकजी व प्रेमजी में वजन, खाने, सोने व शौच जाने का अनुपात दो तीन चार का है। ज्यादा भोजन ज्यादा निंद्रा और ज्यादा उत्सर्जन। मुझे विज्ञान का फार्मूला लग रहा है। इन सबके बावजूद श्रम करने की मेरी क्षमता उन दोनों से ज्यादा है। उम्र का प्रभाव भी है ही। पारीक सा. मेरे से दस साल और प्रेमजी बीस साल बड़े हैं। पारीक साहब सहयात्रियों से पहचान नहीं बढ़ाते। मैं कुछ पहल करता हूं इसके विपरीत प्रेमजी तुरंत ही घुल–मिल जाते हैं।

हमारे होटल का नाम 'रिवर व्यू' सार्थक है। कमरे की बालकनी में बैठ कर तेजी से बहती अलकनंदा को देखना बहुत अच्छा लगता है। पूर्व की ओर बद्रीनाथ रोड, ऊपर अलकनंदा के सहारे जाता हुआ तथा नीचे जाता हुआ केदारनाथ रोड और अलकनंदा पर बना विशाल पुल तथा उससे अलग होकर जाता पोखरी रोड और रुद्रप्रयाग शहर का निचला भाग। सामने उत्तर की ओर कुछ निर्माणों को अपनी गोद में समेटे एक विशाल पहाड़ी, जिसके आड़ में छुपा है चौखंभा पर्वत और केदारनाथ। यहां से हमें बहुत विहंगम दृश्य दिखाई देता है। पश्चिमी ओर शहर की बसावट ज्यादा है और वहीं है अलकनंदा और मंदाकिनी का पावन संगम। हमने तीन बजे शहर घूमने का निश्चय किया और हम संगम की ओर बढ़े।

अलकनंदा पर बना विशाल पुल पार किया। यह पुल बिना बीच में खंभा लगाये लोहे की गार्डर से बनाया गया है। वाहन निकलने पर पुल थरथराता है। हम गौरीकुंड रोड पर ही बढ़े। यहां एक गुफा में हनुमानजी का मंदिर है। हमने सोचा यहां आते समय दर्शन करेंगे। पास ही काली कमलीवालों की बहुत अच्छी धर्मशाला है। धर्मशाला के पास से एक संकरा रास्ता पकड़ हम संगम पहुंचे। रास्ते में भगवान रुद्र का प्राचीन मंदिर है। संगम में पांच छः फुट मात्र का स्नान घाट बना हुआ है। हमें संगम में आचमन करने के लिये रुद्र मंदिर से सौ एक सीढ़ियां नीचे जाना पड़ेगा। मैं धड़ाधड़ नीचे उतर गया। मुझे लगा था यदि साथियों से पूछूंगा तो टालमटोल करेंगें। सीढ़ियां ठीक उस स्थान तक उतर रही है जहां स्नान करने वाले को अलकनंदा एवं मंदाकिनी दोनों नदियों का जल प्राप्त हो सके। सीढियां गंगा में नीचे तक जा रही है। कम या ज्यादा पानी होने पर भी स्नान में कोई दिक्कत न आये, इस हिसाब से निर्माण है यहां। मैने पानी वाली पहली सीढी पर पैर रखा था कि लहरों ने मेरी पेंट भिगो दी। बहाव बहुत तेज है और उतरना बहुत जोखिम भरा। नहाना हमारा उद्देश्य था भी नहीं। आचमन कर जल से शरीर पर छींटे मार लिये। मेरे दोनों साथी भी तब तक पहुंच गये थे। हमने आधा घंटा बैठ गंगा दर्शन का आनंद लिया। फोटो भी खींचे। सीढ़ियों पर बीच में गंगा मंदिर है जहां हमने दर्शन किये। इसी दौरान वहां तीन बालिकायें मंदाकिनी नदी की ओर से प्रकट हुई। वे जाने लगी तो हमें लगा हमारे कारण वे बिना अपना काम किये जा रही है। हमने उनसे बात की। वे बोली कि यह तो उनका रास्ता है। यहां से पैदल गंगा पार करने का छोटा पुल है। यहां कई रास्ते है जिनसे स्थानीय निवासी गंगा तक पहुंचते हैं तथा पानी भरकर ले जाते हैं। एक छोटी बच्ची आरती ने हमारे साथ फोटो खिंचवाने की इच्छा प्रकट की। मैंने संगम को देखते हुये पारीक सा. व प्रेमजी के साथ उसका फोटो लिया। पारीक साहब ने उसे चॉकलेट खाने के लिये दो रुपये भी दिये। रुद्रमंदिर दर्शन करते हुये वापस लौटे। हमने वापसी में भी हनुमानजी के मंदिर में दर्शन नहीं किये। अब हमें ऊपरी रुद्रप्रयाग घूमना है। हम उसी रास्ते से लौट, हमारे होटल के सामने से होते हुये बस स्टैण्ड को पार कर, श्रीनगर रोड पर आ गये। शहर के लगभग अंत में कालीकमली वाले की विशाल धर्मशाला तथा गढ़वाल विकास मंडल का ट्यूरिस्ट बंगला एवं गेस्टहाउस है। गढ़वाल विकास मंडल ने संगम देखने के लिये एक प्लेटफार्म बना रखा हैं। हमने वहां खड़े हो संगम, गंगा स्नान घाट तथा गंगा मंदिर को बीस–पच्चीस मिनट तक निहारा। इसके बाद रास्ते में कुछ आवश्यक सामान खरीदते हुये वापस अपने लॉज में लौटे। हमारे सूखे कपड़े प्रेसवाला न मिलने के कारण वैसे ही पैक किये। रात साढ़े सात तक ताश खेले व बाद में भोजन करने गये। यहां फोन मिलने में बड़ी दिक्कत हो रही है पर भगवान की कृपा से मेरी घर पर एक बार फोन लगाते ही बात हो गई। हम रात नौ बजे बाद सोये।

रात स्वप्न में मैं दुनिया के सबसे बड़े हनुमानजी के मंदिर में दर्शन करने गया। प्रतिमा गहरी बावड़ी जैसी जगह में स्थापित थी, जहां सीढ़ियां नीचे उतरती है। मंदिर में घुसने का मुख्य दरवाजा हनुमानजी की नाभी के बराबर था, बाकी मूर्ति जमीन से ऊपर थी। मूर्ति के ऊपर भी विशाल छत डालकर हॉल जैसा मंदिर बनाया गया था। मूर्ति भक्तों के सिर पर हाथ फेरती है तथा प्रसाद देती है। जैसे मूर्ति नहीं साक्षात् बजरंगबली ही वहां खड़े हों। मैंने बजरंगबली के चरणों में लेट कर दंडवत प्रणाम् किया तथा मैं भक्ति में अधीर हो गया। हनुमानजी ने मुझे उठाया तथा आशीर्वाद दिया।

इसी के साथ मेरी नींद टूट गई।

मुझे लगता है यहां के हनुमानजी के मंदिर पर दर्शन करने न जाने के कारण भगवान मेरे स्वप्न में आये हों। स्वप्न में आये मंदिर का नक्शा यहां स्थित मंदिर जैसा ही है।

तारीख 14.8.1996 बुधवार

हमारा दिन प्रातः चार बजे से शुरु हुआ। पांच बजे तो हम नहा–धो बस स्टैण्ड ही आ गये। सामान लाने में पसीना आ गया क्योंकि इतनी जल्दी कुली नहीं मिला। थोड़ी देर बाद आई डाक गाड़ी बस नम्बर यूटीएस 1497 में हमने आगे की सीटों पर कब्जा कर लिया। यहां से गोविंदघाट तक का 52 रु. प्रति टिकट किराया लगा। हर गांव में डाक के थैलों का आदान–प्रदान चलता रहा। गोचर, कर्णप्रयाग व नंदप्रयाग होते हुये साढ़े आठ बजे चमोली पहुंचे। चमोली जिले का मुख्यालय यहां से दस किमी दूर पहाड़ी पर बसा सुंदर सा नगर गोपेश्वर है। जहां से सीधा रास्ता ऊखीमठ होता हुआ केदारनाथ जाता

है। यह पुराना व संकरा रोड है। पूर्व में 1962 व 1974 की यात्राओं में हमारा काफिला इसी रोड से गुजरा था। ऋषिकेश से बद्रीनाथ हाइवे है जो सीमा सड़क संगठन के अधीन है। यह सड़क राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये भी महत्वपूर्ण है, अतः इसके बंद होने के अवसर कम रहते हैं। चमोली से हम सवा नौ बजे चले। पीपलमंडी तथा हेलंग होते हुये साढ़े ग्यारह बजे जोशीमठ पहुंचे। पीपलमंडी 1259 मीटर एमएसएल पर है जबकि हेलंग बहुत ऊंचाई पर है। जोशीमठ तक वापस उतार आता है। जोशीमठ 1200 से 2500 मीटर ऊंचाई तक बसा हुआ है। जोशीमठ और औली विश्व में बर्फ के खेलों के लिये प्रसिद्ध हैं तथा विश्व पर्यटन मानचित्र पर हैं। यहां विश्व का सबसे ऊंचा रज्जू मार्ग (रोपवे) बना हुआ है।

बस पहले जोशीमठ के डाकघर गई। वहां डाक के आदान–प्रदान के बाद बस बाजार में खड़ी हो गई। यहां से बस साढ़े बारह बजे छूटेगी। सभी यात्रियों को यहां भोजन करना है। यहां हमें रोटी न मिल पाने का मलाल रहा। चावल व समोसा खाकर काम चलाया। हम जल्दी ही बस में आ बैठे पर बस पौन बजे छूटी। बहुत नीचे उतर अलकनंदा पर बना बिना खंभोंवाला आरसीसी का पुल पार किया। विष्णुप्रयाग होते हुये हम दो बजे गोविंदघाट उतरे। हमने मात्र दस रुपये में कुली कर आध किमी दूर गुरुद्वारा के पास सामान रखवाया। पारीक साहब वर्ष 1972 में हेमकुंड यात्रा कर चुके हैं अतः हमने उनके निर्देशानुसार ऊपर की यात्रा पर जाने के लिये न्यूनतम सामान बैगों में जमा, तीन सूटकेस यहां के पोटलीघर (क्लॉकरुम) में जमा करवा दिये। इसके बाद हम जूते उतार, सिर ढक, गुरुद्वारे में घुसे। वहां लंगर चल रहा है। पारीक साहब की कुछ खाने की अच्छा नहीं है। वे लंगर के बाहर हमारे बैग लेकर बैठ गये। प्रेमजी व मै दोनों जिंदगी में पहली बार लंगर में खाना खाने आये हैं। हमने वहां की व्यवस्थायें देखी। एक कोने पर सिख कार सेवक थाली आदि बर्तन साफ कर रहे हैं। हमने मंजे हुये थाली गिलास उठाये और वहां भोजन के लिये पंक्तिबद्ध बिछी दरी पर बैठ गये। तुरंत ही पानी, खीर, रोटी तथा छोले की सब्जी हमें परोस दी गई। बहुत ही अच्छा खाना था। खाने के बाद थाली, गिलास हाथ में ले बाहर आये तो तुरंत ही साफ करने वालों ने उन्हें हमारे हाथ से ले लिया। वहां लगे नल पर हाथ धो, पानी पी, पारीक साहब से आ मिले। यहां के सेवाभाव व व्यवस्थाओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया। सब सिक्खों के बीच मात्र हम हिन्दु, पर कहीं टोकाटाकी या पूछताछ नहीं। हमने बाहर आ दान पेटी में कुछ राशि डाली और दोपहर पौने तीन बजे घाघरिया के लिये चढ़ाई शुरु कर दी।

हमारे पास समय कम है, टांगों में ज्यादा ताकत नहीं है और रात भी अंधेरी है। हमें यह दुःसाहस नहीं करना चाहिये। मैंने इन्हीं बातों को ध्यान में रख गोविंदघाट में घोड़े करने का सुझाव रखा पर पारीक साहब ने नकार दिया। घोड़े सस्ते ही मिल रहे थे, मात्र एक सौ पचास रुपये में। पारीक साहब ने कहा था, ज्यादा चढ़ाई नहीं है पर पूरे रास्ते चढ़ाई ही चढ़ाई आई। हम बहुत तेजी से चले। चार किमी बाद पशुपालकों का प्राचीन गांव फुलना आया। यहां से हरी–भरी भ्युंडार घाटी शुरु होती है। पौने छह बजे, नौ किमी चल, भ्यूंडार गांव पहुंचे। भ्यूंडार घाटी अपनी खूबसूरती और हरियाली के लिये पूरे विश्व में प्रसिद्ध है पर हमारे पास उसे देखने का समय नहीं है। अभी यहां से साढ़े चार किमी और चलना है वह भी तीखी चढ़ाई पर। मैंने उजाले में सफर पूरा होना कठिन जान, यहां रात रुकने का विचार रखा तो पारीक साहब ने मुझे आंखें तरेर कर देखा। हमें साथ चलना ही पड़ा। पूरे रास्ते चाय नाश्ते की तो बहुत सारी दुकानें हैं पर रुकने लायक जगह नहीं दिखाई दी। गोविंदघाट से चलने के बाद घाघरिया अर्थात् गोविंदधाम पहुंचना ही हमारी मजबूरी हो गई। हमारे साथ और भी यात्री चल रहे हैं तथा आवागमन लगातार बना हुआ है। इस रास्ते में मैं बिना लकड़ी चल रहा हूं। मुझे लकड़ी का बोझ लगता है। लकड़ी न लेने के कारण मुझे कई लोगों ने टोक दिया और एक वापस आते हुये सरदारजी ने अपनी लाठी मुझे दे ही दी। मैंने यहां चुटुकला बनाया 'आप लाठी के सहारे चल रहे हो और मैं रब के सहारे।' ज्यों–ज्यों अंधेरा बढ़ता गया हमारी घबराहट बढ़ती गई। रास्ते में छः सरदारों का दल एक होटल पर चाय पी रहा था। उन्होंने हमें रोक चाय पीने व साथ चलने का आग्रह किया। तब तक अंधेरा होने लगा था। उनकी चाय प्रेमजी ने ग्रहण की और हम साथ हो लिये। इससे हमें भी बहुत हिम्मत मिली। वे पूर्व में भी कई बार आ चुके थे। अतः रास्ता ढूंढने की समस्या नहीं रही। इधर बारिश का मौसम भी बन गया। मुझे लगा प्रभु ने स्वयं हमारे लिये यह व्यवस्था की है। आखिर तीन किमी तो हम बहुत तेज बिना रुके चले। बारिश आ गई थी। पूरा रास्ता उबड़–खाबड़ पत्थर जमा कर बनाया गया है। अंधेरे में हमें टॉर्च का प्रयोग करना पड़ा। चलने में भी बहुत सावधानी रखनी पड़ी, गिरने पांव मुरड़ने का खतरा बहुत ज्यादा था। हम इतनी

सर्दी में भी पसीने से तरबतर हो गये। टांगें दर्द करने लगी पर हम विश्राम नहीं कर सकते थे। हमारा समूह 'सत् श्री अकाल' के नारे लगाता साढ़े सात बजे घाघरिया पहुंचा।

अब हमें रुकने की जगह ढूंढनी है। सरदारों का दल न जाने कहां चला गया है। मैं पारीक साहब के साथ गढ़वाल मंडल के रेस्टहाउस ट्यूरिस्ट लॉज में गया। 1972 मे पारीक साहब यहीं रुके थे। यहां हमें बड़े प्यार से कुर्सियों पर बिठाया गया। वहां कारीडोर में सौ रुपये तथा तंबू 60 रुपये प्रति व्यक्ति, कमरा चार सौ रुपये में उपलब्ध है। यात्री कम हैं सब खाली ही पड़े हैं। हम बाहर निकले तो हमें एक निजी होटल वाले ने तीन पलंगोंवाला अटैच कमरा 100 रुपये में देने का प्रस्ताव रखा। हमने कमरा देखा पर पसंद नहीं आया। तुरंत ही दूसरे होटल वाले ने हमें रोक लिया। उसने डेढ़ सौ रुपये का कमरा दिखाया। कमरा ठीक लगा। हमने उसे ही सौ रुपये में तय कर लिया और जाकर उसमें पसर गये। कुछ देर बाद इस कमरे की खामियां पता लगी। बाथरुम नाममात्र का है। शौचालय का किवाड़ पूरा नहीं लगता और बदबू कमरे में ही आती है। पानी पीने के लिये एक गंदा सा गिलास रखा है जिसे बाथरुम के नल से ही भर कर पानी पीना है। हमारे पास जग लोटा गिलास कुछ नहीं है। सामान कम लाने के चक्कर में हम कई आवश्यक चीजें नीचे गोविंदघाट के लंगर के क्लॉकरुम में ही छोड़ आये। रास्ते में भी हमें इससे कई समस्यायें आई थी। इस पूरे रास्ते में कहीं पीने का पानी या झरने नहीं हैं।

कमरे का किसी तरह ताला लगा हम एक ठीक से दिखने वाले होटल में खाना खाने गये। जाते ही हमने दाल व मिक्स सब्जी का आदेश दे दिया। बाद में वेटर एक पुस्तकाकार मीनू हमारी मेज पर रख गया। इतनी सी जगह इतना सा होटल और इतना बड़ा मीनू चार्ट, मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मीनू में अंडा देख मैंने होटल छोड़ने का निश्चय किया। पारीक साहब ने बैरे को समझाया कि यहां नॉनवेज भी बनता है इसलिये हम यहां खाना नही खा सकते। बाद में बैरे ने मैनेजर को भेजा। उसने बताया कि नॉनवेज का काउंटर अलग है और आपके आर्डर का सामान बन चुका है। मैने वहां बहुत बेमन से भोजन किया। पहाड़ों पर हर ओर होटलों में अंडा बनता ही बनता है। पहाड़ व ठंडे प्रदेश के लोगों में बीड़ी सिगरेट पीने की प्रवृत्ति भी ज्यादा ही देखने का मिलती है। खाना खाने के बाद हम हमारे होटल में पहुंचे। अंदर की चिटकनी भी बहुत मुश्किल से लग पाई। रात भर गहरी नींद सोये।

रात मुझे विचित्र स्वप्न आया। हमारे बारां के पुराने मकान का सा परिदृश्य था। हम एक अंधेरे कमरे में आठ दस मेहमान बैठे हैं। अचानक मैं चीख उठा, 'रीछ रीछ।' कमरे में रीछ बैठा था। सब औरतें बाहर निकल गई। मैंने कमरे में बैठे लोगों से, जिनमें हमारे अटरु वाले रिश्तेदार भी थे; रीछ को भगाने के लिये कहा। वे लोग 'हुर्र–हुर्र' कर रीछ को भगाने लगे और मै रीछ के आगे जा 'आव–आव, पुच–पुच' कर उसे बुलाने लगा। रीछ मेरे पीछे–पीछे चला आया और हम रीछ को कमरे के बाहर निकालने में सफल हो गये। कमरे के बाहर आते ही रीछ एक महिला के रूप में बदल गया और उस महिला ने बहुत ऊंचे बुर्ज से तालाब में कूद कर आत्महत्या कर ली। महिला की मृत्यु का समाचार सुन उसके पांच पुरुष रिश्तेदार भी तालाब में कूद आत्महत्या कर मर गये। महिला मर कर भूत बन गई और हमारे मकान में आने लगी। सारे परिजन उससे डरने लगे और मैं उसकी टोह रखने लगा ताकि भूतों पर खोज कर सकूं।

इसी स्वप्न के साथ भयभीत मुद्रा में प्रातः मेरी नींद खुली।

15 अगस्त 1996 गुरुवार स्वतंत्रता दिवस–सावन सुदी द्वितिया

हम प्रातः साढ़े छः बजे कमरा खाली कर अपना बैग उठा हेमकुंड की ओर बढ़ गये। एक होटल पर बहुत ही अच्छा दूध पीया। यहां रास्ता एकदम सीधी चढ़ाई वाला है। दो पहाड़ों के बीच यात्रियों की पंक्ति जाती हुई दिखाई दे रही है। यहां बहुत सारे घोड़े वाले भी हमारे पास आये पर हमने पैदल यात्रा करना ही तय कर रखा है। आध किमी बाद रास्ते में फूलों की घाटी का रास्ता दर्शाता हुआ बोर्ड दिखाई दिया। यहां हम कल जायेंगे। रास्ता लगातार घूम–घूम कर पहाड़ पर चढता रहा। किसी ने बताया कि पूरे रास्ते ऐसी ही चढ़ाई है। हमारे हाथ पैर फूलने लगे। दो घंटे लगातार भारी चढाई चढ़ पसीने से लथपथ हो हम एक स्थान पर रुके। वहां लगे मार्ग सूचक बोर्ड पर लिखा था घाघरिया दो किमी और हेमकुंड चार किमी। मतलब दो घंटे में अभी हम मात्र दो किमी ही आये हैं। हमारे हौसले पूर्णतः पस्त हो गये। चढ़ाई में प्रेमजी सबसे आगे, मैं बीच में तथा पारीक साहब बहुत पीछे चल रहे थे। कल की थकान

से आज पारीक साहब के पैर टूट रहे हैं। आखिर हमने घोड़े कर ही लिये। मात्र अस्सी रुपये प्रति घोड़ा। एकदम सीधी चढाई। ऊपर से घाघरिया दिखाई दे रहा है। हमें अब तक घोड़ो पर बैठने तथा ऊंचाई पर जाने के अभ्यस्त हो चुके हैं इसलिये हमें घोड़ों पर कोई घबराहट नहीं है और न ही इतना नीचे देखने पर झांई छूट रही है। एक निश्चित स्थान पर घोड़े वालों ने विश्राम ले खाना खाया तथा घोड़ों को भी दाना डाला। तभी अचानक मौसम बदला। धुंध व घने बादल छा गये और पूरी घाटी में अंधेरा सा हो गया। हमें बरसात की चिंता सताने लगी। हल्के छींटे आये भी पर हम साढ़े दस बजे सकुशल बिना भीगे हेमकुंड के घोड़ा स्टैण्ड पर उतर गये। हमारे से घोड़े वालों ने अस्सी रुपये प्रति घोड़ा तय किये थे पर यहां उतरने के बाद सौ रुपये घोड़ा ही देने पड़े। इस छः किमी के रास्ते में डेढ़ किमी ऊपर चढ़ना पड़ता है मतलब 25 प्रतिशत की चढ़ाई।

हेमकुंड मेरी कल्पना से बहुत ज्यादा ऊंचाई पर निकला। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 4700 मीटर है। यहां पहुंच मन को बहुत शांति मिली। पूरी घाटी बहुत सुन्दर फूलों से सजी है। आसपास कई ग्लेशियर दिखाई दे रहे हैं। रास्ते में भी एक ग्लेशियर को हम पार करके आये हैं। वहां बर्फ को काटकर रास्ता बनाया गया है। कई पैदल यात्री शार्टकट से भी आ रहे हैं। उन्हें बर्फ में से चलकर आना पड़ता है। यहां आखिरी रास्ते पर ऊंची–ऊंची सीढियां भी हैं। इन सबके मजे लेने के लिये पैरों में ताकत चाहिये। यहां संभवतः 4000 मीटर ऊंचाई के बाद ब्रह्म कमल पैदा होते हैं। हमें आसपास कई ब्रह्म कमल दिखाई दे रहे हैं। इतनी ऊंचाई पर बड़े बृक्ष पूर्णतः गायब हो गये हैं और ऊपर के पहाड़ों पर तो घास भी नहीं है। सब पहाड़ बिल्कुल नंगे या बर्फ युक्त ही दिखाई दे रहे हैं। मौसम खुला रहने पर हेमकुंड से उत्तर पूर्व में 7800 मीटर से ज्यादा ऊंची नंदा देवी पर्वत माला, ठीक उत्तर में गौरीशंकर तथा दक्षिण में नीलकंठ पर्वत श्रृंखला के दर्शन होते हैं। हमारी किस्मत में इन सबका दर्शन नहीं लिखा हुआ था। हमें बादल धुंध बरसात मिली तथा वहां पहुंचते ही नीचे उतरने की चिंता सताने लगी।

हम घोड़ों से उतर सीधे यहां के विशाल गुरुद्वारे में जा पहुंचे। अभी यहां चाय वितरित हो रही है। हमने भी गिलास ले पूरा गिलास भर चाय पी। यहां रसोई घर में दो विशाल भगौनों में चाय तैयार की जा रही है। यहां की सर्दी में हमें अभी चाय की सख्त जरूरत भी थी। पैदल चलने में हमें पसीना आ गया था तो हमने अपने गर्म कपड़े उतार दिये थे। घोड़ों पर बैठने के बाद गर्म कपड़े नहीं पहन पाये और सर्दी मरते रहे। चाय पीने के बाद चारों ओर पहाड़ों से घिरे विशाल हेमकुंड सरोवर में स्नान करने गये। बारिश से बचाव के लिये यहां टीनशेड बनाये गये हैं जहां हमने अपने सामान व कपड़े रखे। इस सरोवर में आसपास से सारे ग्लेशियर से पानी आ रहा है फिर भी यहां का पानी गौमुख जितना ठंडा नहीं है। गौमुख हेमकुंड से 700 मीटर कम ऊंचाई पर है इसके बावजूद हमें वहां ज्यादा ठंड महसूस हुई थी। गौमुख में कपड़े भी नहीं उतार पाया था पर मैने यहां सरोवर में ऊबड़–खाबड़ पत्थरों पर कोई घुटने–घुटने पानी में खड़े हो तीन चार डुबकियां लगाई। पूरा शरीर सुन्न सा होता देख मैंने बाहर आ झटपट कपड़े पहने। मेरे साथी भी डुबकी लगा कर नहाये। यहां आने वाले लगभग सारे यात्री सरोवर में डुबकी लगा कर नहाते हैं। मुझे यहां कोई महिला स्नान करती नहीं दिखाई दी। शायद उनके लिये कोई अलग घाट हो। इस सरोवर की साफ–सफाई एवं पवित्रता के मद्देनजर यहां साबुन लगाना, कुल्ला–मंजन करना, कपड़े धोना, जूते लेकर जाना तथा बहाव क्षैत्र के ऊपर किसी भी प्रकार से गंदगी करना सख्त मना है। इस सरोवर के पानी से निकली नदी गोविंदघाट में गंगा में मिलती है। सिक्खों की यहां बहुत आस्था है कई लोग नंगे पांव आते हैं। सभी यात्री यहां के पानी से केटलियां भरकर ले जाते हैं।

स्नान के बाद कंघी आदि कर हमने यहां घूम रहे फोटोग्राफर को अस्सी रुपये देकर फोटो खिंचवाये जिनकी तीन–तीन प्रतियां बारां मेरी दुकान के पते पर भेजने की बात कर रसीद ली। हमने अपने कैमरे में भी फोटो लिये। इसके बाद हम सामने स्थित लक्ष्मण मंदिर गये। मंदिर गुरुद्वारे की अपेक्षा बहुत छोटा है तथा यहां आने वाले सौ यात्रियों में से पांच यात्री भी यहां दर्शन करने नहीं आते हैं। हेमकुंड सिक्ख धर्म का बहुत बड़ा तीर्थ है तथा यहां की यात्रा पर आने वाले अधिकांश सिक्ख धर्मावली ही होते हैं। यहां गुरु गोविंदसिंहजी ने तपस्या की थी। यहां हिन्दु मंदिर होना आश्चर्य की ही बात है। मंदिर से लगवां चार कमरों की धर्मशाला भी बनी हुई है जिसमें हम रात रुक सकते हैं। एक पुजारीजी रात दिन यहीं रह मंदिर की सेवा पूजा कर रहे हैं। हमने दर्शन कर प्रसाद ग्रहण किया। ठाले बैठे पुजारी

जी से बहुत सारी जानकारियां प्राप्त की तथा मंदिर में दर्शनार्थ आये एक सरदारजी से अपने फोटो खिंचवाये। इसके बाद हम दर्शनार्थ गुरुद्वारे में पहुंचे। दरबार साहिब ऊपर की मंजिल पर बड़े हॉल में है, जहां कई यात्री लेटे व बैठे हैं। यहां यात्रियों को कंबल भी उपलब्ध करवाये गये हैं। हमने यहां मत्था टेका तथा परिक्रमा की तथा कड़ाह प्रसाद के बारे में पूछताछ की। सेवादार जी ने बताया कि तीसरी मंजिल पर जाकर तलाश करो। हमें लगा अभी प्रसाद तैयार नहीं हुआ होगा। अब तीसरी मंजिल पर कौन जाये? यहां गुरुद्वारे में बैठना हमें बहुत अच्छा लग रहा है पर बिगड़ते मौसम को देखते हुये हमने वापस लौटना ही तय किया। हम वापसी में छोटे सीढ़ियों वाले रास्ते से उतरे। पत्थर गिरने से कई स्थानों पर सीढ़ियां टूट गई है और हमें कई जगह खतरनाक रास्तों से भी गुजरना पड़ा। रास्ते में हमें बहुत तेज बरसात मिली। हमने अपने रैनसूट छाते निकाले। पारीक साहब वापसी में तेजी से चल हमारे से बहुत पहले तीन किमी नीचे उस होटल में आ बैठे जहां घोड़ेवाले खाना खाते हैं। हम दोनों धीरे–धीरे आये। पारीक सा वहां आलू परांठे खा रहे थे। मैंने भी एक परांठा लिया। अब यहां से नीचे तक रास्ते के दोनों ओर छोटे–छोटे होटल बने हुये हैं। पानी रुक गया तो हमने बरसाती कपड़े उतार दिये और हम तेजी से नीचे की ओर बढ़े। पारीक साहब आज हमारे से आगे भाग रहे हैं। हमने ग्लेशियर पर खड़े हो फोटो खींचे। फूलों की घाटी पर जाने वाले रास्ते के पास के ढाबे पर पारीक साहब बैठे मिले। उन्होंने कहा

'मैं आप लोगों का पौन घंटे से इंतजार कर रहा हूं। चलो आज ही घोड़ों से चल कर फूलों की घाटी घूम आते हैं।'

हमने जानकारी ली। सुखद तथ्य यह निकला कि फूलों की घाटी में घोड़ों के प्रवेश पर भी पाबंदी है। वहां पैदल ही जा सकते हैं। कंडी अवश्य कर सकते हैं। वह हम तीनों को ही पसंद नहीं है। आज हम थके हुये हैं तथा मौसम भी खराब है और वैसे भी हमने फूलों की घाटी के लिये कल का दिन तय कर रखा है। हम फूलों की घाटी को अच्छी तरह नजर भर देखना चाहते हैं। हमें कल वाला लॉज पसंद नहीं आया था। हम रास्ते में रुकने की जगह देखते रहे और एक ठीक से लॉज में सौ रुपये में कमरा लेकर रुक गये। ढाई बजे से चार बजे तक हमने आराम किया। घूमने जाने लायक न तो हमारा शरीर है और न ही मौसम।

आज का हमारा स्वतंत्रता दिवस घाघरिया में बीत रहा है। सुबह जब प्रधानमंत्री देवगौड़ाजी लालकिले पर तिरंगा फहरा रहे थे तब हम एक–एक कदम आगे बढ़ाने के लिये संघर्ष कर हेमकुंड की ओर बढ़ रहे थे। हमें यहां स्वतंत्रता दिवस का कोई माहौल नहीं मिला और सच तो यह हैं कि हमें दिन भर याद ही नहीं आया कि आज हमें क्या करना है? अब जब फुर्सत मिली तो स्वतंत्रता दिवस की याद आई। पारीक साहब 1972 में चार घंटे में आसानी से हेमकुंड चढ़ गये थे। उन्होंने इस यात्रा को आसान सा बता दिया था और हम दिग्भ्रमित हो गये। अमरनाथ, यमुनौत्री, गौमुख, केदारनाथ सभी जगह की यात्रायें हमने की है पर ऐसी कठिन चढ़ाई कहीं नहीं है। पारीक साहब ने हमारे से कहा था कि हेमकुंड असल में हिम कुंड है। वहां नहाना अत्यन्त दुष्कर है। उनके अनुसार दो सरदार आदमी को बांहों से पकड़ कर डुबकी लगवाते हैं और तुरंत निकाल कर कंबलों में लपेट देते हैं। अभी हमें ऐसी स्थिति नहीं मिली। पारीक साहब चौदह वर्ष पुरानी कई बातें भूल चुके है। उनकी गलत स्मृतियां हमारे निर्णयों को प्रभावित करती है। हमें गोविंदघाट से पानी व लोटा न लाने के कारण तकलीफ उठानी पड़ी। पारीक साहब ने कहा था कि यहां तो बहुत झरने आते हैं पर इक्कीस किमी में मात्र चार जगह पानी मिल पाया। नया आदमी यात्रा पर आता है तो पूछताछ कर लेता है पर पारीक साहब को अनुभवी मान हमने कोई जानकारी नहीं जुटाई। घाघरिया गांव को सिख समुदाय गोविंदधाम कहने लगा है पर स्थानीय वासियों में पुराना नाम ही प्रचलित है। हेमकुंड यात्रा 15 मई से 15 सितम्बर तक ही होती है। बाकी समय यहां बर्फ आ जाती है। यहां के निवासी फुलना गांव में अपने घरों को लौट आते हैं। गोविंदघाट से भ्युंडार तक कई स्थानों पर खेती भी होती है। घाघरिया में पहले गुरुद्वारा ही रुकने की एकमात्र जगह थी। बाद में गढ़वाल विकास मंडल का रेस्टहाउस बना और अब तो कई होटल बन गये हैं। अब यहां वीडियो हाल भी बन गये हैं तथा डिस्क टीवी भी लग चुके हैं। इस यात्रा से हजारों स्थानीय लोगों को रोजगार मिला हुआ है, पर प्रकृति को प्रदूषण के रूप इसका खामियाजा भी भुगतना पड़ रहा है।

शाम चार बजे बरसते पानी में होटल के बाहर आ पास ही दुकान पर प्रेमजी व मैने बहुत महंगी पकौड़ियां खाई। पारीक साहब को भूख नहीं थी और हमें दोनों को भूख लगी थी। मेरी इच्छा कुछ फल

खाने की थी। छाता ले पूरे बाजार में घूमा पर अच्छे फल नहीं मिले। हम वापस कमरे में आ लेटे। सायं सात बजे हम खाना खाने बिल्कुल पास ही स्थित बाम्बे भोजनालय में घुस गये। यहां का मीनू शुद्ध शाकाहारी का है। खाना महंगा भी है और हमारा स्वाद भी नहीं बन पाया। बारिश थम गई थीं। कुछ देर टहल रात साढ़े आठ बजे सो गये।

16 अगस्त, 1996 शुक्रवार

प्रातः छः बजे लॉज छोड़ा। एक होटल पर दूध बिस्किट का नाश्ता ले फूलों की घाटी के नाके पर आ गये। यहां नाके पर सरकार की ओर से एक व्यक्ति बिठाया गया है। भारतीयों के लिये प्रवेश शुल्क 15 रु. तथा विदेशियों के लिये 100 रु. प्रति व्यक्ति है। यह फूलों की घाटी 6 नवम्बर 1982 से राष्ट्रीय उद्यान घोषित की गई है। पारीक साहब यहां पहले जुलाई 1982 में आये थे तब यहां सरकारी हस्तक्षेप नहीं था। गेट पर पार्क में प्रवेश के नियम लिखे हैं। रात में सोना, आग जलाना, घोड़ा खच्चर या किसी भी पशु का प्रवेश, फिल्म बनाना, फूल पत्ती तोड़ना और शिकार करने की सख्त मनाही हैं। कैमरा ले जाने की फीस 50 रु. अलग से है। वीडियों कैमरा ले जाने के लिये दिल्ली से अनुमति लानी होती है। यहां विभिन्न मौसम में खिलने वाले 52 प्रकार के दुर्लभ फूलों की तालिका अंग्रेजी में लगी हुई है। हमारे लिये तो यह काला अक्षर भैंस बराबर है। प्रवेश हेतु हमें सात बजने का इंतजार करना पड़ा। हमारे साथ ही एक बंगाली युगल ने पार्क में प्रवेश लिया। वे किसी संस्था से संबद्ध सरकारी कर्मचारी हैं उन्हें उनकी संस्था ने कैमरा तथा अनुमति पत्र आदि देकर कोई अनुसंधान करने के लिये भेजा है। हम उद्यान में डेढ़ दो फुट की उतरती चढ़ती पगडंडी पर आगे बढ़ते रहे। हमारे आगे कोई यात्री या कर्मचारी नहीं है। पीछे आने वाले युगल फोटो खींचने तथा विभिन्न फूलों पत्तियों को तोड़–तोड़ कर डायरी में लगाने व लिखने के काम के कारण हमारे से बहुत पीछे रह गये थे। कोई आध किमी पीछे पांच छः सरदारों के दल ने भी घाटी में प्रवेश लिया है। कोई दो किमी बाद रास्ता बंद था। रात हुई बरसात से पहाड़ की मिट्टी ढह गई थी जिससे बीसेक फुट पगडंडी विलोपित हो गई। सामने पगडंडी दिख रही है पर वहां तक कैसे पहुंचे। कुछ हो गया तो हमारी आवाज सुनने वाला भी यहां कोई नहीं है। ऐसे में पारीक साहब की हिम्मत काम आई। उन्होंने अपनी छड़ी से खुरच कर मिट्टी में पैर रखने लायक जगह बनाई। वहां पैर रख दबा उन्होंने उस कदमचे को मजबूती प्रदान की। उस कदमचे पर पांव रख उन्होंने आगे कदम बनाया और इस तरह दस बारह कदम बना कर वे उस पार हो गये। हमारे से कहा आ जाओ पर हम हिम्मत नहीं कर पाये। नीचे सौ फुट गहरी खाई है जिसमें बर्फीली दरिया बह रही है। कदम चूकने का मतलब सिर्फ मौत है। पारीक साहब वापस आये और पहले मुझे और बाद में प्रेमजी को हाथ पकड़ कर पार ले गये। इस हिम्मत के लिये ही तो कायल हूं मैं पारीक साहब का।

यहां पगडंडी के दोनों ओर ऊंची–ऊंची विभिन्न फूलों की सघन झाड़ियां लगी हुई है जो कई जगह हमारे कद से भी ज्यादा ऊंची है। झाड़ियां रात की बरसात या ओस से गीली हो रही है। संकरी पगडंडी पर दोनों ओर से झाडियां हमें छू हमारे वस्त्रों को भिगो रही है। मैंने तो चलने से पूर्व ही बरसाती सूट पहन लिया था इसलिये मैं भीगने से बच गया। पारीक साहब व प्रेमजी के तो अधोवस्त्र तक भी भीग चुके हैं। हमें विभिन्न जगहों पर अलग–अलग खुशबू महसूस हुई पर हम खुशबू के स्त्रोत फूल या पत्तों को नहीं पहचान सके। कुछ फूल तोड़कर जेब में रखे ही, यहां हमें कौन देख रहा है? कोई तीन किमी आगे पहाड़ की दरड़ में हमारी पगडंडी बर्फ के नीचे दब गई है। कोई पच्चीस फीट बर्फ के ग्लेशियर पर चलना पड़ेगा। हमें यह रास्ता भी पारीक साहब की हिम्मत ने ही पार करवाया। आगे बरसात शुरु हो गई पर हम सघन वन में बढ़ते चले गये। रास्ते में हमें एक मजदूर सांवल लेकर आता दिखाई दिया। हमने उससे बात की। आगे किसी खराब रास्ते को ठीक करके आ रहा है और अब उस रास्ते को भी ठीक करेगा जिसे हम पार करके आ रहे है। बर्फ के ग्लेशियर पर भी मिट्टी डाल कर पगडंडी बनायेगा।

'क्या करूं बाबूजी? मैं अकेला ही तो हूं।'

उसने अपनी व्यथा बताई। हमने पेयजल तथा बरसात में रुकने के लिये शेड के बारे में पूछा तो उसने बहुत दूर बताया। बरसात आने से हमें चिंता होने लगी थी। पहाड़ पर कहीं भी और कभी भी रास्ता बंद हो सकता है। यहां हमारी मदद करने वाला कोई नहीं है। फिर भी हम बढ़े और नाके से लगभग पांच किमी आगे तक गये। इतना आगे आने पर बड़े वृक्ष समाप्त हो गये तथा केवल झाड़ियों के ही

जंगल रह गये। पारीक साहब ने जानकारी दी कि नाके से सात किमी पर किसी अंग्रेज की समाधि है जहां शेड बना हुआ है। हमने खूब देखा पर हमें कहीं कोई मार्गदर्शक बोर्ड या मानवीय निर्माण नजर नहीं आया। यहां ब्रह्मकमल तथा कस्तूरी मृग हैं, ऐसी जानकारी गेट पर लिखी है पर अभी तक हम एक काली चिड़िया के अलावा और कोई प्राणी नहीं देख पाये हैं। ब्रह्मकमल पैदा होने वाली ऊंचाई तक भी अभी हम नहीं पहुंच पाये। इस घाटी में हमें अभी दो किमी और आगे जाना चाहिये पर खराब मौसम, थकान और कहीं आराम करने का स्थान नहीं मिल पाने के कारण हम बहुत निराश हैं। झरने का पुल पार करने के बाद हमें एक शिला पर ब्रह्मगुफा लिखा हुआ नजर आया। हम उस गुफा में चले गये। गुफा क्या थी, एक बड़ी चट्टान के नीचे थोड़ी सी ढकी हुई जगह थी। फर्श धूल मिट्टी का गंदा सा। यहां हमारा बरसते पानी से बचाव हो रहा है। हमने उस गंदी सी जगह पर ही बैठकर हमारे बैग में से निकाल कर बिस्किट का नाश्ता किया। यह अनुपम स्वर्ग हमें लुभा रहा है पर क्या करें? पारीक साहब व प्रेमजी दोनों के सारे कपड़े भीग चुके हैं। दोनों के बीमार होने की संभावना है। मुझे भी सर्दी महसूस हो रही है। मौसम बहुत बिगड़ चुका है। धुंध से पचास फुट दूर भी नहीं दिखाई दे रहा है। आसपास की बर्फीली पर्वत श्रृंखलाये दिखाई देना बंद हो गई है। हमने कुछ देर विश्राम के बाद वापसी यात्रा शुरु कर दी।

कोई एक किमी वापस आने पर हमें बंगाली युगल तथा उनके साथ पांच और लोग अपना काम करते मिले। उनके पास बरसात से सुरक्षा के पूर्ण साधन थे तथा सभी युवा थे। सरदारों का दल हमें रास्ते में कहीं नहीं मिला, वे बहुत जल्द लौट गये होंगे। बर्फ के ग्लेशियर पर नीचे उतर पारीक साहब ने फोटो खिंचवाया। रास्ते में हमें दो सरदार और वापस लौटते मिले। वे बमुश्किल दो किमी ही पार्क में गये होंगें। एक चालीस किलो का कुली सौ किलो की महिला को कंडी में बिठा कर पार्क की सैर कराने लाया। टूटे रास्ते पर कंडी रोक दी और बोला अब रास्ता खराब है, आगे नहीं जायेगा। महिला ने हमारे से पूछा आगे क्या है? हमने कह दिया कि बस ऐसा ही जंगल है। कंडी वापस हो ली। कुली के तो हो गये दो सौ रुपये। हालांकि तब तक वह टूटा रास्ता ठीक किया जा चुका था। हम नियमित चलते दस बजे वापस नाके पर आ गये। नाराज प्रेमजी ने नाके पर तैनात कर्मचारी से शिकायत पुस्तिका मांगी। उसने घबराकर मना कर दिया।

'यहां ऐसी कोई पुस्तिका नहीं है।'

हमने पार्क की कमियां गिनाई। न छाया, न बेंच, न पीने का पानी, न चाय–नाश्ता, कहीं गाइड बोर्ड नहीं, और टूटे रास्ते। मैंने उस कंडीवाले की भी शिकायत की जिसने पैसे तो पूरे लिये और यात्री को रास्ते से ही लौटा लाया। हम आगे बढ़े। हेमकुंड से लौट रहे एक यात्री ने मेरे से फूलों की घाटी की जानकारी मांगी। मैंने प्राकृतिक सौन्दर्य की तारीफ की और फिर असुविधायें भी गिनवा दी। यहां पारीक साहब ने मेरी बात काट दी। तीसरे आदमी के सामने मुझे नीचा देखना पड़ा। मैने प्रतिवाद किया। प्रेमजी ने भी मेरा साथ दिया। पारीक साहब ने गलती मानी।

हमारी स्वप्निल फूलों की घाटी की यात्रा सम्पन्न हुई पर हमें पूर्ण संतुष्टि नहीं मिल पाई। सघन वन और फूलों का सौन्दर्य हमें कई जगह देखने को मिल ही जाता है। यहां की विशेष बात 'इतनी ऊंचाई पर 3700 मीटर से 4900 मीटर तक खिलने वाले इतनी तरह के फूल' हमारे वनस्पति विज्ञान की अज्ञानता के कारण हमारे लिये फिजूल है। यह घाटी भारत को प्रकृति का वरदान है। यह घाटी पूर्व से पश्चिम है और इस घाटी में दिन भर सूर्य की रोशनी आती है। घाटी का सौन्दर्य खुले मौसम में ऊंचे–ऊंचे पहाड़ों से चमकते बर्फ से परावर्तित होकर आती, आंखें चुधियाती, सूर्यरश्मियों को देखने में है। यहां का रोमांच कठिन मार्गों पर सघन व निर्जन वनों के बीच पूर्णतः प्राकृतिक एकांत में निर्भय होकर विचरण करने में है।

हमारा आज ही घाघरिया से नीचे गोविंदघाट प्रस्थान करने का मानस था। हम बारह बजे फूलों की घाटी से वापस आने का लक्ष्य लेकर गये थे पर खराब मौसम ने हमारे दो घंटे बचा दिये। अब मुझे मेरी गुमी हुई चाबियां ढूंढनी है। कल शाम को मुझे पता लगा कि मेरी चाबियों का गुच्छा कहीं खो गया है। काम तो भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा है पर जहां संभावना है वहां तो देख ही लें। हम उस किराने की दुकान पर पहुंचे जिसके मकान में हम पहली रात सोये थे। दुकानदार ने बताया कि सफाई करने वाले से मिल लो जो कुबेर होटल में मिलेगा। मैंने दुकानवाले से हमारा कमरा चेक करने की अनुमति मांगी। उसने बताया कि कमरा खुल रहा है और मैं देख कर आ सकता हूं। मैं कमरे में पहुंचा तो एक

व्यक्ति वहां सफाई कर रहा था। मैंने उससे पूछा तो उसने मुझे मेरी चाबियां दे दी। मैंने प्रसन्नतापूर्वक उसे पांच रुपये इनाम दिया। दुकान पर आकर मैने यह खुशखबरी सुनाई तो सभी को बहुत आश्चर्य हुआ। भगवान की कृपा से मेरा कोई सामान खोता नहीं है। अब हमने वहां से प्रस्थान किया। रास्ते में एक सब्जी की दुकान से हमने पकौड़ी बनाने के लिये अदरक व मिर्च खरीदी। फुलना व भ्युंडार के बीच एक होटल पर हमने भाई साहब प्रेमजी के हाथ से बनी पकौड़ी खाने की योजना आते समय ही बना ली थी। पारीक सा. तेज गति से चल हमारे से आगे निकल गये। उन्होंने नौ किमी आगे के होटल पर मिलने का वादा किया था जहां हमें पकौड़ी बनानी है। प्रेमजी व मैं धीरे–धीरे व साथ चले। चार किमी बाद एक स्थान पर विश्राम ले हमने दूध बिस्किट का नाश्ता किया। पारीक साहब से होटल पर सवा बजे मिले। पारीक साहब ने बताया कि वे आधे घंटे से इंतजार कर रहे हैं। कुछ आराम करने के बाद प्रेमजी पकौड़ियां बनाने में मशगूल हो गये। मैं एक नल पर जा कीचड़ में सने अपने बरसाती कपड़े तथा जूते धोने लगा। अब बरसात थम गई है। हमने हमारे बरसाती सामान बैग में रख लिये हैं। प्रेमजी ने बहुत ही स्वादिष्ट पकोड़ियां बनाई। हमने भर पेट खाई तथा घाघरिया से हमारे साथ आ रहे एक मस्तमौला आगरावाले सरदारजी को भी खिलाई। सरदारजी से हमारी पहली मुलाकात फूलों की घाटी में हुई थी। पकौड़ी वाले का हिसाब कर हम अविराम चल साढ़े तीन बजे गोविंदघाट पहुंच गये।

पोटलीघर से सामान निकाल बस स्टैण्ड पहुंचे। पता लगा बद्रीनाथजी का रास्ता आठ किमी बाद टूटा हुआ है। मैंने रुकने की जगह ढूंढने का आग्रह किया पर प्रेमजी भाई साहब को लगा कि इसमें एक दिन टूट जायेगा। अब हम थक गये हैं और सभी को घर जाने की जल्दी लगी है अन्यथा इस यात्रा में हम कई बार केवल आराम करने के लिये ही रुक चुके हैं। कई बार टूटे रास्तों से रुबरु होने के बाद अब हममें हिम्मत भी आ गई थी। अभी समय बहुत है, आगे कुछ न कुछ होगा ही। हम ऊपर की ओर जा रही डाकगाड़ी बस में सवार हो गये। आठ किमी बाद बस रुक गई। कंडक्टर कहा कि शोर्ट कट से एक फर्लांग का रास्ता है। आपको ऊपर छः बजे तक बस मिल जायेगी जो दो–दो रुपये लेगी। बारिश आ रही है, सामने तीखी चढ़ाई दिख रही है और हमारे पास सामान ज्यादा है। कोई कुली भी नहीं मिल पाया। साढ़े पांच बज चुके हैं। सारी सवारियां इस स्थिति को जानती है और सबने फटाफट पद्यात्रा शुरु कर दी। पारीक साहब रैनसूट पहन सबसे पहले अपने सामान ले कूच कर गये। प्रेमजी भी छाता तान आगे बढ़ गये। मुझे भी चलना ही पड़ा। अब इतनी सी दूरी के लिये कौन रैनसूट निकाले। हमारे तीनों के हाथ में एक सूटकेस तथा कंधे पर टंगा एक बैग है और सबसे ज्यादा वजन मेरे सामानों में ही है। हम आज बाईस किमी चल चुके हैं, पैरों में थकान है। रास्ता कल्पना से ज्यादा कोई एक किमी निकला। बस मार्ग से यह ढाई किमी है। हाथों में बोझ, बरसता पानी, बहुत तीखी चढ़ाई तथा बस पकड़ने की जल्दी। मैं अंदर बाहर पूरा भीग गया। पसीने से और बरसते पानी से। दोनों बुजर्गों से मैंने उनके निर्णय पर नाराजगी जताई। बस में पहुंचने पर मैंने कपड़े बदलने चाहे पर बैग में रखे मेरे कपड़े पानी में भीग चुके थे। ठेठ बद्रीनाथजी तक मैं ठिठुरता गया। हनुमान चट्टी से बद्रीनाथ जी–साढ़े दस किमी के इस बस वाले ने दस रुपये सवारी लिये जबकि पिछली बस वाले ने मात्र तीन रुपये यात्रियों से कम किये थे। तीन दिन पूर्व हमें बस में बूंदी का चित्तौड़ा परिवार मिला था आज वे फिर हमारे साथ हनुमान चट्टी से बस में बैठे। पता नहीं उन्होंने तीन दिन क्या किया?

शाम सात बजे हम बद्रीनाथजी के बस आगार पर उतर गये। कई पंडे यहां छाते लेकर खड़े थे, उनमें प्रेमजी भाई साहब के पंडे जी भी थे। हम पंडेजी के साथ उनके आवास 'स्मृति भवन' आ गये। यहां कुली को दस रुपये दिये। पंडेजी के कर्मचारी रणजीत ने हमें अटैच लैटबॉथ चार बैड लगा कमरा दे दिया। हमने पलंग व बैडशीट मांग कर ले ली। सब रजाइयों में दुबक गये। मुझे साथियों ने जगाया। यहां से सबसे अच्छे 'क्वालिटी होटल' में जाकर खाना खाया। वापसी में सबने बारां अपने परिजनों से एसटीडी बूथ पर से बात की। पारीक साहब को शोक संदेश मिला है। उनकी धर्म बेटी गुड्डी के कई दिनों से बीमार चल रहे दादा ससुर आज गुजर गये हैं। पारीक साहब उनके तीसरे में शामिल होने के लिये कल सुबह ही बद्रीनाथजी से निकलना चाहते हैं। हम उन्हें रोकने का प्रयास करते रहे।

'परसों सुबह जल्दी किस तरह मुजफ्फरनगर पहुंच पाओगे? बाद में जाकर बैठ आना। ब्याई सगे हैं, तीसरे में जाना जरूरी नहीं है।' बुजुर्ग प्रेमजी ने समझाया।

पारीक साहब ने कल सुबह निर्णय सुनाने का निश्चय किया और हम धर्मशाला आकर सो गये।

दिनांक 17 अगस्त 1996 शनिवार

प्रातः सात बजे बिस्तर छोड़ा। पारीक साहब को रात एक बजे तक तनाव में नींद नहीं आई फिर उन्होंने आज ही बद्रीनाथजी से लौट जाने का विचार छोड़ दिया। हम निश्चिंत हो गर्मपानी के कुंड पर चले गये। सारे कपड़े साबुन लगा कर धोये तथा हमने अपने शरीर का भी पूरा मैल उतारा। मंदिर के पास की दुकान पर अपने जूते तथा सामान रखे तथा तीनों ने इक्कीस–इक्कीस रुपये वाली पूजा की थाली ली। मंदिर की सीढ़ियो पर थाली ले पूजा करने जाते हुये हमने सामूहिक फोटो वहां के फोटोग्राफर से खिंचवाया। अभी मंदिर में भीड़ नहीं है, हमने आराम से दर्शन किये। परिक्रमा कर वापस आ दुकानदार से अपने सामान ले बाजार आ गये। मालपुए एवं समौसे का नाश्ता किया। प्रेमजी को गंगौत्री से लाई गंगाजल की चरियां दुबारा झलवाने में बहुत समय लग गया। इतनी देर में हम वहां एक दुकान पर चल रही शतरंज की बाजियों में मात खा आये। वापस कमरे में आ कपड़े सुखाने, आराम करने व शतरंज खेलने में समय गुजारा। डेढ़ बजे मारवाड़ी भोजनालय में जाकर दाल, चावल, पापड़, रोटी, सब्जी ग्रहण की व फिर बाजाार चले गये। पारीक साहब व मैं दोनों शतरंज में उलझ गये व प्रेमजी भाई साहब बोर होकर कमरे में आ सोये। शतरंज से निबट हम साढ़े चार बजे कमरे में गये तो प्रेमजी सो रहे थे। हम भी आराम करने लगे। साढ़े पांच बजे हम बद्रीधाम घूमने निकले। परमार्थ आश्रम, मानागांव रोड, शेषनैत्र, स्वामीनारायण मंदिर होते हुये नये बस स्टैण्ड के सामने के झूला पूल से अलकनंदा को पार कर बाजार होते हुये बद्रीनाथजी के मंदिर पहुचे। यहां शाम सात बजे आरती होती है। आरती के समय यहां भारी भीड़ मिली। आरती के बाद हम पूर्वी दरवाजे से बाहर आये। यहां हमने आरती ली तथा परिक्रमा की। लौटते समय हम 'विजयलक्ष्मी भोजनालय' पर बैठ गये। पारीक साहब व मैने मात्र इडली ली व प्रेमजी ने मारवाड़ी थाली। सुबह देर से भोजन करने के कारण अभी हमें भूख नहीं लगी है। मौसम धुंध भरा तथा एकदम ठंडा हो गया है। रास्ते में हमें हमारे पंडाजी मिले। हमने उन्हें बताया कि कल मौसम खुला रहेगा तो हम वसुधारा जायेंगे अन्यथा वापस नीचे। होटल आने तक हमारे पैर बुरी तरह थक गये और सोने से पहले हमने अंतिम निश्चय कल बारां के लिये प्रस्थान करने का कर लिया। अब और नहीं चला जायेगा। हम नौ बजे बाद ही सो पाये।

तारीख 18 अगस्त 1996 रविवार

प्रातः पारीक साहब ने चार बजे ही जगा दिया। मुझे अजीर्ण के कारण रात भर तकलीफ रही। मैंने यूनिन्जाइम तथा हाजमोला का सेवन किया। हम साढ़े चार बजे धर्मशाला से निकले, गर्मकुंड में स्नान किया और पांच बजे से पहले मंदिर पर शयन झांकी के दर्शन हेतु लाइन में लग गये। ठीक पांच बजे मंदिर खुला और हमने पांच बीस पर भगवान से विदा ली। रास्ते मे हमें हरिद्वार जाने वाली बस का कंडक्टर मिल गया। उसने हमें बताया कि मेरी बस सबसे पहले जायेगी। हमने अपने तौलिये बिछाकर आगे की सीटें रोक ली और बाद में सामान लेने धर्मशाला गये। आज हमने अपने सामान अलग–अलग पैक किये। पारीक साहब मुजफ्फरनगर रुकेंगे। हमने छः बजे बस में सामान ला कर डाल दिये। पारीक साहब व प्रेमजी मुझे रखवाली छोड़ चाय पीने चले गये। दोनों वापस आये तो उनके साथ हमारे पंडाजी भी थे। प्रेमजी ने आते ही मेरे से उन्हें पांच सौ रुपये दिलवा दिये। साढ़े तीन सौ प्रेमजी की पुरानी उधारी और डेढ सौ अभी की दक्षिणा। पंडेजी ने एक सादा कागज पर प्रेमजी का नाम लिख लिया पर हमारा नाम कहीं नहीं लिखा। हमारे से पचासों पंडों ने पूछताछ की थी पर हम दोनों का कोई पंडा नहीं मिला। छः बीस पर बस गेट पर खड़ी हो गई। यहां से नीचे जाने के लिये प्रातः साढ़े छः, नौ, दोपहर बारह तथा तीन बजे गेट खुलता है। दस मिनट के अंतराल में बस में तिलक लगाने वाले पंडितजी, माला व शाल बेचने वाले आते रहे। ठीक छः तीस पर सीटी बजी और हमारी बस हरिद्वार के लिये रवाना हो गई। यात्रियों ने बद्री, केदार, गंगा मैया का जय घोष किया और फिर हम चलती बस से हिमालय का सौन्दर्य निहारने लगे।

हमारी बद्रीनाथजी यात्रा अधूरी सी ही रही। कुछ मौसम और कुछ थकान के कारण हमें वसुधारा यात्रा छोड़नी पड़ी। सबने एक राय से माना कि बरसात में टूटे रास्ते पर सामान लेकर चढ़ने से हमारा शरीर टूट गया। वसुधारा जाते तो हम मानागांव, भीमपुल, व्यास गुफा के भी दर्शन कर सकते थे। यहां

नीलकंठ देखना शुभ माना जाता है। हमने प्रातः चार बजे प्रयास भी किया पर मौसम साफ नहीं था। रात हम थकान के कारण वसुधारा यात्रा रद्ध न भी करते तो अभी प्रातः खराब मौसम के कारण यात्रा स्वतः ही रद्ध हो जाती। यहां यात्री तीन–चार दिन तक भी रुक जाते हैं पर न जाने क्यों हम एक दिन में ही बोर हो गये?

हनुमान चट्टी पर चालक दल ने बजरंगबली के दर्शनार्थ गाड़ी रोकी। वहां एक दूसरी बस हमारी बस से आगे निकलने के चक्कर में रगड़ खा गई। हमारी बस में तीन जवान लोगों का स्टाफ था और दूसरी बस एक साढ़े चार फुटा, एक मन वजनी आदमी चला रहा था। उसने बहुत माफी मांगी और हर्जाना देने का वादा किया इसलिये मारपीट नहीं की गई। हमारा आधा घंटा इस प्रक्रिया में खराब हुआ। टूटा रास्ता चालू कर दिया गया है। इसके बाद बस पांडुकेश्वर रुकी। यह स्थान भी तीर्थ है पर यहां अब कोई–कोई यात्री ही आता है। गोविंदघाट होते हुये बस जोशीमठ पहुंची। हमारी बस में बूंदी का चित्तौड़ा परिवार भी सवार है। इनका सामान जोशीमठ में रखा हुआ है और इन्होंने बस वालों से पहले ही जोशीमठ में इंतजार करने की बात कर ली थी। हमें यहां चालीस मिनट रुकना पड़ा। चाय नाश्ता हुआ। छः किमी बाद हेलंग के आगे जाम लगा था। हमारे बस चालक ने काफी आगे तक बस घुसेड़ दी। अभी साढ़े नौ बज चुके हैं, मौसम भी बहुत कुछ खुल गया है और हम बहुत नीचे आ गये हैं। अब सर्दी गायब हो चुकी है। हमें बस से कोयले की राख में तब्दील जैसा, टूटा पहाड़ साफ दिखाई दे रहा है। आश्चर्य की बात यह लगी कि इस ओर पचासों गाडियां हैं और दूसरी ओर मतलब ऊपर जाने वाली कोई गाड़ी नहीं है। मैं बस से नीचे उतर पहाड़ की ओर बढ़ा। जिस रास्ते को मैं आध किमी मान रहा था वह तो कम से कम दो किमी दूर है। यहां सड़क में बहुत ज्यादा घुमाव तथा उतार–चढाव है। यहां सैकड़ों वाहन खड़े हैं जिन्होंने पूरी रात यहीं गुजार दी है। लगता है हमें भी आज दिन यहीं गुजारना पड़ेगा। कई जगह बस व ट्रक वाले अपना खाना बना रहे हैं। यात्री सड़क किनारे साफ जगह देख दरी चद्दर बिछाकर लेट रहे हैं। यहां पीछे एक ढाबा है जिस पर नल लगा हुआ है। पूरा जंगल सुविधाओं के लिये और बरसात आने पर अपनी–अपनी गाड़ी (वाहन) सर छुपाने के लिये। कुछ लोग इसे तकलीफ मान रहे हैं और कई पिकनिक का सा मजा ले रहे हैं। एक संगीत पार्टी की मेटाडोर भी जाम में फंसी है। वे तेज आवाज में डेक पर फिल्मी धुन लगा नृत्य कर रहे हैं। डांस पार्टी की लड़कियां माइक पर फिल्मी गीत गा रही है सारे यात्री मुफ्त मनोरंजन कर रहे हैं। दो सेव विक्रेता टोकरियों में सेव लाये जो तुरंत बिक गये। साढ़े दस बजे टूटे मार्ग के दूसरी ओर ऊपर जाने वाली (रुद्रप्रयाग से जोशीमठ जाने वाली) गाड़ियां आनी शुरु हुई और वहां भी पचासों गाड़ियों की लाइन लग गई। उन गाड़ियों के पीछे से एक बुलडोजर निकल कर आया और उसने आते ही पहाड़ के मलबे को नदी में फेंक, मार्ग बनाना शुरु कर दिया। लोगों ने अंदाज लगाया, उधर पीछे भी रास्ता टूटा होगा। वहां रास्ता चालू हो गया है, अब यहां भी हो ही जायेगा। सभी को कुछ उम्मीद बंधी।

साढ़े नौ से तीन बजे तक कुल साढ़े पांच घंटे अनचाहे हमें इस मनमोहक वादी में रुकना पड़ा। संगीत, फल सेवन, ताश–शतरंज की बाजियां और कई किलोमीटर भ्रमण तथा टूटे मार्ग पर गिरते पत्थर व वहां होता काम देख समय गुजारा। अच्छा हुआ पारीक साहब ने बद्रीनाथजी से जल्दी वापस लौटने का निर्णय बदल दिया। घर के रहते न घाट के। बारह बजे करीब रास्ता खुलने की संभावना पर हमारे चालक ने गाड़ी बहुत आगे बढ़ा कर टूटे पहाड़ के लगभग पास ही खड़ी कर दी थी। हमें लगा यहां परेशानी रहेगी। न तो पीने का पानी है और न ही अब पहाड़ का दृश्य दिखाई दे रहा है पर थोड़ा पैदल आगे बढ़ने के बाद लगा कि यहां तो हम ज्यादा सुखी रहेंगे। आगे बहुत सारे ढाबे हैं जहां रोटियां उपलब्ध है तथा पहाड़ को तो हम बिल्कुल निकट से ही देख पा रहे हैं। हमने ढाबे पर जाकर दाल रोटी खाई तथा एक छाया की जगह देखकर शीट बिछा, शतरंज खेलने बैठ गये। प्रेमजी बुलडोजर व मजदूरों को काम करते देख अपना समय गुजार रहे थे। थोड़ी देर बाद हमारे से कुछ दूर ही खड़ी कार पर कोई पंद्रह–बीस किलो का पत्थर आकर गिरा। शुक्र है हम बच गये। आसपास खड़े यात्रियों ने हमें पूर्व में भी यहां बैठने पर टोका था पर हमने उनकी बात हंसी में उड़ा दी थी। अब हमें उठना ही पड़ा। मौसम खुल गया है तथा तेज धूप निकल आई है। अब हम गर्मी से बेहाल हैं। छाया में पहाड़ पत्थर मार रहा है और बाहर सूर्यदेव तपा रहे हैं। बाद का एक घंटा कठिनाई से गुजरा। तीन बजे पुलिसवालों ने सीटी बजाई और गाड़ियां रवाना की गई। पहाड़ से पत्थर गिरना जारी है। पत्थर आते देख पुलिसवाले गाड़ी को रोक

देते और फिर पत्थर हटा गाड़ी को आगे बढ़ाते। पहाड़ों का यह नजारा देखना भी हमारी किस्मत में लिखा था। नंदप्रयाग में पुनः गाड़ी रोकी गई। बस का पिंक्चर बनवाने में डेढ घंटा लग गया। गाड़ी कर्मचारियों तथा यात्रियों के बीच यहां नोंकझोंक हुई। यात्री ज्यादा आगे तक जैसे श्रीनगर पहुंच कर रात बिताना चाहते थे और गाड़ी वाला देरी कर रहा था। नंदप्रयाग में हम पूरे बाजार में घूमें, अखबार पढ़ा तथा सुविधायें ढूंढ कर उसका उपयोग किया। यहां से सायं छः बजे प्रस्थान हुआ। रुद्रप्रयाग से पहले ही तेज बरसात आ गई तथा अंधेरा छा गया। यहां उत्तराखंड में रात में बसें नहीं चलती है। हमें रात रुद्रप्रयाग में ही गुजारनी है। यात्रियों ने सुबह चलने का समय पूछा तो ड्राइवर ने चिढ़कर कह दिया,

''चार बजे चलेंगे। इसके बाद हमारी कोई जवाबदारी नहीं है।''

अभी रात के आठ बज चुके हैं, ठहरने–खाने की व्यवस्था देखनी है। हमने कह दिया, ''हम तो छः बजे के पहले नहीं आ सकते। हमारे बाकी पैसे वापस दे दो।''

कुछ और सवारियां भी हमारे साथ हो गई। फिर दोनों पक्षों के बीच साढ़े पांच बजे चलने पर समझौता हो गया। चालक ने यह भी जोड़ दिया कि आगे हरिद्वार पहुंचने में देरी हो जाये तो मेरी कोई जवाबदारी नहीं है। इस सब वाद–विवाद के पीछे का कारण भी लिख दूं। हमारा यह युवा ड्राइवर बहुत मिलनसार, नेता टाइप आदमी है। बस रोकना, हाथ मिलाना, हाय हैल्लो करना, पूरे रास्ते से चलता आ रहा है। बस भी बहुत तसल्ली से चला रहा है। सारे यात्री व हम स्वयं भी इस पर बार–बार टीका टिप्पणी व मजाक कर रहे हैं। हमारा भी समय खराब हो ही रहा है।

हम जाते समय भी रुद्रप्रयाग रुके थे। पहलेवाला होटल बहुत अच्छा व सस्ता था। अभी इतनी तेज बरसात में वहां जाना मुश्किल है। बस रुकते ही पारीक साहब छाता लेकर रुकने की जगह देखने निकल गये थे। हमारी बस के कई यात्री सामने दिख रहे होटल में पलंग लेकर पांच रुपये सवारी में रात गुजार रहे हैं। हमने बिल्कुल सामने की गली में दो मंजिल नीचे एक कमरा सवा सौ रुपये में कर लिया। सामान जमाने के बाद हम खाना खाने गये और साढ़े नौ बजे कमरे में आ पसर गये। चित्तौड़ा परिवार भी इसी होटल में ठहरा हुआ है। वे बहुत देर तक शोर मचाते रहे। रात नींद अच्छी आई।

तारीख 19 अगस्त 1996 सोमवार

प्रातः चार बजे ही उठकर पांच बजे तैयार हो गये। खबर मिली कि रास्ता बंद है। अभी बसें निकलना मुश्किल है। रात भर की बरसात से हमें यह आशंका तो थी ही। हमने सामान नहीं समेटे। पारीक साहब व प्रेमजी चाय पीने गये तो उन्हें बस ड्राइवर मिल गया। उसने कहा,

'किसने कहा रास्ता बंद है? आप लोग अभी तक बस में क्यों नहीं बैठे?'

पारीक साहब नाराज होते हुये कमरे में आये और मेरे ऊपर लापरवाही का आरोप लगाया।

'तुझे तो लिखने से ही फुर्सत नहीं है।'

वे अपना सामान ले बस में जा बैठे। मैने उनसे कहा भी कि ड्राइवर हम लोगों से चिढ़ा हुआ है और हमें परेशान कर रहा है। मैं सामान जमा कमरे में ही बैठा रहा। अभी कमरा छोड़ देगे तो होटल वाला बाद में क्यों घुसने देगा?

'बस चलने लगे तो मुझे आवाज दे लेना।'

थोड़ी देर बाद प्रेमजी भी अपने सामान उठा बस में जा बैठे। मैंने पंद्रह मिनट और कमरे में आराम किया। चित्तौड़ा परिवार का एक सदस्य बस चलने की पुख्ता सूचना लेकर पहुंचा तब मैंने कमरा खाली किया तथा बस में अपनी सीट ग्रहण की। ठीक सवा छः बजे बस रवाना होकर आठ बजे देवप्रयाग पहुंची। मार्ग में बुलडोजर काम कर रहा था, जिसने अभी सुबह ही सड़क साफ की है। सड़क टूटने की सूचना गलत नहीं थी। रात में बरसात ने कई जगह सड़क पर पत्थर तथा मलबा लुढ़काया है। देवप्रयाग में पौन घंटा चाय नाश्ते के लिये रुके। मुझे आज सफर में चक्कर आ रहे हैं। मैंने मात्र लिम्का ली। वापसी यात्रा में मैं हिमालय दर्शन नहीं कर पाया। चक्कर के कारण आंखें मींच कर (बंद करके) यात्रा कर रहा हूं। इसके बाद बस लगातार चल ऋषिकेश काली कमलीवालों की धर्मशाला के सामने रुकी जहां चित्तौड़ा परिवार सहित अनेकों यात्री उतर गये। हरिद्वार जाने वाले बस में बचे हम 19 यात्री हमारे बस वाले ने ही व्यवस्था कर दूसरी बस में बिठा दिये। साढ़े बारह बजे ऋषिकेश से चल हम दोपहर पौने दो बजे हरिद्वार रेल्वेस्टेशन के पास उतरे।

आज के सफर में हम पारीक साहब से शासित रहे। मेरा तो सुबह ही स्वास्थ्य व पारीक साहब के भाषण के कारण मूड खराब हो गया था। हरिद्वार उतरते ही पारीक साहब हमें बस स्टैण्ड ले गये। उन्हें मुजफ्फरनगर की बस में बैठना है। यहां बहुत महंगे भोजनालय पर हमने स्वादिष्ट भोजन किया। यहां बैठे–बैठे पारीक साहब बोलने लगे,

'यह हेमराज कहता है कि जाओ। भला मेहमानों को बिना भोजन कराये ऐसे विदा करते हैं। आज हम बिछुड़ रहे हैं तो आखरी बार तो भोजन साथ कर ले।'

पारीक साहब की बातें मुझे अच्छी नहीं लग रही। इतना सामान ढोते हुऐ घूमना और समय व्यर्थ गंवाना मुझे बुरा लग रहा है। मुझे अभी वापसी यात्रा हेतु रेल्वे का आरक्षण करवाना है जिसमें समय का बहुत महत्व है। भोजन के बाद पौने तीन बजे पारीक साहब ने हमें विदा किया। भगवान का लाख–लाख शुक्र है उन्होंने हमें बस रवाना होने तक नहीं रोका। मैंने आजादी की सांस ली।

मैंने प्रेमजी से कहा कि आप यहां बस स्टैण्ड पर ही सामान के पास बैठो, मैं गाड़ी के आरक्षण करवा कर आता हूं। प्रेमजी को बैठने में बोरियत लगी। हम दोनों अपने सामान ढो रेल्वे रिजर्वेशन काउंटर पर चले गये। दर्द करती टांगों से एक घंटा लाइन में खड़े रहने के बाद मेरा नम्बर आया। कल के 19–20 वेटिंग के ही टिकट मिले। इस पर प्रेमजी जी को बहुत दुःख है। मुझे आशा है; भोलेनाथ सब अच्छा ही करेगा। अब हमें रुकने की जगह देखनी है। मैं प्रेमजी के विचार जानता हूं। वे कई बार होटलों में रुकने के मामने में हमें 'रईस' कह चुके हैं। अभी रुद्रप्रयाग में हम तीन जने 125 रु. में रुके थे और चित्तौड़ा परिवार के 15 लोग उसी हॉटल में बिना बिस्तरों के हॉल लेकर मात्र 80 रुपये में सोये थे। अब मैंने किफायत करने का निश्चय किया और सामान ढोकर कालीकमली वालों की धर्मशाला में डाले। 21 रुपये हमारे हाथ से दान पेटी में डलवाकर उन्होंने हमें 10 बाई दस का बिना पंखे व बिना बिस्तरों वाला कमरा दे दिया। ओढ़ने–बिछाने के सामान जिन्हें हम बीस दिनों से ढो रहे हैं, आज काम में आयेंगे। हम दोनों इन परिस्थियों में जीने के आदी हैं ही। एक घंटा आराम के बाद हम पांच बजे हरिद्वार घूमने निकले। पैदल मंशादेवी के रज्जूमार्ग तक पहुंच बीस रुपये प्रति टिकट में झूले पर बैठ गये। गंगा दर्शन, हरिद्वार नगर का विहंगम दृश्य तथा मार्ग में बनाये बगीचे बहुत अच्छे लगे। मां मंशादेवी के दर्शनोपरांत मंदिर के परिक्रमा पथ में से हमने ऊपर से हरिद्वार व गंगा मैया के दर्शन किये। झूला निजी कम्पनी ने बना रखा है। यहां बहुत अच्छा विकास हुआ है। बाग, पेड़, बेंच, पेयजल, सुविधायें, दर्शनीय स्थलों के बोर्ड आदि बनाये गये हैं। आध घंटा पार्क में आराम कर रोप वे से उतर, हम पैदल ही हरकी पैडी के बीच वाले प्लेटफार्म पर गये जहां जूते ले जाने की मनाही नहीं है। बहुत तेज बहती गंगा में घुटने–घुटने पानी में उतर जंजीरें पकड़ कर स्नान किया। यहां घाट पर सामानों की सुरक्षा के प्रति हम विशेष सतर्क रहे। अच्छी सी जगह देख, ब्रह्मकुंड की ओर मुंह कर बैठ, गंगा आरती होने का इंतजार करने लगे।

यहां गंगा सभा नामक संस्था काम कर रही है। उनके स्वयंसेवक यात्रियों को नियंत्रित कर रहे हैं। आरती से पूर्व गंगा सभा के प्रशिक्षित वर्दीधारी सेवक, सौ–पचास यात्रियों के झुंड के बीच खड़े हो, यात्रियों को गंगा मैया, आरती दर्शन तथा हरिद्वार की महिमा बताने लगे। इसके बाद हरकी पैड़ी की व्यवस्थाओं के संचालन के लिये आर्थिक सहयोग की मांग की गई। इस कार्य हेतु यहां बीस–बीस कदम की दूरी पर पचासों कार्यकर्ता दानपात्र हाथ में लिये खड़े थे। गंगा में दीपदान की परंपरा है। शाम के धुंधलके में बहते दीप बहुत सुन्दर लगते हैं। ठीक साढ़े सात बजे गंगा आरती शुरु हुई। यहां एक हजार एक दीपों वाली ग्यारह आरतियां जलाई जाती है। प्रत्येक आरती का खर्च 151 रु. बताया जा रहा है। आरतियों के चमकते बिंब गंगा में बहुत अच्छा दृश्य उत्पन्न कर रहे हैं। ऊपर नीचे जाती आरती की प्रकाश रश्मियां पानी में अठखेलियां करती दिखाई देती है। आरती की कई लोग वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी कर रहे हैं। आरती की दो तीन फुट ऊंची उठती लपटें आरती करने वालों को झुलसा रही है। आरती करने वाले पंडे अपने पूरे शरीर पर गीले सूती कपड़े पहने रहते हैं। हाथों पर लिपटे कपड़े पर उनका सहयोगी लगातार गिलास से पानी डालता रहता है। चेहरे और शरीर को गर्मी से बचाने का प्रयास करते हुये भी पंडों को देखा जा सकता है। निश्चय ही एक हजार एक दीपों की आरती करना जीवट का काम है।

आज सावन का सोमवार; सौभाग्य से हमें हर की पैड़ी स्नान व आरती दर्शन का पुण्य लाभ मिला है। हम पैदल ही वापस लौटे। हल्की बरसात भी शुरु हो गईं। हमने बाजार में हलुआ खाया तथा

एक–एक गिलास दूध लिया। नौ बजे धर्मशाला पहुंच हमने चार–चार रुपये में धर्मशाला वालों से दो गदेले किराये पर लिये। उन्हें बाहर दालान में पंखे के नीचे बिछाया तथा अपने सामानों में से चादर शाल निकाल कर सो गये। पंखा बहुत मंद गति से चल रहा है पर बरसात के कारण मुझे रात में सर्दी लगी और शॉल ओढ़ना पड़ा। नींद बहुत अच्छी आई।

तारीख 20.8.1996 मंगलवार

हम रात हरकी पैड़ी गंगाआरती दर्शन एवं चंडीमाता मंदिर दर्शन की योजना बना कर सोये थे पर तेज बरसात ने हमारी योजनाओं पर पानी फेर दिया। बारिश नहीं रुकती देख हम प्रातः सात बजे भीगते हुये ही गंगास्नान के लिये निकल पड़े। रास्ते में एक ढका हुआ रिक्शा मिल गया। हर की पैढ़ी पहुंच जूते, जूताघर में रखे तथा अपनी बरसाती से कपड़े ढक कर रख हमने स्नान किया। प्रेमजी भाई साहब ने गंगापूजन तथा स्वास्तिवाचन करवाया तथा मैंने एक आरती की रसीद कटवाकर प्रसाद का डिब्बा प्राप्त किया। यहां आसपास के सारे मंदिरों में दर्शन किये। बाजार में देशी घी की हलुआ पूरी तथा समोसे का बहुत बढ़िया नाश्ता किया। धर्मशाला पहुंच आराम करने लगे। अब हमारे पास रेल्वेस्टेशन जाने के अतिरिक्त कोई काम नहीं है। हल्के बरसते पानी में भीगते बारह बजे स्टेशन पहुंच गये। साढ़े बारह बजे चार्ट देखकर आरक्षण होने की खुशखबरी मैंने प्रेमजी को सुनाई। हमारा यहां स्टेशन पर समय कठिनाई में कटा। कहीं बैठने की सूखी जगह नहीं मिली। रेल आने के बाद हम एस 5 के डिब्बे में चढ़े। वहां जाकर पता लगा कि आज इसे एस तीन बनाया गया है। दुबारा सामान ढोना पड़ा। रेल्वे की इस गल्ती से हमारी तरह कई यात्री ठेठ दिल्ली तक परेशान हुये। हमारी गाड़ी यहां से डेढ बजे छूटी। मुजफ्फरनगर से गाजियाबाद तक दैनिक यात्रियों के कारण हमें बहुत परेशानी हुई। नौ बजे दिल्ली स्टेशन पर भरपेट गर्मपुड़ी तथा एक–एक आइस्क्रीम खाकर हम सो गये। दिल्ली में लगातार उद्घोषणा हो रही थी कि देहरादून से आकर कोटा जाने वाली गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी है। हम इसका मतलब बहुत देर बाद समझ पाये। यह गाड़ी बंबई के बजाय कोटा तक ही जा रही है आगे रास्ता बंद है। मथुरा स्टेशन पर बहुत शोर शराबा हुआ। हमारे डिब्बे में बहुत सारे यात्री भरतपुर जाने वाले आ बैठे। उन लोगों की बातों से दादागिरी की बू आ रही थी। उन्होंने एक यात्री की पिटाई कर दी। पता लगा पिटने वाला भी मथुरा से ही बैठा उनका साथी ही था और उसने शराब पी रखी थी। हम थोड़े भयग्रस्त हुये। फिर यात्रियों से बातचीत शुरु हुई। पता लगा ये यात्री दोपहर दो बजे से मथुरा में अटके पड़े हैं। इंटरसिटी बरसात के कारण रद्ध हो गई है। बसें भी बहुत कम चल रही है। इन यात्रियों ने एक बस 15 रु. सवारी के बजाय 40 रु. सवारी में भरतपुर के लिये कर ली थी। इस शराबी ने लड़–झगड़ बसवाले को भगा दिया और अब वे सब दुःख पा रहे हैं। सहानूभूतिपूर्वक सभी यात्री बैठ गये। हम बाद में सो नहीं पाये। हमारा डब्बा ठेठ कोटा तक भरा रहा। हमारे साथ हरिद्धार से बैठे अन्य चारों यात्री भी धर्मिक प्रवृति के थे। इंदौर के खंडेलवाल समाज के प्रौढ़ दंपत्ती सिर्फ हरिद्वार यात्रा पर गये थे। अहमदाबाद के अन्य वृद्ध दम्पती गायत्री परिवार से जुड़े हैं। इन्होंने स्वयं कष्ट उठाकर पूरे रास्ते दूसरे यात्रियों की मदद की। हमारा हाड़ौती क्षैत्र आ गया, दिन भी निकल आया, परस्पर बातचीत शुरु हुई। पता लगा दरा के पास कोई पुल टूटने से कोटा बंबई मार्ग बंद है। एक यात्री ने जानकारी दी की भंवरा रेल्वे स्टेशन के पास पटरी बहने से कोटा बीना लाइन भी बंद है।

'वाह रे इंद्रदेव! पूरी यात्रा में तो बाधा आई ही और वापसी में भी मार्ग बंद।'

ज्यों ज्यों कोटा नजदीक आता गया हमें बाढ़ की विकरालता की जानकारी मिलती गई। हमारे सहयात्रियों को रास्ता बताने वाले हम दोनों अब स्वयं बारां जाने के रास्ते ढूंढने लगे। कोटा उतरने पर हम सहयात्री दंपत्तियों को मात्र पूछताछ की खिड़की ही बता पाये। कोटा स्टेशन खचाखच भरा है। पटरियों पर गाड़ियां लदी है। चारों ओर अफरातफरी मची है। हमें बाईस दिन बाद किसी भी तरह घर पहुंचने की उतावली थी। पता लगा बारां का रेल व सड़क दोनों मार्ग बंद हैं। स्टेशन से बाहर शहर में जाने के लिये ऑटो टैम्पों वाले भी मनमाना किराया ले रहे हैं। यहां हम दोनों साथी भी बिछुड़ गये। प्रेमजी एक टैम्पो से नयापुरा गये। मुझे बहिन शकुन्तला के यहां सब्जीमंडी जाने के लिये बहुत देर बाद एक भीड़ भरी मिनी बस मिल पाई।

तारीख 21. 8. 1996 बुधवार प्रातः साढ़े आठ बजे हल्की फुहारों के बीच मैंने सामान लादे कुंवरसाहब महेंन्द्रजी के विजयमार्केट, घंटाघर स्थित घर में प्रवेश किया।

हमारी चार धाम यात्रा बहुत सारी विघ्न बाधाओं के साथ सम्पन्न हुई। हरिद्वार में हजारों आश्रम तथा मंदिर हैं पर हमारी श्रद्धा गंगा स्नान में ही थी जो हमें सुबह शाम मिला। मेरी एक तमन्ना काली कमलीवालों की धर्मशाला में रुकने की थी जो भी हरिद्वार में पूरी हुई पर उसका अनुभव अच्छा नहीं रहा। होटल धर्मशाला में किराये में ज्यादा फर्क नहीं है। चित्तौड़ा परिवार जाते समय कालीकमली धर्मशाला में 101 रुपये में ठहरे थे और आते समय होटल में मात्र अस्सी रुपये में। हमने अगस्त माह में यात्रा की और पूरी यात्रा में बरसात से परेशानी रही और यात्रा बहुत रोमांचक बन गई। आगे से कभी बरसात में इधर की यात्रा नहीं करुंगा। मैंने हरिद्वार में प्रेमजी से कहा था,

'चलो हो गई यात्रा पूरी।'

और प्रेमजी के मुंह से एकाएक निकला था,

'बेटे देखते जाओ अभी तो बारां बहुत दूर है।'

हमारे मंसूबों में और करतार की मर्जी में बहुत फर्क आ जाता है। हम चार यात्री साथ घर से निकले थे पर वापस चारों अलग–अलग पहुंचेंगे। हमारा 15 दिन का लक्ष्य था पर हमें 22 दिन हो गये। हमारे निर्णयों ने और कहीं प्रकृति ने हमारा समय लिया। हम चार अलग आयु, व्यवसाय, सोच के व्यक्तियों को पारीक साहब ने जोड़ा। पारीक साहब को तो हर वर्ष यात्रा करना ही है। कोई न मिले तो अकेले ही। पारीक साहब के साथ यात्रा करना जीवट का काम है। उनके साथ दुबारा यात्रा पर कोई नहीं आना चाहता। यात्रा पर साथ जाने से आपसी स्नेह शतगुना बढ़ना चाहिये पर पारीक साहब के साथ ऐसा नहीं होता। प्रेमजी को पारीक साहब ने बहुत जोर देकर यात्रा के लिये तैयार किया था। यात्रा खर्च हेतु उधार भी दी। उन्हें सामान ले जाने में भी बहुत छूट दी गई। न उनके पास जूते थे, न रैनकोट और न ही सामान ढोने वाला बैग। हमें ये बातें बुरी भी लगी थी। पारीक साहब प्रेमजी बहुत पुराने मित्र हैं, साथ ताश खेलने वाले पर यात्रा में उन दोनों में ज्यादा मनमुटाव हुआ। पूरी यात्रा में जीवन को बहुत कुछ नये अनुभव प्राप्त हुये। यात्रा समाप्त हुई पर उसके बाद घटी घटनाओं को लिखने का भी लोभ में संवरण नहीं कर पा रहा।

बहिनजी के घर में सुबह मुझे दो ही परिजन मिले। बहिन शकुंतला और उसके देवर यतीशजी। जाते ही बहिन ने कहा, 'मैं मंदिर जा रही हूं। यहां भैया जी हैं। आप नहा धो निबटो।'

मुझे भला इसमें कहां तकलीफ थी। बहिन दस पांच मिनट यात्रा के हालचाल पूछती तो मुझे ज्यादा खुशी होती। मैं यात्रा का थका तथा रात भर की नींद से परेशान नहा कर सोना चाहता था पर मेरे नहा धो निपटते ही यतीशजी मुझे भी स्कूटर पर बिठाकर मंदिर ले गये। मैं मेहमान धर्म के कारण उनसे 'ना' नहीं कह सका। रास्ते में उन्होंने मुझे एक अच्छी दुकान पर दूध जलेबी का नाश्ता करवाया। यहां रामपुरा बाजार स्थित अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर में तरुणसागरजी महाराज चौमासा प्रवास पर अपने अनेकों शिष्यों के साथ रुके हुये हैं। प्रातःकाल उनके दर्शन प्रवचन होते हैं। मंदिर खचाखच भरा हुआ हुआ है। हमारे ब्याईजी का पूरा परिवार यहां आया हुआ है। कुंवरसाहब महेन्द्रजी व ब्याईजी साहब रमेशजी भगवा वस्त्र धारण कर मंदिर में बैठे हुये हैं। अभी बरसात में व्यापारिक काम कुछ है नहीं, पूरा परिवार धर्म ध्यान में लगा हुआ है। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। युवा संत अर्थ और काम की तरफ भटकते किशोर व युवकों को आकृष्ट कर उन्हें धर्म और त्याग से जोड़ रहे हैं। जहां मंदिरों में प्रौढ़ जन ज्यादा दिखाई देते हैं यहां बच्चे और किशोर बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित हैं। कुछ देर बाद हम सभी घर वापस आ गये। अब चौके की तैयारी करनी है। गत तीन दिनों से मुनिजी को आहार दिया जा रहा है। आज भी कोई न कोई मुनिजी आहार हेतु यहां पधारेंगे, ऐसी सबको उम्मीद है। मुझे भी मुनिजी को आहार देने हेतु प्रेरित किया गया है।

'आपकी किस्मत में होगा तो मुनिजी आहार लेने आयेंगे, चौका तो लगाया ही है।'

मैंने कुछ समय निकाल बाजार जा फोन बूथ से बारां घर बात की।

'जब रास्ता खुलेगा मैं तुरंत बारां पहुंचूगा।'

कुछ फोन लगा व्यापारिक जानकारियां भी प्राप्त की। वापस बहिन के घर के बाहर आ तमाशबीन की तरह खड़ा हो गया। आज यह घटना मेरे को जीवन में पहली बार देखने को मिल रही है। सब कुछ देखने जानने की बहुत उत्सुकता है।

साढ़े दस बजे मुनिजी के आहार लेने हेतु प्रस्थान करने की हवा फैल गई। हमारे ब्याईजी भी सपरिवार सड़क के बीच में दो स्टूलों पर विभिन्न सामान रख कर खड़े हो गये। जैन मुनि दिन में एक बार आहार लेने हेतु बस्ती की ओर निकलते हैं। निकलने से पूर्व मन में कोई बात सोच लेते हैं जिसे आंकड़ी लेना कहते हैं। उनकी सोची हुई स्थिति दिखाई देने पर अर्थात् आंकड़ी मिलने पर वे भोजन ग्रहण करते हैं। अन्यथा भूखे ही रह जाते हैं। सामान्यतः फल, नारियल, कलश, गगरा, मिठाई जैसी सामान्य वस्तुओं की आंकड़ी ली जाती है। मुनिजी के आते ही ब्याईजी संस्कृत में उनके स्वागत में सस्वर मंत्र पाठ करने लगे। सारा परिवार हाथ में विभिन्न वस्तुयें ले उन्हें दिखाने लगा। इतने में उधर से एक युवकों का दल प्रकट हुआ। उन्होंने अंदाज बताया कि आज मोक्ष सप्तमी है इसलिये महाराज सात कुंवारे लड़कों पर जायेंगे। सात लड़के भी इकठ्ठे हो गये। मुनिजी सबको देख मुस्कराते हुये आगे बढ़ गये। हमारे कुंवर साहब निराशा में युवकों पर कुछ नाराज से हुये।

'तुम लोग हा–हू करके सारा खेल बिगाड़ देते हो। अभी छोटे मुनिजी और आ रहे हैं, तुम सब दूर ही रहना।'

मुनियों के विहार की एक–एक मिनट की खबर हमें लगातार मिल रही थी। बड़े मुनिजी को आगे आंकड़ी मिल गई थी और वे आहार हेतु जा चुके थे। दो छोटे मुनिजी आ रहे हैं। फिर अफवाह फैली और ब्याईजी ने मोहल्ले से बुला कर सात कन्यायें इकठ्ठी खड़ी कर दी। फिर वही शोरशराबा, स्वास्तिवाचन और इस बार एक मुनि जी यहां रुक गये। सभी मौजूद लोगों ने मंत्रोच्चार के साथ मुनिजी की परिक्रमा की। भारी भीड़ के साथ मुनिजी को घर के अंदर प्रवेश करवाया गया। तुरंत ही मोहल्ले में यह खबर फैल गई और मिलने जुलने वाले तथा रिश्तेदार मुनिजी को आहार देने के लिये ब्याईजी के घर आ गये। कई महिलाओं ने हमारे ब्याणजी (समधनजी) से धुली हुई साड़ी मांगी जिसे पहन कर मुनिजी को आहार दिया जा सके। अब कितने वस्त्र उपलब्ध हो पाते? उन्हें खीज ही आने लगी। मना करके बुरे भी बने। अब वहां दो दल हो गये। एक शुद्ध–वे जो मुनिजी को धुले हुये वस्त्र पहन कर भोजन देने वाले थे और दूसरे अशुद्ध, मेरे जैसे तमाशबीन। अशुद्ध शुद्ध को नहीं छू सकता है। मुनि जी का शुद्ध भोजन भी अलग से बना कर रखा गया है। पग–पग पर सावधानी बरती जा रही है कहीं अशुद्ध शुद्ध से न छू जाये। दूर हट, देख अड़ नहीं जाना, उधर महाराज का भोजन रखा है, जैसे निर्देश बार–बार हवा में उछल रहे हैं। मुझे मन ही मन हंसी भी आ रही थी। भारतीय समाज के विभाजन की प्रक्रिया हमारे घरों से ही तो शुरु नहीं हुई होगी? मेरे को भी सभी परिजनों ने बहुत समझाया कि मैं भी कौपीन धारण कर महाराज को आहार दूं। यह बहुत पुण्य का काम है पर मेरा मन नहीं माना। भूखे को व संतों को भोजन कराना निश्चय ही पुण्य का काम है पर मैं दूसरे के पुण्य में बिना कुछ लगाये भागीदार कैसे हो सकता हूं? श्रम व खर्च दूसरे ने किया है उसके लाभ पर डकैती मैं डाल दूं? वहां उपस्थित वयोवृद्ध बुआजी ने मेरे से इस पुण्य के अवसर को हाथ से न गंवाने का अनुरोध किया। मैंने उनसे कहा,

'भोजन तो आपका है, पुण्य मुझे क्यों मिलेगा?'

बहस हुई और अंत में बुआजी ने कहा,

'भाव ही कोई न।'

बिल्कुंल सटीक टिप्पणी। अब मैं जैन धर्म के भाव कहां से लाऊं? जैन धर्म का मूल मंत्र त्याग है पर वह अब मात्र संतों व मूर्तियों के वस्त्र त्याग के रूप में ही रह गया है। जैन मंदिरों व धर्मशालाओं में प्रचुर भौतिक संम्पन्नता दिखाई देती है। चमचमाता संगमरमर, चांदी सोने के दरवाजे, चौकियां, सिंहासन, दानपेटियां, पूजा के बर्तन, मुकुट, छत्र, मणि मालायें पंखे कूलर और वातानूकूलित कक्ष, भोग में महंगे सूखे मेवे और चावल।

नींद से परेशान मैं उत्सुकतावश मुनि जी का आहार ग्रहण कुछ देर तो देखता रहा फिर ऊपर के कमरे में जाकर सो गया। गहरी नींद से एक बजे मुझे भोजन के लिये जगाया गया। दोपहर बाद कुंवर साहब ने कोटा बैराज देखने जाने का कार्यक्रम बनाया। आज बैराज के आठ दरवाजे खोलकर अतिरिक्त पानी निकाला जा रहा है। हल्की फुहारों के बीच एक छोटा छाता ले, गले में कैमरा टांग, कुंवर साहब

महेन्द्रजी व मैं स्कूटर पर बैठ बैराज पहुंचे। अरे! यहां तो मेला लग रहा है। पूरे पुल पर जनता टहल रही है। हम भी पैदल पुल पार कर गये। बैराज से तेज गति से दहाड़ मार कर निकलता पानी मुझे गंगौत्री के सूर्यकुंड की याद दिला रहा है। यहां भी पानी की उछलती फुहारें धुंध में परिवर्तित हो रही है। मुझे फोटो खींचने की इच्छा मन में दबानी पड़ी क्योंकि यहां फोटो लेने पर पाबंदी है। भारी भीड़ को काबू में रखने के लिये यहां कदम–कदम पर सुरक्षाकर्मी तैनात हैं। एक घंटा इस रमणीक दृश्य का आनंद ले लौटे। इतने दिनों बाद मुझे बारां जाने की बहुत जल्दी थी। मैं जिद कर कुंवर साहब को बस स्टैण्ड ले आया पर हमें वापस लौटना पड़ा। आज बारां के लिये कोई साधन नहीं है। फोन से पता लगाया। रात दस बजे की गाड़ी बारां जायेगी। मैं उसी से लौटा और रात दो बजे अपने घर पहुंच सका। प्रेमजी भाई साहब भी उसी गाड़ी से बारां पहुंचे।

मेरी एक बेहद रोमांचक यात्रा का समापन हुआ। सब फोटो आ गये पर खास हेमकुंड के फोटोग्राफर ने ही हमारे साथ धोखा किया। उसने आठ आने वाला हेमकुंड का एक साधारण फोटो डाक से भेजा है। मैंने उसकी रसीद संभाल कर रख रखी है। दुबारा जाना होगा तो उसे अवश्य ढूंढूंगा।

हेमराज बंसल